आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक 45215/86

ज्योतिष ,स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

जीवन वैभव

स्थापना वर्ष : 37 वर्ष अंक : 4 अक्टूबर से दिसम्बर 2023

जीवन वैभव एवं एस्ट्रोवर्स संस्था के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

प्रथम महर्षि पाराशर अर्न्तराष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन

दिनांक 09-10 सितम्बर 2023

स्थान भवभूति प्रेक्षागार

केन्द्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय परिसर

संस्कृत मार्ग, बाग सेवनिया, भोपाल म.प्र.

स्मारिका विशेषांक

इस अंक के आकर्षण

★★अतिचारी बृहस्पति अगले 8 वर्षो मे विश्व मे आमूलचूल परिवर्तन करेगा
★★पुराणो धर्मग्रंथो मे पर्यावरण का महत्व
★★फलित ज्योतिष मे सर्वतो भद्रचक्र
★★ग्रहो के संख्यात्मक प्रतिरूपण के आधार पर फलादेश
★★जन्म कुंडली मे गुरू कृपा एवं ईश्वर कृपा प्राप्ति के योग
★★जीवन मे अचानक मिलने वाली भौतिक व आर्थिक सफलता के
★ज्योतिषीय सूत्र कृष्णमूर्ति पद्धति
★★फलित ज्योतिष मे ज्योतिषी का दायित्व

मूल्य : 50 रू.

एस्ट्रोवर्स

एस्ट्रोलॉजिकल स्टेडिज एंड रिसर्च आर्गेनाइजेशन

संस्थान का संक्षिप्त कार्यकारिणी परिचय

ऋषि कुमार शुक्ला
संस्थापक अध्यक्ष, एस्ट्रोवर्स

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
उपाध्यक्ष, एस्ट्रोवर्स एवं
संपादक, जीवन वैभव

डॉ. निशा शर्मा
सचिव, एस्ट्रोवर्स

कार्यकारिणी सदस्य

नवनीत गोयल

आनन्द वरदानी

दिनेश गुप्ता

राजेश गुप्ता

विशिष्ट सहयोगी

एच एन राव

तकनिकी सहयोग

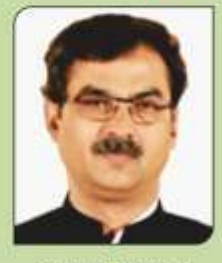

अनुपम शुक्ला

सु.श्री पूजा मिश्रा

संस्था के प्रमुख उद्देश्य

- ज्योतिष का अध्ययन, इस पर विचार विमर्श, चिंतन तथा मनन होगा।
- संस्था, ज्योतिष की सभी विधाओं तथा समस्त विषयों पर शिक्षण, प्रशिक्षण तथा अनुसंधान करेगी।
- ज्योतिष का आधुनिक युग में, तेजी से बदलते परिवेश में प्रचार प्रसार करेगी
- तथा इस के लिए social media digital platforms तथा अन्य माध्यमों का उपयोग करेगी।
- ज्योतिष की प्रचलित भ्रांतियों तथा मिथकों को दूर करने की चेष्टा के साथ ज्योतिष के सही मार्ग को विस्तार देने का कार्य करेगी।
- इन गतिविधियों हेतु आवश्यक संसाधन को एकत्र कर संस्था को देश- प्रदेश में स्थापित करने का प्रयास करेगी।

एस्ट्रोवर्स
अभिव्यक्ति सोसायटी, कार्यालय-बावड़िया कला, भोपाल म.प्र.

जीवन वैभव

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार
की शिक्षाप्रद पत्रिका

स्थापना वर्ष : 37, अंक-4, अक्टूबर से दिसंबर 2023

●

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

●

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

●

कानूनी सलाहकार
श्री अजय दुबे, श्री बी.एस. शुक्ल

●

सलाहकार मण्डल
श्रीमती पुष्पा चौहान, श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

●

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)

सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति - 50 रूपये
वार्षिक - 200 रूपये
त्रैवार्षिक - 500 रूपये
आजीवन - 5000 रूपये

अनुक्रमणिका

क्र.	वितरण	पृष्ठ क्र.
1.	वंदना	2
2.	सम्पादक की कलम से	3
3.	वैभव दर्शन	5
4.	प्रथम महर्षि पाराशर अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन का उद्देश्य एक नजर में	6
5.	अतिचारी बृहस्पति अगले 8 वर्षों में विश्व में आमूलचूल परिवर्तन करेगा	8
6.	पुराणों धर्मग्रंथों में पर्यावरण का महत्व	13
7.	भूतकाल दर्शन की खगोलीय व्याख्या	15
8.	कौन से ग्रह-संयोग (IAS) भारतीय प्रशासनिक सेवा के योग बनाते हैं?	17
9.	फलित ज्योतिष में सर्वतो भद्रचक्र	19
10.	ज्योतिष और हमारा जीवन	20
11.	धन सम्पदा के लिए भाव 8 का महत्व	21
12.	ग्रहों के संख्यात्मक प्रतिरुपण के आधार पर फलादेश	26
13.	नवग्रहों के उच्च - नीच राशि में फलित एवं उपाय	27
14.	जन्म कुंडली में गुरु कृपा एवं ईश्वर कृपा प्राप्ति के योग	29
15.	लोकतंत्र का प्रहरी ग्रह शनि	33
16.	अंगुलियाँ सामान्य परिचय	35
17.	जीवन में अचानक मिलने वाली भौतिक व आर्थिक सफलता के ज्योतिषीय सूत्र : कृष्णमूर्ति पद्धति	37
18.	दशम भाव: पशु चिकित्सक योग	40
19.	विवाह के समयकी गणना के सूत्र	42
20.	फलित ज्योतिष में ज्योतिषी का दायित्व	43
21.	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	52
22.	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	56

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011(म.प्र.) से मुद्रित, संपादक: डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादक: स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना

महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते ।1।

नमस्ते गरुदा रुढ़े कोलासुर भयंकरी।
सर्वपाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।2।

सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी।
सर्वदुख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।3।

सिद्धि बुद्धि प्रदे देवी भुक्ति मुक्ति प्रदायनी।
मंत्र पूते सदा देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।4।

आद्यन्तरहीते देवी आद्य शक्ति महेश्वरी।
योगजे योग संभूते महालक्ष्मी नमोस्तुते ।5।

स्थूल सूक्ष्मे महा रौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।6।

पद्मासन स्थिते देवी परब्रह्म स्वरूपिणी।
परमेशी जगत माता महालक्ष्मी नमोस्तुते ।7।

श्वेताम्भर धरे देवी नानालन्कार भूषिते।
जगत स्थिते जगन्तातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते ।8।

इन्द्र बोले- श्रीपीठपर स्थित और देवताओंसे पूजित होनेवाली हे महामाये। तुम्हें नमस्कार है। हाथमें शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाली हे महालक्ष्मि ! तुम्हें प्रणाम है ॥1॥ गरुड़ पर आरूढ़ हो कोलासुर को भय देने वाली और समस्त पापों को हरने वाली हे भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें प्रणाम है॥2॥ सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली और सबके दुःखों को दूर करने वाली हे देवि महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है॥3॥ सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मन्त्रपूत भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें सदा प्रणाम है॥4॥ हे देवि ! हे आदि-अंतरहित आदिशक्ते ! हे महेश्वरि! हे योग से प्रकट हुई भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है॥5॥ हे देवि ! तुम स्थूल, सूक्ष्म एवं महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति हो, महोदरा हो और बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाली हो। हे देवि महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है॥6॥ हे कमल के आसन पर विराजमान परब्रह्म स्वरूपिणी देवि ! हे परमेश्वरि ! हे जगदम्ब ! हे महालक्ष्मी ! तुम्हें मेरा प्रणाम है॥7॥ हे देवि ! तुम श्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हो। सम्पूर्ण जगत में व्याप्त एवं अखिल लोक को जन्म देने वाली हो। हे महालक्ष्मी ! तुम्हें मेरा प्रणाम है॥8॥

सम्पादक की कलम से...

जीवन वैभव प्रकाशन का यह स्मारिका विशेषांक आपके सम्मुख प्रेषित करते हुए हम प्रसन्नता का अनुभव कर रहे है। उल्लेखनीय है कि **जीवन वैभव ग्रुप** ज्योतिष स्वास्थ्य नैतिक शिक्षा तथा सुसंस्कार के साहित्य की पत्रिका के साथ **एस्ट्रोवर्स** संस्था जिसका मूल उद्देश्य ही शिक्षा और शोध के कार्य के विद्वानों को प्रेरित करके इस परम्परावादी भारतीय वैदिक ज्ञान को समाज तक प्रेषित करने का उद्देश्य है के साथ **प्रथम पाराशर अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन** का आयोजन है राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 9 एवं 10 सितम्बर 2023 को आयोजित है जिसमें देश-विदेश के ज्योतिष शिक्षा के कार्य से जुड़े हुए विद्वानों के द्वारा अपने ज्ञान का लाभ समाज के विभिन्न विद्वानों को दो दिन के आयोजित कार्यक्रम को छः सत्रों में विभक्त कर प्रदाय किया जा रहा है।

इस शुभ अवसर का शुभारम्भ माननीय महामहिम राज्यपाल मध्यप्रदेश सम्माननीय श्री मंगुभाई पटेल जी द्वारा किया जा रहा है। इस पुनीत अवसर पर विद्वानों के ज्ञान और शोधपूर्ण आलेख एक सुन्दर गुलदस्ते के रूप में संजोकर **स्मारिका विशेषांक** के रूप में अक्टूबर-दिसंबर 2023 का यह अंक आपके हाथों में सादर प्रस्तुत है आशा है आपको रुचिकर प्रतीत होगा।

कुछ विद्वानों के आलेख प्रकाशन योग्य होने पर भी समय एवं स्थान अभाव तथा विलम्ब से प्राप्त होने के कारण प्रकाशित नहीं हो सके है तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर के विद्वानों के आलेख अंग्रेजी में प्राप्त हुए हैं जिन्हें अक्षरशः प्रकाशित किया गया है आगामी अंकों में हिन्दी भाषी पाठको की सुविधा हेतु हिंदी में प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

जीवन वैभव इस अंक के साथ ही अपनी स्थापना के 37 वर्ष पूर्ण करने जा रहा है। आप सब पाठकों के द्वारा इस प्रकाशन के प्रकाशित विषय के आलेखों को सराहते हुए गतिशीलता प्रदान की है। इसी प्रकार से ज्ञानगंगा के नियमित प्रवाह में सहभागी बने रहने के लिए जीवन वैभव सम्पादक मण्डल आपका आभार व्यक्त करता है।

शुभकामनाओं सहित

आपका सदैव शुभेच्छु
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक

अमृत घट

1. आवश्यकता कम करें, आवश्यकता जितनी कम होगी उतना ही अधिक सुख होगा।

- स्वामी रामतीर्थ

2. सबसे उत्तम दान वह है जो आदमी को इस योग्य बना दे कि वह दान के बिना काम चला सके।

- महात्मा गांधी

3. धन के मद में मतवाला मनुष्य गिरे बिना होश में नहीं आता।

- भृर्तृहरि

4. अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे तो वह कंगाल हो जाता है।

- चाणक्य

5. जैसे पानी में उत्पन्न होकर पानी में ही नष्ट होने वाले बुलबुलों पर किसी का ध्यान नहीं जाता उसी प्रकार धन से हीन व्यक्ति सामने रहते हुए भी लोगों की दृष्टि में नहीं आते।

- आचार्य विनोबा

6. शिष्टाचार शारीरिक सुंदरता की कमी को पूर्ण कर देता है वही व्यक्ति सर्वाधिक सुंदर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकता है। बिना शिष्टाचार के सौंदर्य का कोई मूल्य नहीं।

- स्वेट मार्डन

7. शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान कोई दूसरा पाप नहीं।

- लोकमान्य तिलक

8. प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्य का दूसरा नाम है। समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है।

- भगवान बुद्ध

9. किसी मनुष्य की बुराई पर विश्वास मत करो, जब तक तुम स्वयं उसे देख न लो और यदि बुराई सचमुच देखने में आए भी तो उसे भूल जाओ, किसी पर प्रकट न करने लगो।

- स्वामी विवेकानंद

वैभव दर्शन

वाणी ऐसी बोलिए

स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

अक्सर वाणी संयत रखने पर बल देते थे उनकी द्वारा वाणी को शस्त्र से अधिक धारदार हथियार बताया है समाज और परिवार में यदि वाणी संयत रखी जाए तो समाज संगठित होकर प्रेम भाव से समुचित विकास कर सकता है उनकी कही गई बात को अक्षरशः प्रस्तुत किया जा रहा है ***-संपादक***

महात्मा विदुर ने अपनी नीति में कई प्रकार की शिक्षाप्रद एवं जीवनोपयोगी जानकारी प्रदाय की है, मानव जीवन में सुखी, समृद्धि एवं शांति स्थापित करने के उद्देश्य से मिलनस्तरिता आपस में वैचारिक सामने एवं संतोषप्रद जीवन जीने के लिए भी सीख दी है। इसी परिप्रेक्ष्य में महात्मा विदुर ने कहा है कि हमारे जीवन में हमें संतुलित भाषा का प्रयोग करना चाहिए। कोई भी बात ऐसी नहीं करना चाहिए जिससे सामने वाले व्यक्ति के मन पर आघात हो एवं वह आपके व्यवहार से कष्ट पाए। महात्मा विदुर ने कहा है।

रोहिते सायकैविद्धं वनं परशुना हतम्।
वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम्।।

वाणों से बीधा हुआ तथा फरसे से कटा हुए वन भी पुनः हरा भरा हो जाता है एवं पनप जाता है लेकिन कटु वचन खाकर किसी के साथ हमने यदि वाणी से आघात किया है तो यह भयानक घाव नहीं भरता। सामान्य भाषा में प्रचलित कहावत इसी परिप्रेक्ष्य में एक और है कि ''तीर और तलवार के घाव तो भर जाते हैं लेकिन वाणी के नहीं।''

इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमें अपने जीवन में वाणी संयत रखना चाहिए ताकि हम अपने जीवन में मित्रों की संख्या सतत बढ़ाते रहें एवं हमारे शत्रु ही नहीं हो सके। यदि शत्रु है ही नहीं, तो जीवन में कहीं विरोध नहीं होगा एवं ना कोई तनाव होगा, जीवन सुखी सफलता से कटेगा, संपूर्ण जीवन कैसे कट गया पता ही नहीं चलेगा। बचपन से नवजवान हुए एवं कब बूढ़े हो गए पता ही नहीं चलेगा क्योंकि सुख से कटने वाले दिन पता नहीं चलते एवं तनाव का 1 दिन भी पहाड़ लगता है।

प्रथम महर्षि पाराशर अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन का उद्देश्य एक नजर में

ऋषिकुमार शुक्ला, आईपीएस
से.नि. एवं संस्थापक अध्यक्ष एस्ट्रोवर्स

प्रथम महर्षि पराशर ज्योतिष सम्मेलन 9 और 10 सितंबर 2023 को भोपाल में आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में भारत और विदेशों से अनेक उच्चकोटि के ज्योतिष विद्वान शिक्षकों को मंचप्रदान किया जाएगा जहां से वो व्यवसाय, शिक्षा, विवाह आदि जैसे अनेक जीवनोपयोगी विषयों पर ज्योतिषीय दृष्टिकोण से वार्तालाप करके अपने शोध और अनुभवों को साझा करेंगे।

इस आयोजन के मूल उद्देश्यों की पूर्ति हेतु, ज्योतिष ज्ञान के माध्यम से वैदिक संस्कृति की वैज्ञानिकता को आमजन और युवाओं में प्रसारित व उनको प्रोत्साहित किया जाएगा। वैश्विक परिवर्तनों से हो रहे मानवीय मूल्यों में परिवर्तन तथा ज्योतिष की सार्थकता पर यह कांफ्रेंस आयोजित है। हम अवगत हैं कि तेजी से हो रहे वैश्विक परिवर्तनों के कारण सांस्कृतिक तथा समाजिक मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। ऐसे में हमारे वैदिक काल से चले आ रहे ज्योतिष की सार्थकता तथा उसके उपयोग पर शिक्षण तथा शौध की यह कांफ्रेंस निश्चित ही एक सहरानीय प्रयास है।

इससे भी आगे बढ़कर यह एक अच्छा कार्य है कि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के सक्रिय सहयोग से तथा उनके ही सभागार में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। संस्कृत हमारी सनातनी भाषा है तथा इसको बिना समझे हम अपने वैदिक काल से चली आ रही परंपरा पारंपरिक ज्ञान को नहीं समझ सकते।

आज की आवश्यकता है कि संस्कृत में उपलब्ध ज्ञान को कैसे हम दिन प्रतिदिन में उपयोग में ला सकते हैं। ज्योतिष आमजन से नाता रखता है तथा संस्कृत में उपलब्ध है। इसको समझने से भी संस्कृत को बढ़ावा मिलता है।

इस दो दिवसीय ज्योतिषीय सम्मेलन

का आयोजन जीवन वैभव तथा एस्ट्रोवर्स संस्था के द्वारा अग्रणी भूमिका निभाते हुए किया जा रहा है। श्री रोहिणी रंजन जी (कनाडा), डॉक्टर डेविड फ्राले (अमेरिका) जैसे आदि अनेक, देश-विदेश में विख्यात और अनुभवी ज्योतिषियों को इस सम्मेलन के माध्यम से जोड़कर ज्ञान-प्रकाश को प्रसारित करने का प्रयास है।इस आयोजन में6 सत्र हैं, जिन में विभिन्न विषयों पर चर्चा होगी, कुछ आचार्यों द्वारा शोध के परिणाम भी रखे जायेंगे। इन विषयों में विश्व में हो रहे देश, काल तथा परिस्थिति के बदलाव को समझते हुए इस परिप्रेक्ष में कैसे ज्योतिषी आम जान के हित में उन्हें सही प्रश्नों का उत्तर दे सके इस पर विचार किया जायेगा। अन्य सत्रों में विवाह, शिक्षा, व्यवसाय, नक्षत्रों पर विचार किया जायेगा। स्वास्थ्य तथा आध्यात्म पर भी सत्र रखे गए है। इस आयोजन में भोपाल तथा प्रदेश के युवा ज्योतिष विद्यार्थियों को निशुल्क प्रतिभागी बनाया गया है।

ज्योतिष वेदों के 6 अंगों में से एक है। यह केवल भविष्य बताने का साधन न होकर ग्रह नक्षत्र के आधार पर वर्तमान को नियोजित और नियंत्रित ढंग से जीने का तरीका बताता है। ज्योतिष कर्म फल सिद्धांत पर आधारित है अतः वर्तमान समय में किस प्रकार से अपने दैनिक, सामाजिक व वित्तीय कर्म किए जाएं ताकि भविष्य में इच्छित परिणामों की प्राप्ति हो सके। एक्सट्रोवर्स अपने विभिन्न नियोजित क्रियाकलापों द्वारा युवाओं को और अन्य आमजनों को यही ज्ञान प्रसारित कर रहे हैं कि अपने ग्रह- नक्षत्र के अनुसार उनके जीवन में किस तरह के व्यवहार और कर्म उनके होने चाहिए जिससे जीवन में सुख, शांति, प्रेम, सौहार्द बना रहे और अपनी भारतीयता की गौरवशाली पहचान वैदिक संस्कृति से भी जुड़े रहें।

प्रारंभ में ज्योतिष भारतीय वैदिक संस्कृति के गणित, काल गणना तथा सूर्य चंद्रमा नक्षत्रों को समझने के लिये आवश्यक माना जाता रहा है। ऋग वेद में यज्ञ स्थलों की अभिकल्पना भारतीय गणित तथा ज्योतिष से उद्भुत है। सतपथ ब्राह्मण 27 नक्षत्रों के नाम का उल्लेख करता है। तत्पश्चात वेदांग ज्योतिष में काल गणना का विस्तृत विवरण भी दिया गया है। वराहमिहिर की पंच सिद्धांतिका में सूर्य सिद्धांत भी सम्मिलित है वह ज्योतिष को अधिक विस्तार देती है।

ऐसे ज्योतिष पर विभिन्न काल खंडों में इसके अवैज्ञानिक होने के आरोप लगाते रहे हैं। यह भी कहा जाता है कि ज्योतिष व्यक्ति को कर्म प्रधानता से हटकर भाग्य के भरोसे छोड़ती है। आज के कार्यक्रम से इस भ्रॉंति को दूर करने के लिये एक प्रयास प्रारंभ किया जा रहा हैं।

ज्योतिष मात्र भाग्य के भरोसे रहने की विद्या नहीं है अपितु जीवन के सभी चारों पुरूषार्थों जिनमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष शामिल है, को संतुलित बनाये रखने के लिये मार्ग और दिशा बताते हैं। आज के इस भौतिकवादी युग में मानवीय तथा सांस्कृतिक मूल्यों की आवश्यकता मनुष्य के जीवन में कितनी जरूरी है इसको भी ज्योतिष समझाता है।

ज्योतिष यदि सही ढंग से समझा जाये तो हमें किसी भी व्यक्तित्व का पूरा विवरण देने में समर्थ होता है जिससे जिस काल की अवधि में क्या चुनौतियां आ रही हैं, कहाँ हमारे ग्रहों की ऊर्जा अधिक समर्थन देती है। यह भी पता चल सकता है कि हमारे अपने गुणों अवगुणों को हम किस प्रकार अपने कर्मो से ऐसे परिवर्तित करें कि हम अपने भाग्य को भी सुधारने का कार्य कर सकें।

पिछले कुछ समय से ज्योतिष परंपरा व्यवसायिक हित का शिकार होती जा रही है। सभी विद्वानों से मेरा अनुरोध है कि वह यह समझं कि कोई भी व्यक्ति उनके पास परेशानी में आता है और उनका पुण्य उसी में है कि वह उसे सही उपाय और सही मार्गदर्शन दे सके।

एक और चुनौती ज्योतिषियों के समक्ष आती है कि उनमें अनेक मतभेद हैं। अलग-अलग परंपराओं में अलग-अलग उत्तर हैं जिसमें आम व्यक्ति तो भ्रमित होता ही है बल्कि शास्त्र की भी क्षति होती है। मैं आपको अवगत कराना चाहूंगा कि यह आज की बात नहीं है। एक काल खंड में भारत में सैकडों अलग-अलग पंचांग चला करते थे। हमारे स्वंतता सेनानी श्री बाल गंगाधर तिलक जी द्वारा आज से लगभग 125 वर्ष पूर्व एक राष्ट्रीय सम्मेलन कर यह प्रयास किया कि सभी विद्वान एक मत हो सकें। भारत सरकार ने भी कैलेण्डर रिफार्मस् कमेटी से एक राष्ट्रीय पंचांग की परंपरा प्रारंभ की। परमहंस रामकृष्ण द्वारा कहा गया है जितने मत उतने पथ ज्योतिष के विद्वान् यदि इस रहस्य को समझ सकें तो ज्योतिष का मार्ग और अधिक प्रशस्त हो सकता है। अभी ही राखी के त्यौहार पर ''भद्रा'' को लेकर असमंजस से आम धर्मावलम्बी व्यक्ति चिंतित एवं परेशान रहा। ज्योतिषी अपने ज्ञान, अपने मार्ग को कहते रहे परन्तु उनके आपस के मतभेदों ने इस पर्व को कठिन बना डाला। कैसे हम इन परिस्थितियों से ज्योतिष को निर्विवाद आगे बढ़ा सकते हैं, यह यक्ष प्रश्न उपस्थित रहेगा।

आप देख रहे हैं कि किस प्रकार से भारत के सभी नागरिक तथा वैज्ञानिक एक मत होकर भारत को तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं। यहाँ तक की हम चंद्रमा पर भी पहुंच गये हैं यही आवश्यकता ज्योतिष में भी है कि हम अपने मतभेदों को भुलाकर ज्ञान अज्ञान के अहंकार को भुलाकर इस दिव्य ज्ञान का आदान-प्रदान करें तथा आमजनों के हित में ज्योतिष को अधिक वैज्ञानिक बनायें।

पिछले 75 वर्षों में देशकाल तथा परिस्थितियों में हुये क्रांतिकारी परिवर्तनों के कारण ज्योतिष के शास्त्रोक्त सिद्धांत एवं सूत्रों का उचित उपयोग करें। शोध से नवीन उत्तर प्राप्त करें। यह कांफ्रेंस का उद्देश्य भी है और एक दिशा है कि जिससे हम ज्योतिष को और सार्थक बना सकेंगे।

यह ज्योतिषीय सम्मेलन हमारी अद्वितीय भारतीय वैदिक संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण के प्रयास में, एक और सुदृढ़ क़दम बढ़ाने के उद्देश्य से एस्ट्रोवर्स का, जीवन वैभव और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के साथ मिलकर एक संयुक्त प्रयास का हिस्सा है।

इस सम्मेलन के 6 सत्रों में विभिन्न विषयों पर चर्चा प्रस्तावित है। जिनमें आध्यात्मिक ज्योतिष पर भी विचार होना है। निश्चित ही यह हमारे जीवन में शुभता लाएगा तथा सत्कर्म के प्रति हमें प्रेरित करेगा। आप सभी को अनेक शुभकामनाएं। ज्योतिष को आगे बढ़ाएं एवं वैदिक संस्कृति को सुदृढ़ करें।

अतिचारी बृहस्पति अगले 8 वर्षों में विश्व में आमूलचूल परिवर्तन करेगा

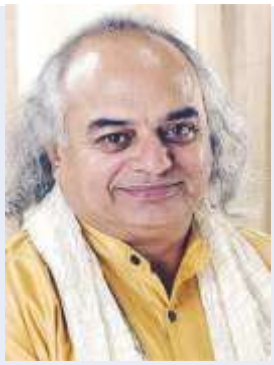

डॉ. अजय भाम्बी

प्राचीन ग्रन्थों में सौरमंडल की उत्पत्ति सूर्य से प्रारम्भ होती है। सूर्य के अत्यधिक ताप के प्रभाव से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई, लेकिन पृथ्वी अपनी धुरी पर नहीं घूम रही थी और सूर्य की तरह एकदम लाल आग का गोला थी। पृथ्वी बुरी तरह से तप रही थी। एक बहुत बड़ा उल्का पिंड Asteroid आकाश से पृथ्वी पर गिरता है जिसके फलस्वरूप पृथ्वी दो भागों में बंट जाती है। पृथ्वी का एक बड़ा हिस्सा उससे कटकर बड़े वेग से आकाश में उड़ जाता है और सूर्य के गुरूत्वाकर्षण के कारण उसके चारों ओर चक्कर लगाना शुरू कर देता है। जिसे हम मंगल ग्रह के रूप में जानते है। इसी कारण शास्त्र, मंगल को भूमि पुत्र कहते हैं।

पृथ्वी का दूसरा टुकड़ा मंगल से आकार और भार में छोटा था और पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण में आकर पृथ्वी के चक्कर लगाने लगा और यह अंतराल में पृथ्वी का satellite बना जिसे हम चन्द्रमा के रूप में जानते है। इस उल्का पिंड के गिरने से एक ओर चमत्कारिक घटना हुई, पृथ्वी अपनी धुरी पर 23.45 degree घूम गई और उसी समय से पृथ्वी की दो गतियां अस्तित्व में आयी। अपनी धुरी पर घूमने के कारण दिन-रात होने लगे और सूर्य के चक्कर लगाने के कारण वर्ष या संवत्सर का प्रादुर्भाव हुआ। उस समय कई घटनाएं एक साथ घटी जिसके फललस्वरूप चंद्रमा, पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण के कारण पृथ्वी के चक्कर लगाने लगा और वहां से शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष अस्तित्व में आये। उल्लेखनीय है कि उल्का पिंड के गिरने से पूर्व पृथ्वी एकदम स्थिर या flat थी और पृथ्वी पर जलवायु और जीवन का प्रारम्भ भी नहीं हुआ था। पृथ्वी के धुरी पर घूमने के कारण ही जीवन की संभावनाएं प्रबल हुई।

सूर्य में हजारों प्रकार की furnaces and gases हैं जिनकी क्रिया- प्रतिक्रिया से वहां आग की लपटें जलती रहती हैं जिसके फलस्वरूप अंतरिक्ष और पृथ्वी का तापमान लाखों डिग्री ऊपर चला गया। मंगल के सूर्य से मिलने के कारण यह तापमान इतना अधिक हो गया कि पृथ्वी पर थोडी बहुत जो जीवन की संभावना बनी थी वो भी समाप्त हो गयी। सौरमंडल और अंतिरक्ष में भी तापमान इतना अधिक हो गया कि ऐसा लगा कि मानो कि इस महा आग के कारण अंतरिक्ष भी जलकर भस्म हो जायेगा। देवताओं ने बृह्मा से प्रार्थना की कि अब आप ही कोई उपाय करें कि जीवन की संभावनाएं बन सकें।

ब्रह्मा ने अपनी शक्ति से एक बहुत बड़े पर्वत जैसे ग्रह का निर्माण किया जो कालांतर में बृहस्पति कहलाया। बृहस्पति के अस्तित्व में आते ही अंतरिक्ष में तेज हवाएं, भयंकर आंधी, तूफान, घनघौर बादल आपस में टकराने और गरजने लगे और पूरे आकाश में डराने वाली बिजली गरजने लगी, साथ ही भूकंप, बवंडर, सूनामी इत्यादि पूरे सौरमंडल में घटने लगे और पृथ्वी पर भी ये सारी घटनाएं दृष्टिगत होने लगी। यह घटनाक्रम बहुत लंबे समय तक चला। ऐसा लग रहा था कि जैसे सूर्य और मंगल अपना पूरा पराक्रम बृहस्पति को दिखा रहे हैं। बृहस्पति ग्रह इन दोनों ग्रहों कि शक्तियों को क्षीण करता जा रहा था और साथ ही उन्हें अपने प्रभाव में भी लेता जा रहा था। बृहस्पति, सूर्य से आकार में कई गुना बड़ा होने के कारण वो सूर्य से जितना ताप और energy लेता था उससे कई गुना positive सूर्य को लौटा भी देता था। हाल ही में रूस के वैज्ञानिकों ने खोज की कि जब बृहस्पति सूर्य के पास होता है तो महामारी, अकाल, दुर्घटना, सुनामी इत्यादि नहीं होते और दुनिया में युद्ध आदि भी नहीं होते।

बृहस्पति के अस्तित्व में आने के बाद संपूर्ण सौरमंडल का निर्माण तो नहीं हुआ लेकिन दुनिया में फैले असंतुलन को रोकने में बृहस्पति अदभुत भूमिका निभाता है और कई बार ऐसा भी लगता है कि बृहस्पति स्वयं ही दुनिया को निगल जायेगा। बृहस्पति समस्त ग्रहों में आकार, भार, व्यवहार में बडा है इसीलिए इसे ना केवल ग्रहों का बल्कि विश्व का गुरू कहा जाता है।

बृहस्पति अगले 8 वर्षों में यानि 2025 से लेकर 2033 तक अतिचारी रहेगा। अतिचारी बृहस्पति का व्यक्ति और विश्व पर कैसा प्रभाव पड़ेगा, इसकी चर्चा विस्तार से करेंगे। उल्लेखनीय है कि 2018 से लेकर 2022 तक बृहस्पति 4 राशियों में अतिचारी था। इस दौरान पूरी दुनिया ने जिस तरह का वीभत्स काल देखा ऐसा पिछले 100 साल में कभी नहीं देखा गया। इन 4 वर्षों में कोरोना महामारी से इस दुनिया का ऐसा कोई घर नहीं है जो आहत न हुआ हो। बीमारी के साथ आर्थिक अस्थिरता ने भी इस दुनिया के प्रत्येक देश और व्यक्ति को झकझोर दिया। पूरी दुनिया में आफिस का तौर तरीका बदल गया। शिक्षा के क्षेत्र में भी पूरी तरह से आमूलचूल परिवर्तन हुआ। दुनिया भर में यातायात चाहे रोड़ का हो, समुद्र का हो और आकाश पूरी तरह ठप हो गया था। जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जो कोरोना से प्रभावित न हुआ हो।

हमने 2020 के प्रारम्भ में ही कोरोना की भविष्यवाणी कर दी थी जिसमें कोरोना की तीनों आपदाओं का जिक्र है और हमने यह भी कहा था कि अप्रैल 2022 के बाद कोरोना समाप्त हो जायेगा। हमारे Youtube - Ajai Bhambi channel पर देखा भी जा सकता है।

महाभारत युद्ध के समय आकाश ने बहुत सारे संकेत देना प्रारम्भ कर दिये थे। कुछ नये नक्षत्र आकाश में दिखने लगे थे और एक नक्षत्र के milky way से टकराने की घटना का वर्णन भी है। हालांकि यह टक्कर नहीं हुई थी लेकिन ये milky way के बहुत नजदीक आ गया था। Milky way यानि आकाश गंगा में हमारा सौरमंडल स्थित है। जब भी कोई बड़ा नक्षत्र milky way के पास आयेगा तो पृथ्वी पर हलचल की संभावनाएं प्रबल हो जायेंगी। इस नक्षत्र का नाम Andromeda था। उस समय ये पृथ्वी से देखने पर एक छोटा स्टार मालूम पड़ता था लेकिन ये एक Andromeda galaxy है और इसका आकार, विस्तार milky way से अधिक है और आज भी इसे नग्न आंखों से देखा जा सकता है। एक और बड़ी घटना बृहस्पति को लेकर महाभारत काल में हुई थी जब बृहस्पति 6 साल के लिए वक्री था और जब भी लगातार बृहस्पति की गति में ह्रास होगा तो वो समय धर्म की हानि का होगा। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जब भी धर्म की हानि होगी तब मैं धर्म की रक्षा के लिए जन्म लूंगा।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।

आजकल बहुत सारे विद्वान जिनमें डा. राज वेदम प्रमुख हैं उन्होने Indian Astronomy पर बहुत काम किया है। आकाश में कौन सा नक्षत्र कितने हजारों वर्ष पूर्व आकाश में दिखा था और आकाश की गति के साथ कितना चला, आज उसका पता लगाया जा सकता है। बहुत सारे विद्वान इस क्षेत्र में अनुसंधानों में लगे हुए हैं और उनकी जानकारियां बहुत सटीक हैं।

बृहस्पति का जब जन्म हुआ था तब हमने देखा था कि जन्म के समय बृहस्पति बड़े आवेग में था और आकाश में अस्त-व्यस्तता जो सूर्य और मंगल ने फैला रखी थी और तापमान लाखों डिग्री हो गया था तो अपनी जलवायु, बरसात आदि से आकाश का वातावरण normal किया। बृहस्पति के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता और वैसे भी हम जानते हैं कि बृहस्पति जब कुंडली के केन्द्र में होता है तो हम कहते है कि किं कुर्वन्ति ग्रह सर्वे यत्र केन्द्रे बृहस्पति अगर कुंडली में बृहस्पति खराब हो तो व्यक्ति से भीख भी मंगवा देता है। पिछले हजार वर्षों में बृहस्पति कभी भी लगातार 8 वर्षों के लिए अतिचारी नहीं हुआ । अतिचारी का तात्पर्य है कि बृहस्पति जब एक राशि में प्रवेश करता है तो वहां से 3 या 5 महीने के अंदर अगली राशि में प्रवेश कर जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि बृहस्पति अपनी 30 डिग्री इतने कम समय में पूर्ण कर लेता है और फिर वो अगली राशि में 4 5 महीने रहता है, वक्री होकर पुनः पहली राशि में आता है और 4 से 8 आखिरी डिग्रियों को छूकर अगली राशि में चला जाता है। यह क्रम मिथुन राशि से लेकर कुंभ राशि तक चलता रहेगा अर्थात बृहस्पति 2025 से लेकर 2033 तक अतिचारी रहेगा। पिछली बार 4 वर्षों में यानि 2018 से लेकर 2022 तक जब बृहस्पति अतिचारी था तो दुनिया में क्या हुआ तो उससे हम सब परिचित हैं।

आने वाले 8 वर्षों में यानि 2025 से लेकर 2033 तक इस दुनिया में अतिचारी बृहस्पति का प्रभाव कैसा रहेगा इसकी भविष्यवाणी प्रस्तुत करते हैः

1. Radical change in weather throughout the world

2025 में बृहस्पति मिथुन राशि से अतिचारी या fast forward mode में होना प्रारम्भ करेगा और अगले 8 वर्षों तक, जब तक वो कुंभ राशि में नहीं आ जाता तब तक अतिचारी ही बना रहेगा। बृहस्पति इससे पहले 8 वर्ष तक कभी अतिचारी नहीं हुआ और ना ही ऐसा कोई रिकार्ड उपलब्ध है। लेकिन इतना हम जानते हैं कि बृहस्पति जैसा ग्रह जब आकाश में निरंकुश होता है तो उसका सबसे पहला और गहरा प्रभाव जलवायु पर पड़ता है। पिछले 50 वर्षों से पृथ्वी के जलवायु में आमूलचूल परिवर्तन हो रहा है और पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है जिसके कारण दुनिया का मौसम पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो चुका है। कब, कहां डराने वाली बरसात हो जाये, जंगल में भयानक आग लग जाये, तूफान आ जाये, पहाड़ों पर land slide हो जाये, cyclone के आने की कोई खबर नहीं मिलती, समुद्र में hurricane, tsunami, ज्वालामुखी विस्फोट होते ही रहते हैं।

अभी बृहस्पति मेष और वृष राशि में अपनी normal गति पर है लेकिन पिछले कुछ महीनों से, हम देख रहे हैं कि पृथ्वी के जलवायु और तापमान में लगातार अस्त-व्यस्तता बनी हुई है। मौसम वैज्ञानिकों का मानना है कि 2033 तक पृथ्वी का तापमान 1 degree centigrade से अधिक बढ़ जायेगा। अगर ऐसा होगा तो पृथ्वी के कई भागों में जीवन अस्त-व्यस्त हो जायेगा।

बृहस्पति जब भी आकाश में अनियंत्रित होता है तो उसका सबसे ज्यादा प्रभाव मौसम पर होता है और बृहस्पति, मौसम के क्षेत्र में हमेशा के लिए आमूलचूल परिवर्तन कर देता है। पृथ्वी के तापमान का महंगाई से बड़ा गहरा संबंध है। क्योंकि जब पृथ्वी का तापमान बढ़ेगा तो फल, फूल, सब्जियों की देखभाल के लिए या वातावरण को उनके अनुकूल रखने के लिए पैसे खर्च होंगे और economics के सिद्धांत के अनुसार जब लागत ज्यादा होगी तो कीमत कम नहीं रखी जा सकती जिसका असर world economy पर पड़ेगा और आम आदमी की समस्या बढ़ेगी।

2. Shift of power from West to East

व्यापक और राज्य के स्तर पर बृहस्पति धन और शक्ति का प्रदाता है। धन का बृहस्पति से संबंध है, ये तो हर कोई जानता है और इस पर debate की गुंजाइश भी नहीं है। वर्तमान युग में शक्ति का सबसे बड़ा हथियार धन है। अमेरिका के पास पूरी दुनिया का धन है और इसी कारण उसका dollar सबसे शक्तिशाली है और इसीलिए अमेरिका सबसे ज्यादा powerful है। अमेरिका ने सारे देशों को लोन दे रखा है और उनका dollar, सौ सालों से अधिक समय से राज कर रहा है। पश्चिम के बहुत चाहते है। सारे देश या तो अमेरिका से डरते हैं या उसके संरक्षण में रहना आने वाले 8 वर्ष यानि 2025 से 2033 तक हम देखेंगे और दुनिया देखेगी कि अमेरिका का वर्चश्व तेजी से कम होना शुरू होगा। हालांकि अमेरिका इन 8 वर्षों में रसातल में नहीं जायेगा लेकिन उसकी coffin में कील ठुक जायेगी और अमेरिका के रसातल की यात्रा 2050 में संपंन होना प्रारम्भ होगी।

Shift of power, West से East में होगा जिसमें बहुत सारे देश होंगे लेकिन उनमें भारत प्रमुख होगा।

3. Major change economics in world

मैं जब Economics में MA कर रहा था तो उसमें एक सूत्र पढ़ाया जाता था 'धन वो धुरी है जिसके चारों ओर अर्थशास्त्र चक्कर लगाता है।' इतने वर्षों बाद यह समझ में आया कि धन वो corporate है जिसके चारों ओर दुनिया की सारी सरकारें चक्कर लगाती हैं। पहले सरकारें धन का उपयोग कर राष्ट्र और व्यक्ति का उत्थान करती थी। लेकिन आज स्थिति यह है कि दुनिया भर के corporate अमेरिका जैसे देशों से लेकर दुनिया भर की सरकारों को चलाते हैं। यह trend भारत में भी Ambani, Adani के रूप में देखा जा सकता है।

हो सकता है कि corporates कुछ क्षेत्रों में अग्रणी हों और देश का भाभी करते हों। जब सरकार अपने देश या जनता के लिए काम करती है तो उसका व्यक्तिगत हित दोबारा सत्ता पाना तो हो सकता है लेकिन देश को लूटना नहीं हो सकता। जबकि ये बात corporate के लिए नहीं कही जा सकती।

आने वाले वर्षों में इस पहलू पर भी विश्व में विचार किया जायेगा और corporates के पर काटे जायेंगे।

4. Mutation in ecology system

बृहस्पति का इतने लंबे समय तक अतिचारी होना बहुत ही असाधारण घटना है और ऐसी घटनाएं आकाश में आसानी से नहीं होती। Ecology क्षेत्र में बहुत अधिक परिवर्तन हो रहे हैं। जब हम पेड़, पौधे, वनस्पति जमीन, जड़ों आदि की बात करते हैं तो उसमें बहुत सारे रद्दोबदल देखने को मिलते हैं। पृथ्वी और पेड़-पौधों पर कई तरह से फर्क पड़ता है। जिसमें शहरीकरण,

industrialization, जंगलों का काटना इत्यादि- इत्यादि।

इस सबके फलस्वरूप जलवायु में होने वाले परिवर्तन ecology में कई तरह का mutation करते हैं। अगर पेड़-पौधों की जड़ों को Fungus लग जाये तो उनकी प्रजातियां ही नष्ट हो जाती हैं। अगर Fungi अस्तित्व में आ जाये तो वो पृथ्वी को दोबारा उपजाऊ कर देती है। पृथ्वी का दोहन भी बहुत ज्यादा किया गया है उससे भी हमारी फसलें कमजोर और शक्तिहीन पैदा हो रही हैं।

हमारा मानना है कि अतिचारी बृहस्पति के लाभ भी बहुत होंगे। पिछली बार corona के time में जब बृहस्पति अतिचारी था तो वहां Corona जैसी महामारी को इलाज भी उपलब्ध हो गया था। रोजगार, शिक्षा, आचार-व्यवहार और रहन-सहन के तौर तरीकों में बहुत बदलाव आया था। जलवायु और मौसम में ऐसा लुभावना परिवर्तन जो दुनिया ने देखा वो अपने आप में एक अजूबा था।

हमारी भविष्यवाणी है कि Ecology के क्षेत्र में बहुत आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे जो मानवता के लिए विशेषरूप से हितकारी होंगे।

5. Space is the domination: new field of

वर्तमान में space प्रत्येक देश के लिए open है। कोई भी देश आकाश में किसी भी प्रकार की खोज कर सकता है, अपने satellite भेज सकता है। Space travel के क्षेत्र में एक होड़ लगी हुई है और प्रत्येक विकासशील देश अपने rocket, space और ग्रहों पर भेजने की तैयारी में लगा हुआ है। बहुत सारे देशों ने तो अपने Space Station बना लिए हैं और बाकी भी प्रयत्नशील हैं। आने वाले 30 वर्षों में यह स्थिति नहीं रहेगी। दरअसल बृहस्पति अतिचारी के दौरान space में विकासशील देश अपनी सीमाएं निर्धारित करने का plan करेंगे और जब ऐसा होगा तो बाकी देश और दुनिया विरोध करेगी लेकिन China जैसे देश को रोक पाना मुश्किल होगा। Space एक ऐसा मुद्दा है जिस पर 2035 से पहले विवाद प्रारम्भ होगा।

आजकल China बड़े मजबूत पहाड़ों की गहराई नापने में लगा हुआ है। अभी हाल ही में उसने नई लंबी rocket जैसी मशीने बनाई हैं जो पहाड़ों को चीरती हुई पृथ्वी की गहराई नापने में लगी हुई हैं और इन मशीनों ने अभी तक 10 किलोमीटर गहरे तक पहाड़ों को खोद दिया है। आगे चीन कहां तक खोदेगा यह समय बतायेगा ।

6. New micro viruses will create havoc and science will fight with new medicines

एक दार्शनिक का मत है कि पृथ्वी या प्रकृति जब एक व्यक्ति, कीट-पतंगे, पशु-पक्षी या पेड़-पौधे को पैदा करती है तो पैदा करने के बाद उसकी रूचि उसमें खत्म हो जाती है और वो उसको मारने की व्यवस्था प्रारम्भ कर देती है और अंत में उसे सफलता भी मिलती है। प्रकृति की प्राथमिक रूचि सृजन में है और जैसे ही उसने एक सृजन किया तो वो उसके प्रति निर्मोही हो जाती है। अब वो जिये या ना जिये इसमें उसकी कोई रूचि नहीं है। डार्विन का सिद्धांत भी यही कहता है कि survival of the fittest. प्रकृति ने पेड़-पौधे, जड़ी-बूटियों इत्यादि से यह भी व्यवस्था की है कि ये organism की जिम्मेदारी है कि वो अपने को जीवित रख सके और अपने प्रभाव से दुनिया को परिचित भी करा सके।

पिछली बार 2018 से 2022 के मध्य जब कोरोना का प्रकोप हुआ था और पूरी दुनिया में हाहाकार मच गया था। तब एक खास बात यह हुई थी कि विश्व की कई Pharmacies ने कोरोना की दवा खोज ली और कोरोना का अंत भी कर दिया। हालांकि blood pressure, diabetes, aids जैसी बीमारियों की कोई permanent दवाई नहीं है।

2025 से 2033 के मध्य जब बृहस्पति अतिचारी होगा तब कई नये microscopic viruses आ सकते हैं। हमें लगता है कि ये सब मिलकर महामारी तो नहीं फैला पायेंगे लेकिन इन से बचने का उपाय यथा समय करना होगा। हमारा ऐसा मानना है कि scientists समय रहते इनकी दवाइयां भी खोज लेंगे।

7. Sudden spiritual developments throughout the world. Consciousness will take place the central stage:

मूलतः बृहस्पति धार्मिक / आध्यात्मिक ग्रह है। पिछली बार जब बृहस्पति अतिचारी हुआ था तब हमने notice किया था कि आम व्यक्ति कहीं ना कहीं भाग्य और कर्मों के फल को महत्व देने लगा है। जो लोग नास्तिक थे उन लोगों से भी ऐसी बातें सुनने को मिल जाती थी। इस शताब्दी के प्रारम्भ होते ही, हम बहुत तेजी से digital world में प्रवेश करते जा रहे हैं जहां पर artificial intelligence के क्षेत्र में algorithm का प्रयोग data processing में द्रुत गति से हो रहा है। अभी पिछले दिनों Denmark की प्रधानमंत्री की speech, artificial intelligence में लिखी थी।

आध्यात्म के अलावा दूसरा महत्वपूर्ण, बृहस्पति का क्षेत्र, ज्ञान के

नये आयाम खोजना है। ज्ञान का जब प्रबल विस्तार होने लगता है तब वहां पर अपने मन, बुद्धि और आत्मा को जानने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान की नितांत आवश्यकता है। आध्यात्मिक जगत को ठीक से जानने के लिए आपको ध्यान का सहारा लेना पड़ेगा। और जब भी व्यक्ति गहरे ध्यान में उतरना शुरू करता है तो वो पूरी तरह से वर्तमान से जुड़ जाता है। वर्तमान से जुड़ने का तात्पर्य है पूरी तरह conscious हो जाना। जैसे-जैसे consciousness का विस्तार होने लगता है वैसे-वैसे व्यक्ति दंभ और आडंबर से दूर होता चला जाता है। आने वाले वर्षों में आदमी धार्मिक कम और आध्यात्मिक ज्यादा होता चला जायेगा।

चैतन्य व्यक्ति या समाज मानवता के कल्याण के लिए कार्य करता है और वो करूणा से लबालब होता है। आने वाले वर्षों में अतिशय ज्ञान को धारण करने के लिए हमें शिव जैसे प्रयासों की आवश्यकता है जिन्होंने गरल को कंठ में धारण कर लिया था।

8. Theory of Karma will re-establish itself and people's belief will increase tremendously:

बृहस्पति का अर्थ होता है - बृहत + पति। Solar system में यह सबसे बड़ा ग्रह है। इसी कारण इसका कार्य क्षेत्र भी बहुत बड़ा है। जिस प्रकार एक योग्य गुरू की दृष्टि से कुछ छिप नहीं सकता। और जहां भी अव्यवस्था है उसे आसानी से व्यवस्था में परिणित कर सकता है। ठीक उसी प्रकार बृहस्पति कुंडली या समाज में जो भी अव्यवस्था या अंधविस्वास है उन्हें आसानी से दूर कर देता है। अगर किसी भी कुंडली के केन्द्र में बृहस्पति हो तो हम कहते हैं- **किं कुर्वन्ति ग्रहा सर्वे, यत्र केन्द्रे बृहस्पति ।**

Karmic Theory को लेकर बहुत सारे विभिन्न मत हैं। लेकिन फिर भी बहुत सारे लोग तो यह मानते ही हैं कि पूर्व जन्मों में जो हमने अच्छे- बुरे कर्म किये हैं उनका ही फल हमें इस जन्म में मिलता है। जैसे इस जन्म में मां-बाप, भाई-बहन, पति-पत्नी, बच्चे, रिश्तेदार आदि हमारे पुराने कर्मों के अनुसार ही तय होते हैं। हालांकि पति-पत्नी के मामले में चुनाव की सुविधा है लेकिन अंत में ज्यादा फर्क मालूम नहीं पड़ता।

अमेरिका के एक डाक्टर Brian Wess जो विश्वविख्यात मनोवैज्ञानिक हैं उन्होंने हजारों लोंगों पर प्रयोग किये हैं जिन्हें वो regression के द्वारा पिछले जन्मों में ले गये और जो जो इन्होने बात कही वो सारी - सच थी। वे तो लोगों को aggression के द्वारा अगले जन्म में भी ले गये और लोगो ने अगले जन्म में क्या होगा उसकी व्याख्या भी की। बहुत सारी घटनाएं सत्य भी पाई गयी।

हमारा मानना है कि बृहस्पति की अतिचारी गति के दौरान बहुत सारे लोगों का karmic theory पर भरोसा बैठेगा और ऐसा इसलिए होगा क्योंकि लोंगों को अनुभव भी होगा। Karmic theory पर बहुत सारी चर्चाएं, लेख, debate, Video, TV, films आदि पर देखने को मिलेंगी और यह सिद्धांत आम चर्चा का विषय बनेगा ।

9. Paradigm shift in education and job

पिछली बार जब बृहस्पति जब अतिचारी हुआ था तो पूरी दुनिया में स्कूल, कॉलिज और ऑफिसिज एकदम से ठप हो गये थे। बच्चों कि शिक्षा को जारी रखना बहुत महत्वपूर्ण है और बिना ऑफिस के काम हुए जीवन पटरी से उतर गया था।

कहते हैं- आवश्यकता आविष्कार की जननी है - Necessity is the mother of invention.' शिक्षा और ऑफिसिज ऑनलाइन हो गये थे और बच्चे और युवा घर से ही Active हो गये थे।

आने वाले वर्षों में education और job के क्षेत्र में कोई ऐसी विधि खोजना पड़ेगी जो बदलते युग के अनुरूप स्वयं को ढाल सके। हमारा ऐसा मानना है कि आने वाले बृहस्पति के अतिचारी वर्षों के दौरान बहुत सारे परिवर्तन होंगे जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

हमें ऐसा लगता है कि हम एक क्रांतिकारी युग परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं जहां पर दुनिया को ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जो इस परिवर्तन से प्रभावित न हो। बृहस्पति का इतने लंबे समय तक अतिचारी होना एक बहुत बड़ी घटना है और इसके परिणाम पूरी शताब्दी में देखने के मिलेंगे। वैसे भी विज्ञान और artificial intelligence ने दुनिया का नक्शा बदल कर रख दिया है।

अब आदमी पृथ्वी पर रहना भी नहीं चाहता और उसकी नजर आकाश और ग्रह-नक्षत्रों पर है। इस शताब्दी के अंत से पहले मनुष्य ग्रह-नक्षत्रों पर रहना प्रारम्भ कर देगा और दूसरे ग्रह के लोगों से जिन्हें aliens भी कहते हैं, के साथ दोस्ताना संबंध बनायेगा। वैज्ञानिकों का मानना है कि aliens पृथ्वी के लोगों से intelligent भी है और advance भी।

अगला cycle बृहस्पति का जब 2035 में मेष राशि से दोबारा शुरू होगा और मीन राशि में 2046 में समाप्त होगा। इस यात्रा के दौरान भी बृहस्पति पुनः 8 वर्ष के लिए अतिचारी होगा। इसकी चर्चा कभी आगे करेंगे।

पुराणों, धर्मग्रंथों तथा ज्योतिष में पर्यावरण का महत्व

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

हमेशा प्रत्येक व्यक्ति स्वच्छता और अच्छे वातावरण को ही पसंद करता है रुचिपूर्वक स्थान मैं रह कर अथवा स्थान को देखकर मन में प्रसन्नता व्याप्त होती है मन को प्रसन्नता तथा शरीर को आत्मानुभूति देने वाला स्थान वास्तव में अच्छे पर्यावरण से योग तो होगा इसमें कोई संशय नहीं अच्छा पर्यावरण का वातावरण रखना भी हमारे ही दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण कार्य दायित्व है हमको स्वच्छ वायु मिले पीने को स्वच्छ जल मिले तथा आसपास के क्षेत्र में किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं हुआ यही अच्छे पर्यावरण की निशानी है प्राचीन काल से इस पर अधिक ध्यान दिया जाता रहा है प्रकृति से प्रेम करना वृक्षों को पूजनीय मानना उनकी पर्व त्योहारों पर पूजन करना हमारे प्राचीन संस्कारों में ही जुड़ा हुआ है लेकिन वर्तमान पीढ़ी इससे धीरे-धीरे अनभिज्ञ होकर हमारी संस्कृति को भूलती जा रही है उसे पुनः अवगत कराए जाने के लिए हमारा यह प्रयास है।

प्राचीन काल से कुआ, बावड़ी, जलाशय का निर्माण राहगीरों को चलने के लिए अच्छे मार्ग का निर्माण कराना स्वास्थ्य रक्षा के लिए औषधालय तथा ज्ञान प्रदान करने के लिए पाठशालाएं आने जाने वाले लोगों को ठहरने के लिए धर्मशाला,आदि का निर्माण प्राचीन काल से पुण्य कारक माना गया है। उसी प्रकार वृक्ष लगाना एवं उसका संरक्षण करना भी परिवार में पुत्रों के पालन बराबर महत्व एक वृक्ष का पोषण करना है। जिसकी छाया में प्राणी बैठकर संतुष्टि महसूस करता है वृक्ष की महत्ता निम्नानुसार है

जीवन में लगाए गए वृक्ष अगले जन्म में संतान सुख के रूप में प्राप्त होते हैं। (विष्णु धर्मसूत्र 19/4)

जो व्यक्ति पीपल अथवा नीम अथवा बरगद का एक, चिंचिड़ी के 10, कपित्थ अथवा बिल्व अथवा ऑवले के तीन और आम के पांच पेड़ लगाता है, वह *सब पापों से मुक्त हो जाता है। (भविष्य पुराण)

पौधारोपण करने वाले व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

शास्त्रों के अनुसार पीपल का पेड़ लगाने से संतान लाभ होता है।

अशोक वृक्ष लगाने से शोक नहीं होता है।

पाकड़ का वृक्ष लगाने से उत्तम ज्ञान प्राप्त होता है।

बिल्वपत्र का वृक्ष लगाने से व्यक्ति दीर्घायु होता है।

वट वृक्ष लगाने से मोक्ष मिलता है।

आम वृक्ष लगाने से कामना सिद्ध होती है।

कदम्ब का वृक्षारोपण करने से विपुल लक्ष्मी की प्राप्त होती है।

प्राचीन भारतीय चिकित्सा- पद्धति के अनुसार पृथ्वी पर ऐसी कोई भी वनस्पति नहीं है, जो औषधि ना हो।

स्कंद पुराण में एक सुंदर श्लोक है-

अश्वत्थमेकम् पिचुमन्दमेकम्
न्यग्रोधमेकम् दश चिञ्चिणीकान्।
कपित्थबिल्वाऽऽमलकत्रयञ्च
पञ्चाऽऽम्रमुप्त्वा नरकन्नपश्येत्।।*

अश्वत्थः = पीपल (100 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

पिचुमन्दः = नीम (80 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

न्यग्रोधः = वटवृक्ष(80 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

चिञ्चिणी = इमली (80 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

कपित्थः = कविट (80 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

बिल्वः = बेल (85 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

आमलकः = आँवला (74 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

आम्रः = आम (70 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

(उप्ति = पौधा लगाना)

अर्थात्- जो कोई इन वृक्षों के पौधों का रोपण करेगा, उनकी देखभाल करेगा उसे जीवन में कष्टो(नरक)के दर्शन नही करना पड़ेंगे।

मूले ब्रह्म त्वचा विष्णु शाखा शंकरमेवच।
पत्रे पत्रे सर्वदेवायाम् वृक्ष राज्ञो नमोस्तुते।।

भावार्थ-जिस वृक्ष की जड़ में ब्रह्मा जी तने पर श्री हरि विष्णु जी एवं शाखाओं पर देव आदि देव महादेव भगवान शंकर जी का निवास है और उस वृक्ष के पत्ते पत्ते पर सभी देवताओं का वास है ऐसे वृक्षों के राजा पीपल को नमस्कार है।

हमारी भारतीय परम्परा के अन्तर्गत शुभ पर्व तिथियो नक्षत्रो में निर्धारित पर्व त्यौहार पर नदी पर्वत श्रंखला के दर्शन पूजन का महत्व रहा है इसके साथ ही साथ वृक्षों पेड पौधो का जल से सिंचन और पूजन करना भी हमारी धार्मिक परम्परा का हिस्सा रहा है । उल्लेखनीय है कि 12 राशि, नव ग्रह तथा 27 नक्षत्रों के लिए निर्धारित पेड़ पौधे की पूजन आदि भी हमारे लिए उत्तम स्वास्थ्य,सुख समृद्धि मानसिक तनाव दूर करने का सुगम उपाय माना गया है

27 नक्षत्रों के वृक्ष इस प्रकार है :–

1. अश्विनी	–	कोचिला,कुचला
2. भरणी	–	आंवला
3. कृतिका	–	गूलर
4. रोहिणी	–	जामुन
5. मृगशिरा	–	खैर
6. आर्द्रा	–	शीशम / बेहड़ा
7. पुनर्वसु	–	बांस
8. पुष्य	–	पीपल
9. अश्लेषा	–	नागकेशर / नागचम्पा
10. मघा	–	वट (बरगद)
11. पूर्वा फाल्गुनी	–	पलाश
12. उत्तरा फाल्गुनी	–	कलमी आम
13. हस्त	–	रीठा
14. चित्रा	–	बेल
15. स्वाती	–	अजरुन / अर्जुन
16. विशाखा	–	भाटकटैया
17. अनुराधा	–	भालसरी / मोलसरी
18. ज्येष्ठा	–	चीड़ / सागर
19. मूल	–	राल
20. पूर्वाषाढ़ा	–	अशोक / बेत
21. उत्तराषाढ़ा	–	कटहल
22. श्रवण	–	अकौन / मदार
23. धनिष्ठा	–	शमी
24. शतभिषा	–	कदम्ब
25. पूर्व भाद्रपद	–	आम
26. उत्तरभाद्रपद	–	नीम
27. रेवती	–	महुआ

बारह राशियों के पेड़–पौधे एवं उनकी पूजन का फल

मेष : आंवला
मेष राशि में केतु शुक्र और सूर्य के नक्षत्र का एक चरण आता है अतः शुक्र के नक्षत्र का वृक्ष का पौधा ऐश्वर्य वृद्धि तथा सुस्वास्थ्य में सहायक होता हैइस कारण आंवले के पौधा अथवा वृक्ष को भवन परिसर में यह बगीचे में लगाकर जल से सिंचित करना एवं पूजन करना मानसिक विचारो पारिवारिक सुख दाम्पत्यसुख केशुभ फल में वृद्धि दायक रहता है

वृष : जामुन,
राशि चंद्रमा की उच्च राशि है तथा इसमें रोहिणी नक्षत्र जोशी स्वयं चंद्रमा का है इस कारण रोहिणी नक्षत्र के पौधे अथवा वृक्षको भवन परिसर या बगीचे में लगाकर जल चढ़ाना पूजन करना शुभ फल में वृद्धि करता है ।

मिथुन : शीशम,
मृगशीर्ष 2 चरण आर्द्रा और पुनर्वसु 3 चरण मिथुन राशि में आते हैं राहु के नक्षत्र का वृक्ष शीशम को जलचढाना भवन परिसर या बगीचे मे लगाना बुद्धि और ज्ञान वृद्धि के साथ कला और संगीत प्रवीणता वर्द्धक माना गया है

कर्क : नागकेशर,
कर्क राशि पुनर्वसु चौथा चरण पुष्य और अश्लेषा नक्षत्र आते है बुध के नक्षत्र नागकेशर पौधे / वृक्ष को भवन परिसर या बगीचे में लगाना शुभ फल वृद्धि तथा स्वास्थ्य के लिए हितकर माना गया है ।

सिंह : पलास,
इस राशि में केतु शुक्र और सूर्य नक्षत्र का एक चरण सम्मिलित है सूर्य एवं शुक्र में परस्पर विरोधाभास होने से शुक्र के नक्षत्र का पौधा ६ वृक्ष अपने भवन परिसर या बगिचे में लगाना चाहिए जिससे सिंह राशि के जातक को वैचारिक तनाव नही होकर शारीरिक और मानसिक रूपसे स्वस्थ्य रह सके

कन्या : रीठा / जुही
कन्या राशि का स्वामी बुध होता है तथा इसमें उत्तरा फाल्गुनी 3 हस्त एवं चित्रा के 2 चरण होते है बुध की राशि में चन्द्र नक्षत्रका पौधा रीठा या जुही अपने भवन परिसर या बगिचे में लगाना चाहिए जिससे स्वास्थ्य लाभ और मानसिक चिंता तनाव में कमी आसकती है ।

तुला : अजरुन,
तुला राशि में चित्रा २चरण स्वाति एवं विशाखा नक्षत्र 3 चरण होते है । तुला राशि में राहु का नक्षत्र होने के कारण इस का पौधा अर्जुन अथवा अजरून को अपने भवन के परिसर में अथवा बगीचे में लगाकर संचित करना एवं यजन करना लाभप्रद माना गया है इससे अनावश्यक तनाव में जरूर कभी आती है

वृश्चिक : मोलसरी भालसरी,
वृश्चिक राशि के अंतर्गत विशाखा का चतुर्थ चरण अनुराधा और जेष्ठा नक्षत्र आते हैं जिसमें शनि के नक्षत्र के लिए मोलसरी भालसरी वृक्ष को अपने बगीचे मे लगाकर जल से सिचित करके पूजन करना लाभ प्रद माना गया है ।

धनु : जलवेतस / शाल,
बृहस्पति की राशि है एवं इसमें रितु शुक्र और सूर्य के नक्षत्र आते हैंजलवेस अथवा शाल के वृक्ष को जल चढ़ाना और अपने भवन या फार्म पर लगाना शुभफल में वृद्धि कारक माना गया है

मकर : अकोन
अकोन का वृक्ष चन्द्रमा का जोकि इस राशि में श्रवण नक्षत्र होने से प्रभावशील होता है अधिक भावनाशीलता के कारण कभी कभी आर्थिक समस्या अनावश्यक व्यय पर नियंत्रण तथा स्वास्थ्य के प्रति लाभप्रद वृक्ष जिसे कि उत्तर या उत्तर पश्चिम में लगाना और जल चढ़ाना चाहिए चाहिए ।

कुंभ : कदम्ब वृक्ष
भगवान कृष्ण को यह वृक्ष अत्यंत प्रिय है शतभिषा नक्षत्र का स्वामी भी है अतः कुंभराशि को राहु द्वारा उत्पन्न भय मानसिक क्लेश तनाव को दूर करके सुखी अनुभव कराता है ।

मीन : नीम के वृक्ष को अपने घर के पास अथवा फार्म हाउस में लगाकर जल से सिंचित करना चाहिए । मीन राशि अंतर्गत उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का भी वृक्ष होने से शनि द्वारा होने वाले कष्ट को भी कम करता है इस वृक्ष के छाव में बैठने से चिंताए कम होकर व्यक्ति कर्मण्यता की ओर अग्रसर होंगा।

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्ध-परार्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।।

भावार्थ - दुर्जनों की मित्रता दिन के पूर्वार्द्ध में रहने वाली छाया की तरह, प्रारम्भ में अधिक और फिर धीरे-धीरे कम होती रहती है एवम् सज्जनों की मित्रता दिन के उत्तरार्ध की छाया की तरह पहले कम और फिर उत्तरोत्तर बढ़ने वाली होती है। सज्जनों से की हुई मित्रता सदा कल्याणकारी एवम् दुर्जनों की मित्रता विनाशकारी होती है।

भूतकाल दर्शन की खगोलीय व्याख्या

आचार्य राजेश मिश्र
पुष्पांजलि वेदांग पीठ, भोपाल

पौराणिक कथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन काल के ऋषि-मुनि त्रिकाल-दर्शी थे। वे ध्यान लगाकर भूतकाल में घटित घटनाओं का ज्ञान कर लेते थे। वर्तमान काल में भी कुछ ऐसे ही विद्वान किसी भी व्यक्ति के बारे में भूतकाल में घट चुकी घटनाओं के बारे में बता रहे हैं। इस लेख के माध्यम से भूतकाल ज्ञान की इस विधा को खगोलीय दृष्टि से विश्लेषण करके देखा जा सकता है।

आधुनिक खगोल विज्ञान के अनुसार हमारे सूर्य से जो किरण निकलती है, वह लगभग 8.3 मिनट में धरती पर पहुंचती है। इससे हम यह भी कह सकते हैं कि पृथ्वी से टकराकर लौटने वाली किरण भी सूर्य के बराबर दूरी पर 8.3 मिनट में पहुंचेगी।

जब कोई प्रकाश किरण किसी भी वस्तु से टकराकर आंख के रेटिना तक आती है तब वह दिखाई देती है, इस तथ्य से सभी परिचित हैं। अतः स्वयं सिद्ध है कि यदि हम सूर्य के बराबर दूरी से पृथ्वी के दृश्य को देखें तो वह 8 मिनट पूर्व का दृश्य होगा। उदाहरण के लिये में 5 मिनट पहले कुर्सी पर बैठा था। इसके तत्काल बाद उठकर आपके समक्ष इस समय मंच पर खड़ा हूँ। इस समय यदि कोई मुझे सूर्य के बराबर दूरी से देख रहा हो तो उसे अभी में कुर्सी पर ही बैठा नजर आऊंगा, क्योंकि 5 मिनट पहले मुझसे टकराकर निकली हुई किरण अभी सूर्य के बराबर दूरी तक पहुंची नहीं है।

एक अहोरात्र में 1440 मिनट होते हैं तो एक दिन पहले की किरण, सूर्य की दूरी की तुलना में लगभग 173.28 दूरी पर इस समय गमन कर रही है। यदि हम 173.28 गुना दूरी से देखें तो पृथ्वी के पिछले दिन का दृश्य नजर आयेगा।

प्रकाश किरण एक वर्ष में जितनी दूरी तय करती है उसे एक **प्रकाशवर्ष** दूरी कहा जाता है। यदि हम 5160 प्रकाशवर्ष दूरी पर जाकर पृथ्वी को देखें तो महाभारत का युद्ध होता हुआ दिखाई देगा। इसी प्रकार यदि हम पृथ्वी से 7 करोड़ प्रकाशवर्ष दूरी पर जाकर पृथ्वी को देखें तो डायनासौर नजर आयेंगे।

पौराणिक मान्यता में उल्लेखित भगवान चित्रगुप्त भी पृथ्वी से सुदूर यमलोक में बैठकर हमारे कर्मों का ज्ञान इसी प्रकार से करते होंगे।

अब यहां एक शंका उत्पन्न होती है कि, मानव द्वारा अंधेरे में किये गये कर्मों का अभिलेख कैसे संभव है। इसका उत्तर प्रकाश किरण की संरचना में छुपा है। वास्तव में दृश्य प्रकाश किसी विद्युत चुंबकीय तरंग का अत्यंत संकीर्ण भाग है। विद्युत चुंबकीय तरंग के स्पेक्ट्रम में रेडियो तरंगें, अतिसूक्ष्म तरंगें, अवरक्त तरंगें, दृश्य प्रकाश तरंगें, पराबैंगनी तरंगें, एक्स-रे और गामा तरंगें शामिल

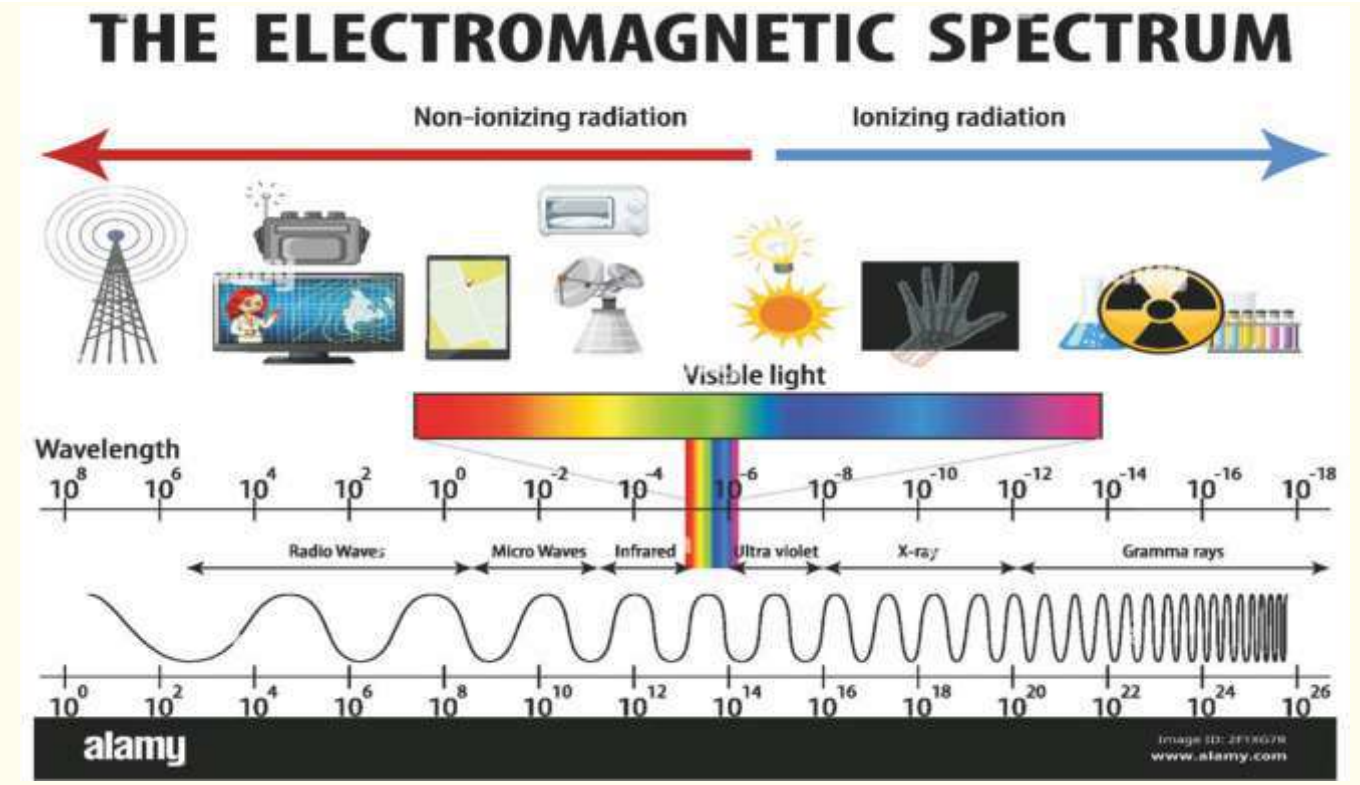

होती हैं। इनमें से पराबैंगनी तरंगें, एक्स-रे और गामा तरंगें अंधेरा, ठोस पदार्थ और धातुओं का भेदन करने में सक्षम हैं। इन किरणों की उपस्थिति पृथ्वी के कण-कण में और सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड में व्याप्त है। अतः यदि कोई व्यक्ति सोचे कि उसे कोई नहीं देख रहा है तो यह उसकी नादानी है। वास्तव में ईश्वर कृत प्रकृति में इन किरणों के माध्यम से सब कुछ संचित (रिकार्ड) हो रहा है।

विद्युत चुंबकीय तरंग का संकेतिक चित्र आगामी पृष्ठ पर देखिये ।

इस प्रकार पुराणों में वर्णित **चित्रगुप्त** के कृत्य की अवधारणा पुष्ट होती है।

अतः खगोल विज्ञान की सहायता से यह सिद्ध होता है कि भूतकाल दर्शन संभव है।

अव जटिल प्रश्न यह उपस्थित होता है कि, हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों के पास ऐसी कौन सी तकनीकि थी जिससे वह पृथ्वी पर ही रहकर भूतकाल के समय में विचरण कर उसका प्रत्यक्ष अनुभव कर लेते थे ? वर्तमान काल में भी भारत में कुछ ऐसे विद्वान हैं जो उनके सम्मुख बैठे व्यक्ति का भूतकाल बता देते हैं। इस अनुसंधान में निम्न लिखित **अवधारणओं पर कार्य** करने की आवश्यकता है -

-ध्यान और समाधि का ब्रम्हाण्ड से तारतम्य ।

- वेदों के तत्संबंधी सूत्र एवं संकेतो का मनन।

-मन की वास्तविक गति का प्रयोगिक आंकलन ।

-यह ज्ञान अगोचर (इन्द्रियातीत) गति से प्राप्त हो सकता है।

-गुरुत्वाकर्षण बल के कारण किरणों पर पड़ने वाले विचलन प्रभाव का अध्ययन।

उदाहरण के लिये अल्वर्ट आइंसटाईन द्वारा सन 1905 में बताया था कि, जब कोई किरण सूर्य के निकट से गुजरती है तब वह सूर्य के प्रबल गुरुत्वाकर्षण बल के कारण लगभग 72 विकला मुड़ जाती है। इस बात की पुष्टि सन 1919 में इंगलैंड के खग्रास सूर्यग्रहण के दौरान हुई थी। हमारे ब्रम्हाण्ड में करोड़ों सूर्य जैसे शक्तिशाली तारे हैं, अतः किरणें किस अवधि में किस दिशा में गमन कर रहीं हैं। ब्रम्हाण्ड के केन्द्र को आधुनिक खगोल में **ब्लैक होल** कहा जाता है। इसकी ओर जाने वाली किरणें उसी में समा जातीं हैं। अतः हो सकता है कि अन्य दिशाओं में जाने वाली किरणें अन्य पिण्डों के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण विचलित होकर पृथ्वी पर वापस आती हों जिन्हें हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों द्वारा ध्यान अभ्यास से प्राप्त कर लिया जाता हो।

उपरोक्त के अलावा आपके मन में जो भी अवधारणाऐं जन्म लें उनका वैज्ञानिक विधि से विशेषण करने पर कुछ न कुछ उपलब्धि अवश्य प्राप्त होगी।

कौन से ग्रह-संयोग (IAS) भारतीय प्रशासनिक सेवा के योग बनाते हैं?

ज्योतिर्विद मनिन्दर सिंह

हर साल भारत में लाखों छात्र आईएएस परीक्षा देते हैं। हर कोई अपने जीवन में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में सफल होना चाहता है। लेकिन कुछ ही लोग इसमें सफल हो पाते हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा में सफलता पाने के लिए किसी की कुंडली में सूर्य की तरह उच्च ज्ञान और नियमित समय पर जुपिटर, बुद्धि में ग्रहण की भूमिका होती है। चलिए जानते हैं कि कुंडली में इन ग्रहों की किस स्थान पर आईएएस अफसर बनने की संभावना होती है।

अगर सूर्य और बुद्धि कुंडली के केंद्र या लग्न में होते हैं और गुरु का शुभ दृष्टि उन पर हो, तो उनके पास आईएएस अफसर बनने की संभावना होती है।

कुंडली में लग्न और लग्नाधिपति भाग्येश स्थान में स्थित हो और उनका केंद्र या त्रिकोण में हो, तो उनके पास आईएएस अफसर बनने की संभावना होती है।

यदि धनेश लाभकारी स्थान पर बैठे हों और 10वें भाव के स्वामी या 10वें भाव के स्वामी के साथ या उनके साथ बैठे हों, तो उस व्यक्ति में आईएएस बनने की संभावना होती है।

यदि गुरु कर्क राशि में हो और उसके राशि में हो और लग्नेश और दशमेश उच्च राशियों में हों और केंद्र या त्रिकोण में स्थित हों, तो व्यक्ति में आईएएस बनने की संभावना होती है।

यदि सूर्य और गुरु संयुक्त हों और मंगल अच्छी तरह स्थित हो, तो आईएएस में सफलता मिलती है।

यदि 10वें भाव के स्वामी को केंद्र या त्रिकोण में शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती हो, तो वह उच्च प्रशासनिक अधिकारी बनता है।

यदि कुंडली में सूर्य उच्च राशि में हो और गुरु या शुक्र उच्च राशि में हो और उन्हें शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती हो, तो उसे उच्च राजसी स्थिति मिलती है।

यदि मेष लग्न हो और सूर्य और बुद्धि पांचवें भाव में हों और गुरु नवम भाव में हो, तो उस व्यक्ति को उच्च प्रशासनिक अधिकारी बनने की संभावना होती है।

यदि वृषभ लग्न हो और बुद्धि-सूर्य पांचवें भाव में हों और उनका गुरु पर पूरी दृष्टि हो, तो व्यक्ति आईएएस में सफल होता है।

यदि गुरु पांचवें भाव में हो और सूर्य और बुद्धि नवम भाव में हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रशासनिक प्रणाली में सफल होता है।

यदि सिंह लग्न हो और गुरु-शुक्र और सूर्य-बुद्धि नवम भाव में हों, तो वह आईएएस बन सकता है।

यदि सिंह लग्न हो और सूर्य-बुद्धि लग्न में हो और गुरु नवम भाव में हो, तो वह आईएएस बन सकता है।

यदि वृश्चिक लग्न हो और गुरु पांचवें भाव में हो और सूर्य दसम भाव में हो, बुद्धि ग्यारहवें भाव में हो, तो ऐसे व्यक्ति को आईएएस बनने की संभावना होती है।

यदि धनु लग्न हो और गुरु लग्न में हो, बुद्धि दसम भाव में हो, सूर्य नवम भाव में हो और मंगल पांचवें भाव में हो, तो ऐसे व्यक्ति को आईएएस बनने की संभावना होती है।

यदि मीन लग्न हो और गुरु लग्न में हो या सूर्य नवम भाव में हो, बुद्धि द्वादश भाव में हो और मंगल नवम भाव में हो, तो ऐसे व्यक्ति को आईएएस बनने की संभावना होती है।

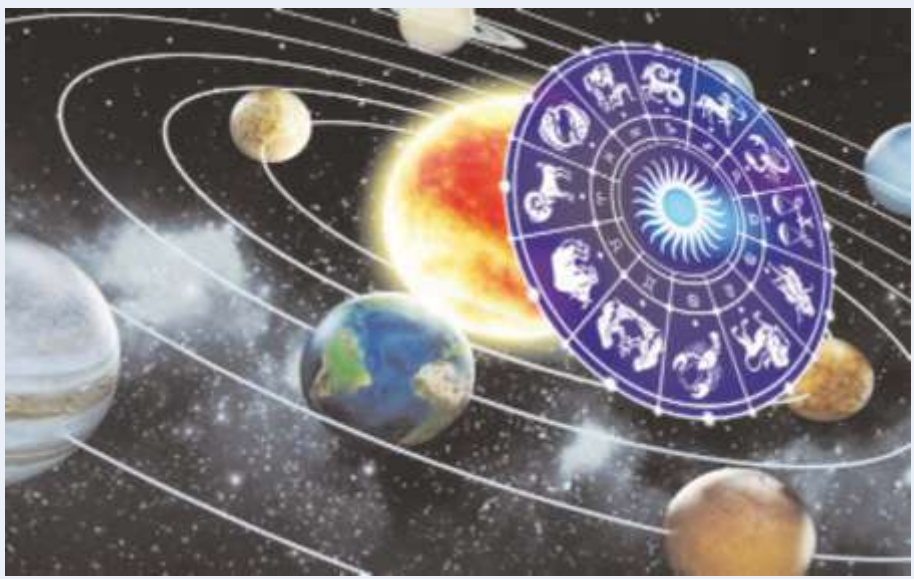

यदि कुंडली में अर्ध्यदित्य योग वृष, मिथुन, सिंह या कन्या राशि में अनुकूल स्थान में बनता है, तो यह योग प्रशासनिक प्रणाली में सफलता देता है।

यदि कुंडली में सूर्य उच्च राशि में हो और गुरु सर्वोत्तम स्थिति में हो, तो यह शिक्षा में सफलता देता है और आईएएस बनाने में मदद करता है।

राशियाँ

मकर- संसद, अधिक सरकार को ठीक करने की तैयारी।

कुम्भ- सामाजिक रूप में सभ्यता की देखभाल करने की बड़ी इच्छा। खेल में सार्वजनिक सुधार लाने की इच्छा।

मेष- व्यक्तिगत इच्छा एक प्रशासक बनने की और बाकी सबसे अलग खड़ा होने की। एक मजबूत खिलाड़ी राशि।

धनु- अपनी अहंकार और असंवेदनशील व्याख्यानों से बड़ी चीजों की दिशा में जिम्मेदारी निभाने की इच्छा। सरकार को समझने और जांचने की मांग।

नक्षत्र

कृत्तिका- सूर्य द्वारा अधिक। यह व्यक्ति की योग्यता को पहचानने, अनुकूल काटने और अनुकूल के साथ ऊपर उठने की क्षमता को दर्शाता है। दूसरों के लिए अपनी ऊर्जा समर्पित करने की तैयारी होती है।

मघा- राजा और पूर्वजों की उच्च सिंहासन। जब मघा नक्षत्र जुड़ता है, तो किसी न किसी तरीके से व्यक्ति अपने क्षेत्र में सबसे ऊपर होता है।

उत्तराषाढ़ा- योद्धा बनने के बाद गवर्नर द्वारा संधित किए गए संगीत। इस नक्षत्र में अभिजित भी मौजूद होता है, जिससे कि अन्तिम मान में अपने प्रतिवादियों को परास्त करने की इच्छा होती है।

पुनर्वसु- ऐसे व्यक्तियों के पास तब तक नींद नहीं आती है जब तक कि वे अपने हाथ में लिए गए काम को पूरा नहीं कर लेते हैं, उनकी एकांतिक दिशा होती है, जैसे कि एक दिशा-निर्देशक केवल अपने एक स्थान की इच्छा रखता है।

पुष्य- दूसरों की मदद करने की इच्छा, उनकी समस्याओं का समाधान करने की इच्छा। समाज की पुनर्निर्माण और उनके संकटों का समाधान करने की इच्छा।

उत्तर फाल्गुनी- मघा की राजगद्दी के बाद राजा के काम का करना, इस शाही मंच पर बुलाया जाना।

भाव

10वें भाव- अनुमति, प्रशासन, कार्य वातावरण।

11वें भाव- बड़ी कंपनी, पुनर्गठन, इच्छाएँ, उद्देश्य, इच्छाएँ, लालसाएँ, प्रशासन की लाभ।

6वें भाव- सहायता, सक्रिय समर्पण, प्रतिद्वंद्विता और बाधाओं का सामना करना।

9वें भाव- अधिकार, उच्च ज्ञान और दायित्व की पुरस्कृति, कर्तव्य की पुरस्कृति की क्षमता।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श

ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

बी–14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755–2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com

परामर्श के लिए पूर्व समय लेना आवश्यक :

फलित ज्योतिष में सर्वतो भद्रचक्र

अरुण ओम मित्तल
कोटा, राजस्थान

सर्वतोभद्र चक्र ज्योतिष की एक ऐसी अद्भुत विधा है जिसके द्वारा हम भूत वर्तमान भविष्य सभी कुछ बहुत बारीकी से और सटीकता से जान सकते हैं।

सबसे पहले हम यह जानते हैं कि सर्वतोभद्र चक्र क्या है यह एक 10 आदि एवं 10 खड़ी रेखाओं का एक चक्र है जिसमें 81 कोष्टकों का निर्माण होता है।

इसमें ईशान आदि चारों कोणों दिशाओं के 81 कोष्टकों में 28 नक्षत्र अभिजीत सहित, स्वर, व्यंजन, 12 राशियां, तिथियां, सातों वार को एक प्रक्रिया के तहत भरा जाता है। इसका निर्माण करने के लिए प्रैक्टिस की आवश्यकता होती है।

इसके निर्माण की प्रक्रिया थोड़ी सी जटिल है यह हमें इंटरनेट से बना हुआ तैयार मिल जाता है।

इससे भूतकाल, वर्तमान काल एवं भविष्य काल देखने के लिए हमें अपने जन्म नक्षत्र, जन्म राशि, जन्मतिथि, नक्षत्र चरण के अक्षर एवं अक्षर के स्वर की आवश्यकता होती है।

इसके अतिरिक्त लग्न, नवमांश एवं नाड़ी स्वामी का भी महत्व होता है।

जिसे हम सर्वतोभद्र चक्र में अलग स्याही के पेन से अंकित कर लेते हैं।

जिस भी समय हमें वर्तमान या भविष्य देखना हो उस समय गोचर में ग्रह किस नक्षत्र में स्थित है एवं वह कितने अंश के हैं तथा वह वक्रीय या अस्त है यह भी हमें लिख लेना चाहिए।

सभी नौ ग्रहों को उनके नक्षत्र में जिसमें वह स्थित है सर्वतो भद्र चक्र में स्थापित कर देना चाहिए।

ग्रहों को दो श्रेणियां में विभाजित किया गया है

1 क्रूर ग्रह

2 सौम्य ग्रह

क्रूर ग्रह में शनि, सूर्य, मंगल, राहु एवं केतु आते हैं। एवं सौम्य ग्रह में बृहस्पति शुक्र बुध चंद्र आते है।

जैसे ग्रहों की दृष्टि से होती है वैसे ही सर्वतो भद्र चक्र में ग्रहों के वेध देखे जाते हैं। जो तीन प्रकार के होते हैं

वाम वेध, सम्मुख वेध एवं दक्षिण वेध

सूर्य, चंद्रमा, राहु एवं केतु के हमेशा तीनों वेध होते हैं। अन्य ग्रहों के उनकी स्थिति वक्रीय, अति वक्रीय, कुटिल गति, मंद, समगती, तिव्रगति, अतिचारी, अतितीव्र गति अनुसार अलग-अलग वेध होते हैं। जो वाम, सम्मुख या दक्षिण में से कोई एक हो सकता है।

यदि हमारे यदि हमारे पंचाधी वर्ण, स्वर, राशि, तिथि, वार, नवमांश को दो या दो से अधिक क्रूर ग्रह वेध कर रहे हो तो वह स्थिति या वह दिन हमारे लिए तकलीफ देह होता है इससे हमें स्वास्थ्य में, व्यापार में या रिश्तों मैं नुकसान उठाना पड़ सकता है एवं यदि पांचों अशुभ ग्रह स्वर, वर्ण आदि को वेध कर रहे हो तो व्यक्ति की मृत्यु तक संभव है।

ऐसे ही यदि शुभ ग्रह का वेद हो तो वह स्थिति सुखद होती है व्यापार के लिए लाभदायक होती है एवं आर्थिक उन्नति वाली होती है।

सर्वतोभद्र चक्र द्वारा रोजाना का फलित देखा जा सकता है और वह भी अत्यंत सटीकता के साथ।

देश की परिस्थिति का आंकलन किया जा सकता है। तेजी मंदी किस समय किसमें आएगी इसका भी सटीकता से आंकलन होता है। देश में मौसम के क्या हाल रहेंगे वर्षा कितनी रहेगी अर्थात जो भी प्रश्न मन में आए उसका निराकरण, समाधान सर्वतोभद्र चक्र द्वारा आसानी से किया जा सकता है। इसके लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है।

हमारे जीवन में जब भी कोई शुभ या अशुभ घटना घटित होती है उस समय सर्वतोभद्र चक्र हमें यह बताने में समर्थ है की है क्यों हो रहा है ऐसी परिस्थिति वापस दोबारा कब बनेगी कितने दिनों बाद कितने महीनों बाद यह कितने वर्षों बाद यह शुभ या अशुभ परिस्थिति आएगी।

यदि और बारीकी से इसका अध्ययन करना हो तो हमें सप्त ऋषि नाड़ी को भी इसमें सम्मिलित करना चाहिए जो क्रमश प्रचंड,पवन, दहन, सौम्या नीर, जल एवं अमृत नाड़ी होती है हमारा जन्म नक्षत्र जो होता है उसी से हम यह तय कर सकते हैं कि हमारी कौन सी नाड़ी है।

जन्म के पहले नक्षत्र से क्रमशः जन्म नक्षत्र, संपत, विपत, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, बाधक/वध, मेत्री एवम अतिमित्र यह नवतारा चक्र या नक्षत्र होते है इनका भी ज्योतिषी में बहुत महत्व है एवं सर्वतोभद्र चक्र द्वारा इनका शुभ ग्रह से वैध होना हमें यह दर्शाता है कि किस समय वह शुभ या अशुभ समय आने वाला है जो हमें नुकसान या फायदा दे सकता है।

इसी प्रकार किसी भी वस्तु चाहे वह धातु हो, कृषि उत्पादन हो या अन्य कोई भी की तेजी मंदी देखनी हो तो उसे नक्षत्रों के आधार पर देखा जाता है अर्थात गोचर में चलने वाले ग्रह किस नक्षत्र को वैध कर रहे हैं उसी से निर्धारित होता है कि उस वस्तु में तेजी होगी अर्थात अथवा मध्य होगी।

जैसे उदाहरण के लिए अश्विनी नक्षत्र को अशुभ ग्रह वेध कर रहे हो तो धान, कपड़ा, जानवर, पशुधन आदि में तेजी आती है एवं यदि अश्विनी नक्षत्र को ही शुभ ग्रह वेध कर रहे हो तो उपरोक्त दी हुई चीजों में मंदी आती है।

एक अन्य उदाहरण लेते हैं यदि पुष्य नक्षत्र को अशुभ ग्रह वेध कर रहे हो तो सोना, चांदी, घी, नमक, चावल, तेल आदि में तेजी आएगी एवं शुभ ग्रहों के वेध से इन्हीं वस्तुओं में मंदी आती है।

इसी प्रकार शेयर मार्केट कमोडिटी सराफा बाजार आदि को भी देखा जाता है।

ज्योतिष और हमारा जीवन

राजेश सोनी भोपाल

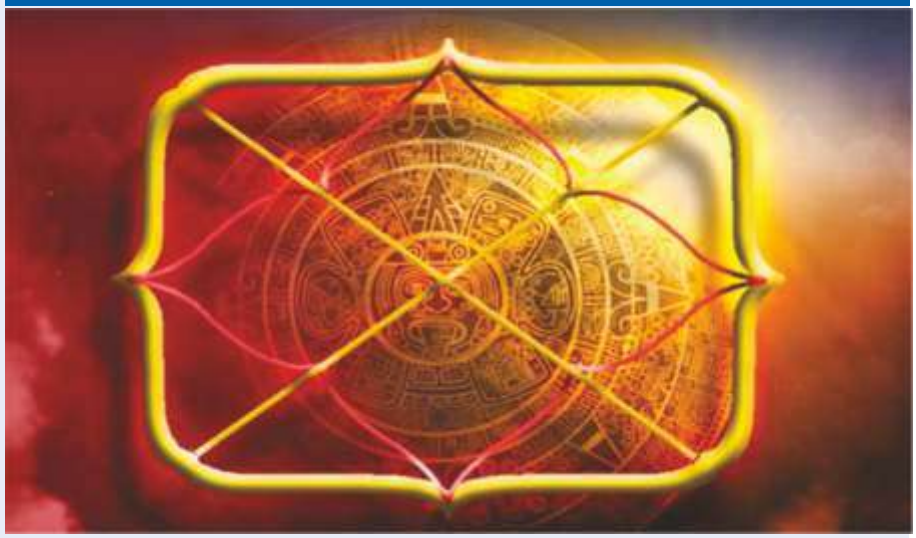

ज्योतिष क्या है ये हम सब जानते है। हम लोगों में से दो तरह ले लोग होते है एक जो ज्योतिष को बिलकुल भी नहीं मानते और दूसरे जो इसको बहुत मानते हैं। हर काम ग्रह -नक्षत्रों को देख -पूछ कर ही जीवन बिताते है।

ज्योतिष कोई पाखंड नहीं है जो माना ना जाये और कोई अंधविश्वास भी नहीं है कि हर बात में ज्योतिष को लाया जाये। बल्कि यह कहेंगे की अगर हम अपनी दिनचर्या ही ऐसी बना ले और अपने रिश्तों को निभाते हुए उनकी मर्यादा को बनाये रखते है तो हमारे सारे ग्रह अपने आप ही संतुलन में आ जाते है।

क्यूँ कि सभी ग्रह पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों को किसी न किसी रूप से प्रभावित करते ही है।

सूर्य- आत्मा और पिता का कारक है अगर पिता का सम्मान किया जाय तो सूर्य अपने आप ही संतुलित हो कर अच्छा प्रभाव देगा।

चंद्रमा- माता और मन दोनों का कारक है माता का सम्मान किया जाये तो यह संतुलित हो कर इंसान को अवसाद की स्थिति से हटा कर अच्छी कल्पना शक्ति देगा।

मंगल- साहस, रक्त और रक्त - सम्बन्धियों का कारक है। अगर कोई भी व्यक्ति अपने पारिवारिक रिश्तों से अच्छी तरह निर्वाह करता है तो मंगल ग्रह अपने आप ही अच्छा फल देने लगता है।

बुध- वाणी, काव्य -शक्ति, ज्योतिष और जासूसी और त्वचा -सम्बन्धी रोगों का कारक है अगर कोई व्यक्ति अपनी वाणी का सही प्रयोग करता है तो बुध ग्रह भी संतुलित हो जायगा।

वृहस्पति - भाग्य, पुत्रकारक राज्य, धन और आयु का कारक होता है शरीर में मोटापे और अहंकार का कारक भी होता है .अगर कोई व्यक्ति अपने गुरु का सम्मान,धर्म के प्रति रूचि और बुजुर्गों का सम्मान करता है तो यह संतुलित हो कर अच्छा फल प्रदान करता है।

शुक्र- ग्रह नेत्रों और दाम्पत्य जीवन-,ऐश्वर्य -पूर्ण जीवन और कन्या -सन्तति का कारक है। अगर कोई व्यक्ति अपने जीवन साथी के प्रति समर्पित हो कर रहे , स्त्री जाति का आदर करे तो यह ग्रह स्वयं ही संतुलित हो जाता है।

शनि- ग्रह वात, आयु, नौकर, हड्डियों रोग में कमर, सर्वाइकल आदि के रोगों आदि का कारक है। अगर कोई व्यक्ति अपने इष्ट और कुल देवता के प्रति निष्ठा अपने देश के प्रति निष्ठा और अपने सेवकों के प्रति दया भाव रखता है तो यह ग्रह बहुत अच्छा फल देगा।

राहू-केतू- दोनों ही छाया ग्रह है. राहू अँधेरे और भ्रम,गुप्त रोग और शत्रुओं का कारक है तो केतू ,बुद्धि-भ्रम ,विद्या -बाधा आदि का कारक है यहाँ भी अगर कोई व्यक्ति किसी भी भ्रम जाल में ना पड़ कर ,सही वस्तु -स्थिति को समझ कर दृढ -निश्चयी हो कर रहे तो ये ग्रह संतुलित हो कर अच्छा ही फल देते हैं।

ज्योतिष एक ऐसा विज्ञान है जिसमे हम सब के जीवन की घटनाओ का अच्छा बुस समय की पहले से होने वाली समय का पता चल सकता है।

जब किसी भी समस्या का हल नहीं मिलता तो वह ज्योतिष रूपी प्रकाश की राह पकड़ते है । एक हारा हुआ इंसान ही ये सोचता हुआ ज्योतिष के पास जाता है कि शायद यहाँ से कोई प्रकाश की किरण मिल जाए जिससे जीवन पथपर चलने की राह आसान हो जाए। जिस प्रकार मेडिकल जांच के लिए लोग जागरूक होते हैं वैसे ही हमें ज्योतिष के लिए भी होना चाहिए. और लोगों को भ्रम में ना पड़ कर एक अच्छे अवसर के लिए ज्योतिषीय परामर्श लेनी चाहिए।

धन सम्पदा (भौतिक सम्पन्नता) के लिए भाव 8 का महत्व

पं आर.पी. ओझा भारद्वाज
ज्योतिष प्रवीण (स्वर्ण पदक)

ज्योतिष परामर्श में अधिकांश जातक धन एवं भौतिक सम्पन्नता के विषय में ही प्रश्न करते देखे जाते हैं भले ही उनका धन अर्जन का माध्यम कोई भी हो जैसे नौकरी / व्यवसायी आदि और इस सम्बन्ध में ज्योतिष में विभिन्न मत पढ़ने को मिलते रहते हैं। प्राचीन ग्रंथों में भी सेकड़ों हजारों योग वर्णित हैं जो किन्ही जातकों में फिट बैठते हैं और किन्ही में नहीं। यह भी मानना होगा कि उन योगों को हम वर्तमान परिवेश में सही सही अर्थ न समझ पाते हों। जो भी हो हम उनको निरर्थक नहीं कह सकते। परन्तु मेरे अल्प मत से आज के समय में मांग यह है कि कोई भी विश्लेषण वैज्ञानिक एवं तर्क संगत होना चाहिए भले ही वह कोई भी सिद्धांत से फलित किया जाना हो।

प्राचीन ग्रंथों में त्रिकोण एवं केंद्र में स्तिथ ग्रहों को अधिक महत्व दिया गया है और इसके दुष्ट स्थान जैसे 4-7-8-12 या 6-8-12 आदि को अशुभ संज्ञा दी है। इन बिन्दुओं पर चर्चा विपरीत करना समीचीन नहीं होगा । भौतिक सुख सम्पदा या सम्पन्नता वर्तमान समय में पैसे यानि आर्थिक स्तिथ से नापी जाती है। पैसा / अर्थ / धन का श्रोत्र क्या है इस विषय में कोई नहीं देखता और उसका वास्तव में अब कोई मायने भी नहीं है।

गत 30 वर्षों के ज्योतिषीय अध्ययन में पहली बार मैंने इस बिंदु पर दक्षिण भारत के मूर्धन्य विद्वान स्व. कृष्ण मूर्थी द्वारा लिखित साहित्य में आय के श्रोत्र

ज्योतिषीय विश्लेषण

के सम्बन्ध में भाव 6 को अधिक महत्वपूर्ण उल्लेखित पाया है। उनका कहना है कि भाव 6 सकल प्राप्तियों का भाव है न कि 2-10- 11 और इस प्रकार उनके द्वारा द्रव्यियीय सम्पन्नता के लिए इन भाव 26-10-11 तथा इन से जुड़े ग्रहों आदि का अध्ययन / विश्लेषण आवश्यक होना उल्लेखित किया है। इसके विपरीत प्राचीन ग्रंथों एवं मतों के अनुसार इस भाव 6 को ऋण, बीमारी, झगडे, शत्रु आदि स्थान की संज्ञा दी गई है। इस लेख में इसी आधार पर एक अलग ढंग से समीकरण सूत्र द्वारा विश्लेषण विद्वान पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

धन सम्पदा एवं निवेश आदि का सूत्र

1. भाव 8 भाव 6 = भाव 11 यानी सकल लाभ भाव 12 से सभी खर्चे संचित चल धन संपदा रोकड़, जेवर, बैंक आदि जो भाव 2 में जमा हुए।

2. भाव 2 भाव 12 = भाव 4 यानी अचल सम्पदा / वाहन, भौतिक सुखों के साधनों में आदि में निवेश / खर्च आदि।

विश्लेषण - लग्न भाव जातक वनाम भाव 7 सम्पर्क / व्यवहार में आने वाले सभी जन।

अ- जन्म कुंडली से ज्योतिषीय विश्लेषण सबसे पूर्व जातक पर ही केन्द्रित होता है। अतः लग्न भाव का महत्व स्वतः ही होजाता है। यह एक साधारण एवं सामान्य तथ्य है कि कोई भी व्यक्ति स्वतः से स्वतः यानि अपने से ही कोई व्यवहार नहीं कर सकता। अर्थ शास्त्र के वाणिज्यिक सिधांत का भी नियम है कि व्यक्ति स्वयं अपने से कोई लेन देन नहीं कर सकता। किसी लेन देन का व्यवहार जभी पूर्ण होगा जब दूसरा व्यक्ति भी सामने हो। अब दूसरा व्यक्ति कुंडली में भाव 7 से देखा जाता है अर्थात जातक के जीवन में जितने भी संपर्क या एसोसिएसन में लोग आते हैं वे सब भाव 7 से ही देखे जाते हैं। यहाँ परिवार के लोग यानि पिता माता या भाई बहिन आदि आदि को सम्मिलित नहीं किया जारहा है। फिर भी यदि कोई जातक लेन देन का व्यवहार अपने इन लोगों से करेगा तब वे भी भाव 7 से जुड़ जायेंगे क्योंकि लेखा जोखा पुस्तकों में जमा एवं खर्च की प्रविष्टियाँ नियम से ही होंगी Means Debit and credit entries as per accounting principles।

आ - भाव 8 बनाम भाव 2

भाव 2 जातक के लिए धन भाव है। यह भाव वास्तव में एक तिजोड़ी यानी केश अलमारी / सेफ / बैंक लोकर आदि आदि है जिसमें नगदी के साथ साथ अन्य अचल संपदा जैसे सोना चांदी हीरे जवाहारात, जेबर, फिक्स्ड जमा आदि रखे जाते हैं। हम सभी जानते हैं कि आमदनी में से खर्चे घटने के बाद ही शुद्ध बचत होती है। यह शुद्ध बचत 2 प्रकार की होती है (1) व्यवसाय की (2) स्वयं की । हम यहाँ स्वयं यानी जातक की चर्चा कर रहे हैं। जब किसी जातक को आमदनी होती है चाहे वह व्यापार से हो या नौकरी आदि से उसकी सकल प्राप्तियाँ सदैव भाव 6 से ही तर्क संगत हैं न की 10 या 11 या 2 आदि से क्योंकि जब तक भाव 7 वाला खर्च यानी व्यय नहीं करेगा लग्न भाव यानि जातक को कोई प्रातियाँ नहीं होंगी। अतः भाव 6 से जो सकल प्राप्तियाँ होंगी और उसमें से उसके खर्चे घटने के बाद जो भी वचत होगी वह लाभ बन कर धन भाव यानि 2 में जमा हो जाएगी। विभिन्न लेख आदि पढ़ने में मिलता है की भाव 19 लाभ का भाव होता है यह तर्क संगत नहीं है। वास्तव में यह भाव मनोवांछित फल का भाव है चाहे वह आय;

धन; संतान; नौकरी; भूमि; भवन; वाहन आदि किसी भी प्राप्ति से जुड़ा हो। बिना भाव 11 के सपोर्ट के मनोवांछित फल नहीं मिल सकता। यहाँ एक विशेष तथ्य का उल्लेख करना उचित समझता हूँ यह कि कुंडली के 12 के 12 भाव इस भाव 11 पर निर्भर होते हैं जबकि यह भाव किसी पर निर्भर नहीं है। किसी भी भाव से फल की प्राप्ति बिना इसके सपोर्ट के नहीं हो सकती।

भले ही कोई भी शुभ योग पड़ा हो परन्तु यदि भाव 11 कमजोर है तब सार के सारे योग बेकार होजाते हैं। विद्व जन इस मत को अपने विश्लेषण में सम्मिलित कर इसे सत्यापित होते देख सकते हैं । इसी प्रकार भाव 8 भाव 7 वाले का धन भाव है और उसके लिए सकल प्राप्तियों का भाव 12 होगा एवं मनोवांछित फल के लिए भाव 5 का रोल हो जायेगा। उपरोक्त विस्तृत विवरण से इस धन भाव 8 को भी भाव 7 को लग्न भाव मान कर समझना उचित होगा 7 इ भाव 8 की प्रवलता अर्थात मजबूती का भाव 6-19-से समबन्ध

अब चूँकि यहाँ विश्लेषण जातक की सम्पन्नता का है अतः भाव 8 की मजबूती यानि सम्पन्नता का अधिक महत्व हो जाता है। यह मत विद्वान जनों को अटपटा सा लगेगा परन्तु यहाँ विल्कुल तर्क संगत एवं वैज्ञानिक तरीके से सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। हम सब देखते हैं कि नौकरी क्षेत्र में बड़ी बड़ी कम्पनियाँ अपने कर्मचारियों को लाखों करोणों का वेतन देने में समर्थ हैं और इसके विपरीत छोटे स्तर पर मात्र हजारों या दैनिक मजदूरों को एक व्यक्ति मात्र 400 से 500 ही दे पाता है। व्यवसाय में भी बड़े शहरों में ग्राहक संपन्न होने से व्यवसायी को करोणों में टर्नओवर होता है जबकि किसी छोटे गाँव या कस्बे में बहुत ही कम। ऐसा क्यों ? एक मत यहाँ यह भी होगा कि उनके अपने अपने भाग्य हैं। परन्तु यहाँ बात भाग्य पक्ष से नहीं जुडी है। यह तो सिर्फ एक तर्क विश्लेषण से है और इसमें यह मानने में कोई भी शंका नहीं होगी

कि बिना भाव 8 के जातक को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। यहाँ यह भी ध्यान आकर्षित करना उचित होगा कि इस भाव को गुप्त यानी गढ़ा धन का स्थान माना गया है। ऐसा क्यों ? क्या इसका सम्बन्ध पूर्व जन्मों के संचित धन से नहीं है ? यदि हमारे पास बैंक बेलन्स या कोई फिक्स्ड डिपोजिट है तो बैंक तुरंत धन दे देती है। यह स्थान पिता भाव 9 से व्यय भाव भी होगा और पिता के लिए भाव 10 जातक का कर्म स्थान के पूर्व यह धन स्थान होगा अर्थात पिता की स्तिथि से जातक की स्तिथ जोड़ी गई है। हम देखते हैं कि भावात भावम सिद्धांत से भाव 10 के लिए भाव 8 का सम्बन्ध 11 हो जाता है और इस के कारण ही जातक के कर्म क्षेत्र में भाव 8 का प्रबल होना यानि अधिक संपन्न होना आवश्यक होजाता है। भाव 8 से अकस्मात अर्थात अनुपार्जित आय / धन का भी विश्लेषण इस तथ्य को सिद्ध करता है ।

ई भाव 6 एवं 11 का भाव 8 से सम्बन्ध

बात इतने से ही पूर्ण नहीं होगी। जब तक भाव 8 में से भाव 6 की दोहन की शक्ति नहीं होगी तब तक प्राप्तियों की मात्रा अधिक नहीं हो सकती। अतः भाव 8 की मजबूती या सम्पन्नता के साथ साथ भाव 6 का ऐसा सम्बन्ध होना आवश्यक होगा जो भाव 8 से अधिक से अधिक दोहन कर सके।

इसके साथ-साथ भाव 11 का रोल अपने आप में ही महत्वपूर्ण हो जाता है। इस भाव 11 के बिना कोई वांछित फल नहीं मिल सकता। हम देखते हैं कि अनन्य जन्म कुंडलियों में अच्छे-अच्छे योग होते हैं जैसे गज केशरी आदि परन्तु जातक सदैव सपन्नता से वंचित रहता है। इसका कारण मेरे अल्प ज्ञान एवं अभी तक के अनुभव से सिर्फ भाव 11 का कमजोर होना ही तर्कसंगत प्रतीत होता है अन्य कुछ नहीं। अतः भाव 6-11 का भाव 8 से ऐसा सम्बन्ध होना आवश्यक होजाता है जो भाव 8 से अधिक से अधिक दोहन भी करे और मन माफिक भी हो।

क - भाव 8 से भाव 5 एवं भाव 12 का सम्बन्ध- भाव 12 जातक का एक तरफ व्यय भाव है तो दूसरी तरफ वह भाव 7 के लिए 6 होकर सकल प्राप्तियों का भाव बन जाता है जैसा कि उपरोक्त भाव 6 के विषय में उल्लेख किया गया है। भाव 5 इस भाव 7 के लिए भाव 11 होजाता है जो उसे मनोवांछित फल देता है जैसा की

उपरोक्त 11 के विषय में कहा गया है। यदि 6-11 के वनस्पति 5-12 की प्रवलता है अर्थात भाव 8 से इन 5-12 का सम्बन्ध अधिक होता है और 6-11 कमजोर पड़ते हैं तब जातक को अधिक आय नहीं हो पाती और उसके कारण सम्पन्नता कम होती है। इस प्रकार के योग में ऋण लेने या बने रहने का योग भी बन जाता है। जो भी हो जातक को धन की सदैव कमी बनी रहती है।

ख - भाव 2 से भाव 5-12 का सम्बन्ध- जिस प्रकार उपरोक्त में भाव 8 पर 6 11 की डोमीनंस यानी दोहन की शक्ति का विवेचन किया गया है उसी प्रकार भाव 2 पर 5-12 की क्या दोहन शक्ति है इसका विचार करना पड़ेगा और उस आधार पर जातक की आमदनी की अधिकता ज्ञात कर भाव 12 से निवेश आदि को देख कर उसकी सकल सम्पन्नता का विश्लेषण करना होगा।

ग. भावेश भावस्थ ग्रहों का विवेचन - यदि भाव 8 में स्थिर राशी है और कोई शनि जैसा कंजूस ग्रह बैठा है या वह भाव 7 में है। या इनके भावेश भी अपने स्थान पर यानि 8 या 7 में हैं और भाव 6 का स्वामी भी भाव 12 में है तो जातक दूसरों से अधिक धन या आय प्राप्त नहीं कर पायेगा । यदि भाव 12 का स्वामी भी भाव 8 में या 7 में या 5 में है तो भी भाव 7 अपने हित को अधिक ध्यान में देगा और जातक को कम से कम मिल पायेगा। यदि 2-6-10-11 के स्वामी भी 7-8-12 में हों या उनसे स्ट्रॉग रिलेसन बना रहे हो तो भी जातक को अधिक नहीं मिलेगा। भाव 5 को त्रिकोण भाव कहा गया है। निश्चित यह भाव ज्ञान कला विद्या बुद्धि कौशल आदि के लिए शुभ है परन्तु भाव 7 से 11 होने से भौतिक सम्पनता के लिए कभी भी और किसी भी तरह शुभ तर्क संगत नहीं बैठता।

हम सभी देखते हैं बौद्धिक स्तर के जातक धन सम्पन्नता में बहुत कमजोर होते हैं। उपरोक्त के विपरीत यदि धनेश लाभेश एवं भाव 6 के स्वामी अपने अपने भाव में हो या 8 से ऐसा योग बनाते हो जो धन दोहन में प्रवल हो तो जातक को धन / आय अधिक मिलेगी। यदि भाव 2 का स्वामी 8 में हो और 6 का स्वामी 6 या 11 या 10 में हो और साथ ही 5-12 से कोई सम्बन्ध न करे तो जातक को अधिक से अधिक आय होगी।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर जातक की भौतिक सम्पन्नता का विश्लेषण किया जासकता है। यह सब पाराशरीय / वैदक / पारंपरिक सिद्धांतों का ध्यान रखते हुए किया जा सकता है।

1. नक्षत्र ज्योतिष अर्थात सब या सब सब लार्ड सिद्धांत (स्व. कृष्ण मूर्खी जी / श्री एस.पी. खुल्लर जी आदि का कस्पल इन्टर लिंक सिद्धांत द्वारा विवेचन -

नक्षत्र ज्योतिष सिद्धांत में यह मान्य किया गया है कि कोई यह अपने नक्षत्र स्वामी का फल सबसे पहिले देता है और उसके फल को उसका सबलार्ड क्वालिफाय एवं स्पेसिफाय करता है। अर्थात नक्षत्र स्वामी के नेचर द्वारा जो फल का शुभ या अशुभ होना सब लार्ड की पोजीसन पर निर्भर करेगा कि नक्षत्र स्वामी से वह किस भाव में है। जैसे शनि ग्रह का नक्षत्र स्वामी शुक्र हो और वह भाव 6-11 में बैठा हो तथा उसका सब लार्ड राहू हो जो भाव 5 में बैठा हो तो भाव 16 के जो आय सम्बन्धी अछे फल होंगे उनको सब लार्ड राहू स्थान 5 में होने से कम कर देगा या अशुभ होजायेगा क्योंकि भाव 6 से भाव 5 भाव 12 होजाता है।

श्री एस.पी. खुल्लर जी का कस्पल इन्टर लिंक सिद्धांत कमोवेश स्व. कृष्ण मूर्थी के नक्षत्र सिद्धांत का ही विकसित रूप है परन्तु इस सिद्धांत में अधिक जोर इस बात पर दिया गया है कि किसी फल की उसके सम्बंधित भाव से प्रोमिज क्या है। जब तक प्रोमिज नहीं है तब तक कोई भी यह उस फल को नहीं देसकता है। जैसे भाव 6 से आय की प्रोमिज या नौकरी की प्रोमिज देखनी हैं। तब कस्प 6 के सब लार्ड (सब सब लार्ड यदि जन्म चार्ट अति शुद्ध जन्म समय पर निर्मित किया गया है) को देखना होगा कि वह स्वयं (यदि उसे पोजिसनल स्टेटस है तो) या नक्षत्र स्वामी द्वारा वह भाव / कस्य 2-6-10-11 में से सभी में या 1 या 1 से अधिक में संलिप्त है या नहीं और साथ साथ उसका सब लार्ड किन कस्प या भाव में हैं। यदि इस प्रकार अच्छी आय या नौकरी आदि की प्रोमिज बनती है तभी दशा कालिक ग्रह जो इन फलों को देने में फलदायी हों वे अपने उचित गोचर काल में वह फल देने में समर्थ होंगे। श्री एस. पी. खुल्लर सिद्धांत में यह स्पस्ट किया गया है कि सम्बंधित भाव / कस्प की प्रोमिज के साथ-साथ ही नहीं बल्कि इससे सर्वोपरि लग्न कस्प एवं कस्प 11 सब लार्ड द्वारा भी प्रोमिज होना अनिवार्य है तभी कोई फल मिल सकेगा अन्यथा नहीं ।

उपरोक्त में आर्थिक सम्पन्नता के विश्लेषण का विषय चुना है। अतः इसी विषय को कम्पल इन्टर लिंक सिद्धांत द्वारा विवेचित करते हैं।

(अ) लग्न भाव / कस्प की प्रोमिज

हम सभी जानते हैं कि लग्न भाव ही सभी भावों का स्वामी है और सभी भावों पर शाशन ही नहीं वल्कि सीमित भी करता है। यदि लग्न द्वारा किसी क्षेत्र के सम्बन्ध में प्रोमिज नहीं है तब यह सुनिश्चित है कि जातक को वह फल नही मिलेगा । यहाँ तक कि जातक उस विषय में अपनी रूचि ही न ले। हम यहाँ सिर्फ 2 6 10-11 से आर्थिक सम्पन्नता की ही प्रोमिज देखेगे।

उदाहरण के लिए एक जातक की कुंडली यहाँ नीचे संलग्न की है। इसमें राशी कुंडली . भाव कुंडली ग्रह तालिकाः कस्पल टेबले जिसमें नक्षत्र सब लार्ड सब सब लार्ड आदि का उल्लेख है। कुंडली टू एस्ट्रोलोजी सोफ्टवेअर द्वारा श्री खुल्लर अयनांश (प्रतिघंटे) लेते हुए निर्मित है। इस जातक का जन्म समय अतिशुद्ध कर प्राण स्वामी स्तर तक लग्न का निर्माण किया गया है। परन्तु प्रिय पाठकों एवं विद्वजनों के हेतु विश्लेषण सिर्फ सब लार्ड स्तर से ही किया गया है।

कस्पल इन्टर लिंक सिद्धांत में कस्प के सब लार्ड या सब सब लार्ड के साथ - साथ भाव में स्तिथ ग्रह को भी वास्तविक

PLANETARY POSITIONS

Planet	Sign	D-M-S	R L	STL	SL	SSL	SukL	PraL	Hse	D	PS
Sun	Lib	14-48-21	Ve	Ra	Ke	Ra	Sa	Me	11		
Moon	Ari	27-50-46	Ma	Su	Mo	Sa	Me	Ma	6		
Mars	Lib	09-04-53	Ve	Ra	Ju	Sa	Mo	Me	11		P
Mercury	Lib	01-55-27	Ve	Ma	Ke	Ke	Sa	Ve	11	R	
Jupiter	Aqu	14-29-54	Sa	Ra	Ke	Ve	Ve	Ra	3	R	
Venus	Lib	13-25-59	Ve	Ra	Me	Mo	Sa	Ju	11		P
Saturn	Gem	25-24-35	Me	Ju	Me	Ju	Mo	Ra	8	R	P
T.Rahu	Sco	16-58-14	Ma	Me	Me	Ke	Mo	Me	1		
T.Ketu	Tau	16-58-14	Ve	Mo	Sa	Mo	Sa	Su	7		P

RASHI CHART

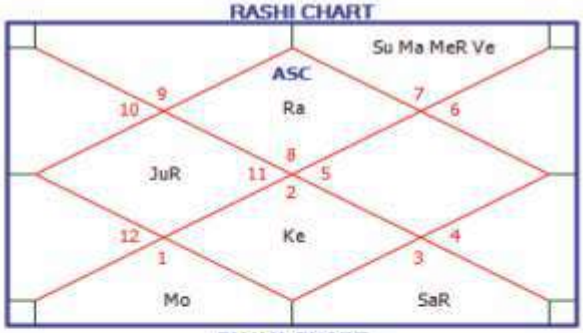

CUSPAL POSITIONS - Placidus

Cusp	Sign	D-M-S	R L	STL	SL	SSL	SukL	PraL	%SArc	%PArc
Cusp I	Sco	09-32-09	Ma	Sa	Ve	Ju	Ra	Ma	99.57	51.17
Cusp II	Sag	09-44-26	Ju	Ke	Sa	Me	Ve	Mo	24.41	57.71
Cusp III	Cap	12-36-44	Sa	Mo	Ra	Sa	Ve	Me	49.46	12.47
Cusp IV	Aqu	16-38-58	Sa	Ra	Ve	Sa	Sa	Sa	00.36	14.21
Cusp V	Pis	18-21-45	Ju	Me	Me	Sa	Ke	Me	35.45	53.32
Cusp VI	Ari	15-42-14	Ma	Ve	Su	Ra	Ju	Me	20.64	92.93
Cusp VII	Tau	09-32-09	Ve	Su	Ve	Sa	Ju	Ve	94.38	51.97
Cusp VIII	Gem	09-44-26	Me	Ra	Ju	Ve	Sa	Me	67.45	34.79
Cusp IX	Can	12-36-44	Mo	Sa	Ma	Ke	Ke	Sa	04.40	34.42
Cusp X	Leo	16-38-58	Su	Ve	Mo	Ju	Su	Me	69.60	84.16
Cusp XI	Vir	18-21-45	Me	Mo	Me	Ve	Sa	Sa	65.73	62.52
Cusp XII	Lib	15-42-14	Ve	Ra	Ve	Mo	Mo	Mo	00.15	21.29

BHAVA CHART

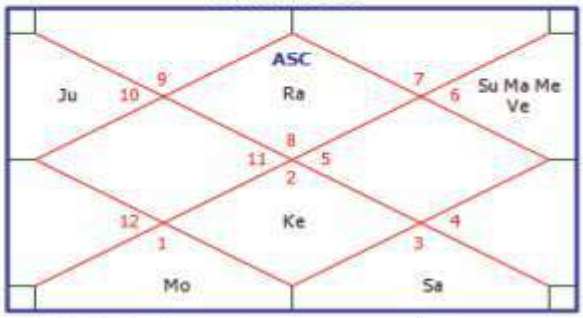

Time Slice Tool: 01 | 11 | 1974 | 8 | 24 | 0 | 549

RULING PLANETS
At 12:10:55.358Hrs on
01-03-2016

Show 16 Vargas & Planet Strength

कस्प का सब लार्ड या सब सब लार्ड माना जाता है।

लग्न का सब लार्ड शुक्र एवं भाव स्तिथ ग्रह राहू द्वारा प्रोमिज

लग्न के सबलार्ड को पोजिसनल स्टेटस मिला है अर्थात शुक्र द्वारा शाशित किसी भी नक्षत्र में कोई अन्य ग्रह न होने से शुक्र को यह स्टेटस मिल गया है। अतः यह शुक्र स्वयं भी फल देने में समर्थ होगा और अपने नक्षत्र स्वामी राहू द्वारा भी । अब नीचे एक जन्म चार्ट तथा टेबले पेस्ट की गई है उसे देखें। शुक्र स्वय 1-46-7-8-10-11-12 एवं राहू द्वारा 3-4-6-8-12 कस्प्स में एपिअर होकर इन्वोल्व यानी संलिप्त होता है। इस सिद्धांत में राहू एवं केतु के विषय में कुछ और अलग उल्लेख किया गया है जो आज तक किसी अन्य साहित्य में देखने को नहीं मिलता है। वह यह कि ये छाया ग्रह अपने राशी एवं नक्षत्र स्वामी के भी फल देते हैं। जैसे राहू इस चार्ट में मंगल की राशी एवं बुध के नक्षत्र में है अतः इन 2 ग्रहों का भी राहू फल देगा जो वास्तव में शुक्र के होंगे। अब हम मंगल एवं बुध के सामने टेबले में देखेंगे। मंगल को भी पोजिसनल स्टेटस मिला है और वह भी राहू के नक्षत्र में है। अतः मंगल स्वयं एवं राहू नक्षत्र स्वामी द्वारा 1 6 9 11 तथा 3-4-6-8-12 भाव / कस्प्स में इन्वोल्व है । बुध के सामने देखें । यह सिर्फ नक्षत्र स्वामी के फल देगा क्योंकि इसको पोजिसनल स्टेटस नहीं मिला है। इसका नक्षत्र स्वामी मंगल है जो 1-6-9-11 में इन्वोल्व है।

अब कुल मिला कर लग्न द्वारा भाव / कस्प्स -1-3-4-67 8 9 10 11 12 जातक को इन सभी क्षेत्रों में रूचि लेने या इनके विषय में चिंतन फल प्राप्ति के लिए प्रारब्ध से ही खुली सीमा है। उपरोक्त में उल्लेख है की सम्पन्नता के लिए 2-6-10-11 भावों का अधिक से अधिक मजबूत होना है अर्थात इनकी प्रवल प्रोमिज होनी आवश्यक है। यहाँ 6-10-11 भावों में इंवोल्वमेंट है। अब देखना होगा कि इन इंवोल्वमेंट की कमिटमेंट कैसी है। यह सब लार्ड एवं सब सब लार्ड -सुनिश्चित करता है। टेबले में शुक्र के सामने सब लार्ड बुध है और सब सब लार्ड चन्द्र है। बुध 2-11 और चन्द्र 10-11 कस्प्स में उपस्थित हैं। अतः शुक्र द्वारा धन आय आदि से सम्बंधित फल अति शुभ एवं अधिक होंगे। अब यह ध्यान भी रखना होगा कि कोई जातक सदैव शुभ ही शुभ फल तो नहीं ले सकता । उसे कुछ तो अशुभ या संघर्ष करना ही होगा। दूसरों को भी देना होगा। अब देखें बुध कस्प 5-8 में भी उपस्थित है। यह दर्शाता है कि जातक को अन्य को भी देना होगा वह चाहे कर्ज हो या क्रय आदि के लिए खर्च धन। अर्थात 5-8 भाव भाव 7 के लिए मुफीद होते हैं। इसी प्रकार हम मंगल एवं बुध के सामने यदि देखें तो इनके द्वारा भी आय एवं धन की स्तिथ बहुत ही स्ट्रॉंग है। यह सब लग्न द्वारा प्रोमिज दर्शाती है। यही तथ्य यह भी सावित करता देता है कि जातक की लग्न भाव वालवान है यानी लग्न द्वारा उसे इन क्षेत्रों में फल प्राप्त करने की पूर्व जन्म से ही इच्छा भी बनेगी और प्रायस होंगे।

भाव 6 से प्रोमिज - कस्प 6 का सब लार्ड सूर्य है और भाव में चन्द्र बैठा है। अतः कस्प 6 द्वारा प्रोमिज इन ग्रहों से देखते हैं। सूर्य एवं चन्द्र दोनों को ही पोजिसनल स्टेटस नहीं मिला है। ये अपने नक्षत्र स्वामी क्रमशः राहू एवं सूर्य द्वारा 6 एवं 6-10 में इन्वोल्व हैं और इनके सब

लार्ड केतु एवं चन्द्र 2 एवं 10 में एपिअर होने से अच्छी कमिटमेंट यानी आय के शुभ एवं अधिक होने की प्रोमिज करते हैं।

भाव 10 से प्रोमिज- कस्प 10 का सब लार्ड चन्द्र है और इस भाव में कोई ग्रह नहीं बैठा है । चन्द्र अपने नक्षत्र स्वामी सूर्य द्वारा 6-7-10 में संलिप्त होने से जातक के व्यवसायी होने एवं इसके सब लार्ड चन्द्र के 10-11 में उपस्थित होने से एक सफल एवं धनवान होने की प्रोमिज दर्शाता है। इन भावों से रिलेसन यह भी सिद्ध करता है कि जातक को अधिक मात्रा में धन मिलेगा और वह संपन्न होगा।

भाव / कस्प्स 11 द्वारा प्रोमिज- भाव कुंडली में भाव 11 में सूर्य मंगल बुध - शुक्र बैठे हैं। इस सिद्धांत में राशी कुडंली के नहीं लिया जाता अपितु भाव कुंडली से विचार किया जाता है वह भी पलासिड्स मेथड से यदि टेबल को ध्यान से देखे तो ये सभी ग्रह अपने नक्षत्र एवं सब लार्ड तथा सब सब लार्ड द्वारा 2-6-10-11 से बहुत ही अच्छे लिंक बनारहे हैं जो अधिक आय एवं सम्पन्नता की प्रोमिज करते हैं।

कस्प्स 2-6-10-11 के साथ साथ 5-8-12 आदि के लिंक भी आवश्यक है क्योंकि व्यापार में लैन दैन एवं नफा नुक्सान भी होना स्वाभाविक होता है। निवेश तो एक आवश्यक अंग है।

भाव 2 के सबलार्ड द्वारा धनसंचय का विश्लेषण- इस भाव से जातक की शुद्ध धन संचय की गणना देखना उचित होगा। कस्प चार्ट में देखने से इस कस्प 2 का सब लार्ड शान बनता है । भाव 2 में कोई ग्रह नहीं है अतः शनि द्वारा ही निर्णय किया जाना होगा। इस शनि को भी पोजिसनल स्टेटस मिला है और यह जुपिटर के नक्षत्र में बुध के सब में तथा जुपिटर के सब सब क्षेत्र में है। यह स्वयं 1-2-3-4-5-7-8-9 मै तथा जुपिटर द्वारा 1-2-5-8-10 अर्थात 1-2-3-4-5-7-8-9-10 में इन्योल्य यानी संलिप्त है। हम यह धन संचय को ही लेते हैं यह 2 में संलिप्त

Rahu Represents Ma and Me.
Ketu Represents Ve and Mo.

Planet	Sign Lord of	Star Lord of Cusp	Subford of Cusp	SubSubford of Cusp	Resident of Cusp	Cusps Linked by means of Planet's			Positional Status
						Star Lord	Sub Lord	Sub-Sub Lord	
Sun	10	7	6		11	(Ra) - 3468 12	(Ke) - 279	(Ra) - 3468 12	XX
Moon	9	3 11	10	12	6	(Su) - 6710	(Mo) - 3910 1112	(Sa) - 12345 789	XX
Mars	1 6		9		11	(Ra) - 3468 12	(Ju) - 1258 10	(Sa) - 12345 789	16911
Mercury	8 11	5	5 11	2	11	(Ma) - 16911	(Ke) - 279	(Ke) - 279	XX
Jupiter	2 5		8	1 10	3	(Ra) - 3468 12	(Ke) - 279	(Ve) - 14678 1011 12	XX
Venus	7 12	6 10	1 4 7 12	8 11	11	(Ra) - 3468 12	(Me) - 25811	(Mo) - 3910 1112	14678101112
Saturn	3 4	1 9	2	3 4 5 7	8	(Ju) - 1258 10	(Me) - 25811	(Ju) - 1258 10	12345789
Rahu		4 8 12	3	6	1	(Me) - 25811	(Me) - 25811	(Ke) - 279	XX
Ketu		2		9	7	(Mo) - 3910 1112	(Sa) - 12345 789	(Mo) - 3910 1112	279

है और इसका सब लार्ड बुध भी 2-11 से कमिटमेंट करता है जिसक अंतिम परिणाम जुपिटर सब सब लार्ड द्वारा 1-2-5-8-10 यानी 2-10 में होने से धन संचय की स्तिथ सुदृढ़ होने के संकेत मिलते हैं जो वास्तव में सही है। शनि का कस्प / भाव 8 में इन्यौल्य होना एवं बुध तथा जुपिटर का कस्प 5-8-10 से सम्बन्ध होना यह दर्शाता है की जातक दूसरों को भी धन देगा जो व्यवसाय में आवश्यक होते हैं।

भाव 4 से अचल / वाहन आदि सम्पति में निवेश- उपरोक्त में लग्न के सब लार्ड शुक्र द्वारा यह प्रारब्ध से ही नियत है कि जातक भूमि भवन वाहन आदि सम्पतियों में निवेश करने की इच्छा रखेगा। क्योंकि शुक्र कम्प्स 4-6-11-12 आदि में लिस भी है और उसकी कमिटमेंट सब लार्ड तथा सब सब लार्ड द्वारा है। अब हमें देखना होगा कस्प 4 का सब लार्ड क्या प्रोमिज कर रहा है। इन सम्पतियों में निवेश के लिए यह नियम निर्धारित किया है कि कस्प 4 का सबै लार्ड स्वयं पोजिसनल स्टेटस में या नक्षत्र स्वामी द्वारा 4 में इन्वोल्व हो और सब लार्ड द्वार 19 को कमिट करे अथवा 10 इन्वोल्व हो और 4 या 11 को कामिट करे तो निवेश यानी क्रय की प्रोमिज होती है। शनि स्वयं पोजिसनल स्टेटस में 4 को में इन्वोल्व है तथा 10 में भी और 19 को सब लार्ड बुध कमिट करा रहा है। अतः संचित धन में से जातक इन सम्पतियों में निवेश अवश्य करेगा जो सही है। इस जातक के पास काई अचल संपतियां एवं वाहन भी हैं ।

नोट - यदि उपरोक्त कुंडली में सिर्फ राशि चक्र के आधार पर ही विश्लेषण करें तो स्तिथि कुछ अलग ही नजर आएगी। जैसे 6-7-8-10 के स्वामी यह सभी भाव 12 में स्तिथ हैं जो भाव 7 वाले की पोजीसन को अधिक और जातक को धन हीन या कम सपन्न होने के संकेत देते हैं। जबक वास्तविक स्तिथि अलग है। जातक अति उत्तम संपन्न एवं धन वान एवं सफल व्यवसायी है। जातक की वास्तविक सम्पन्नता का कसप्ल इन्टर लिंक सिद्धांत द्वारा अति सूक्ष्म एवं सटीक विश्लेषण उपरोक्त में स्वतः ही सिद्ध होजाता है।

- श्री पीताम्बरा ज्योतिष अनुसन्धान केंद्र. ए-2 गोविन्दपुरी ग्वालियर (म.प्र.)

ग्रहों के संख्यात्मक प्रतिरुपण के आधार पर फलादेश

ज्योतिर्विद हृदयानन्द राव, भोपाल

अष्टकवर्ग क्या है? इस बारे में यह स्पष्ट कर दें कि प्रत्येक ग्रह अपना प्रभाव किसी निश्चित स्थान से दूसरे स्थान पर डालता है। इन प्रभावों को अष्टकवर्ग में महत्व देकर फलित करने की एक सरल विधि प्राचीन वैदिक ज्योतिष मे तैयार की गयी है। अष्टकवर्ग में राहु-केतु को छोड़कर शेष सात ग्रह (सूर्य से शनि) और लग्न सहित आठ को महत्व दिया गया है। इसलिए इस पद्धति का नाम अष्टकवर्ग है।

अष्टकवर्ग में रेखा और बिंदु से क्या अभिप्राय है? - अष्टकवर्ग में ग्रह अपना जो शुभ या अशुभ प्रभाव भाव में छोड़ते हैं उसे ही रेखा और बिन्दु से जाना जाता है। रेखा शुभ प्रभाव को दर्शाती हैं और बिन्दु अशुभ प्रभाव को। लेकिन कहीं कहीं पर बिन्दु को शुभ और रेखा को अशुभ माना जाता है।

अष्टकवर्ग में रेखा और बिंदु से क्या अभिप्राय है? - अष्टकवर्ग में ग्रह अपना जो शुभ या अशुभ प्रभाव भाव में छोड़ते हैं उसे ही रेखा और बिन्दु से जाना जाता है। रेखा शुभ प्रभाव को दर्शाती हैं और बिन्दु अशुभ प्रभाव को। लेकिन कहीं कहीं पर बिन्दु को शुभ और रेखा को अशुभ माना जाता है।

कितने अंक (बिन्दु या रेखा) शुभ फल देने में सक्षम हैं? यदि ग्रह को चार अंकों से कम अंक भाव में प्राप्त हैं तो ग्रह अपना शुभ प्रभाव नहीं दे पाता। पांच से आठ अंक प्राप्त ग्रह क्रमशः शुभ प्रभाव देने में सक्षम होते हैं।

सर्वाष्टक वर्ग और भिन्नाष्टक वर्ग में क्या अंतर है?- सभी नौ ग्रहों के शुभ प्राप्त अंकों को जोड़ कर जो वर्ग बनता है उसे सर्वाष्टक वर्ग कहते हैं और भिन्न-भिन्न ग्रह को जो शुभ अंक प्राप्त हैं उन्हें भिन्नाष्टक वर्ग कहते हैं।

अष्टकवर्ग में किसी भाव में ग्रहों को जो कुल अंक प्राप्त होते हैं उनका अधिक महत्व है या किसी ग्रह को प्राप्त अंकों का अधिक महत्व है?

महत्व दोनों का ही है। जब हम किसी भाव के कुल अंकों की बात करते हैं तो उनसे यह मालूम होता है कि उस भाव में सभी ग्रह मिलकर उस भाव का कैसा फल देंगे और जब किसी भाव में किसी विशेष ग्रह के फल को जानना चाहते हैं तो उस ग्रह को प्राप्त अंकों से जानते हैं। यदि किसी भाव में कुल 30 या अधिक अंक प्राप्त हैं तो यह समझना चाहिए कि उस भाव से संबंधित विशेष फल जातक को प्राप्त होंगे और उसी भाव में यदि किसी ग्रह को 5 या उससे अधिक अंक प्राप्त हैं तो यह जानना चाहिए कि उस ग्रह की दशा में उस भाव से संबंधित विशेष फल प्राप्त होंगे। कुल अंक निश्चित करते हैं उस भाव से संबंधित उपलब्धियां और ग्रह के अपने अंक निश्चित करते हैं कि कौन सा ग्रह कितना फल देगा, अर्थात अपनी दशा-अंतर्दशा और गोचर अनुसार फल कैसा देगा।

सभी भावों में अंकों को जोड़ने से जो अंक प्राप्त होते हैं, वे कहीं 337 और कहीं 386 होते हैं, ऐसा क्यों?

कुछ विद्वान सात ग्रहों और लग्न के अंकों को जोड़ कर कुल अंकों की गणना करते हैं और कुछ सिर्फ सात ग्रहों को ही लेते हैं। इस प्रकार लग्न और सात ग्रहों को लेते हैं तो अंकों की संख्या 386 आती है, अगर लग्न को छोड़ देते हैं तब संख्या 337 आती है।

अष्टक वर्ग में ग्रहों को प्राप्त होने वाले अंक - सूर्य- 48, चन्द्रमा-49, मंगल-39, बुध-54, वृहस्पति-56, शुक्र-52, शनि-39

ग्रहों द्वारा अन्य ग्रहों को दिये जाने वाले अंक- सूर्य -43, चन्द्रमा -36, मंगल - 49, बुध - 46, बृहस्पति - 36, शुक्र - 40, शनि - 42, लग्न - 45

ग्रह अंक कहां देते हैं - दाता ग्रह, द्वारा ग्रहिता ग्रह को, उस ग्रह के भाव विशेष में स्थिति के अनुरूप शुभ अंक **(Dots of Destiny)** देता हैं ।

कक्ष्या - प्रत्येक राशि में समान रूप से इन्ही अंशो पर ये कक्ष्यायें रहेगी।

शनि-00°00%-03°45%
बृहस्पति -03°46%-07°30%
मंगल -07°31%-11°15%
सूर्य- 11°16%-15°00%
शुक्र -15°01%-18°45%
बुध -18°46%-22°30%
चंद्रमा -22°31%-26°15%
लग्न -26°16%-30°00%

यहां पर इस जातिका के षष्टम में चन्द्रमा जहां स्थित है 7 शुभ अंक मिले हैं, इसकी विशेषता है कि जिस दुकान पर यह कोई समान खरीदती है, उसकी उस दिन बिक्री अप्रत्याशित रूप से बढ़ जाती है। यदि कोई व्यक्ति सुबह सुबह इस जातिका मुंह देख लें उसका दिन बन जाता है। इस जातिका के बारे मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

नवग्रहों के उच्च - नीच राशि में फलित एवं उपाय

आचार्य जगदीश प्रसाद

दृढ संकल्प प्रत्येक मनुष्य को कर्मनिष्ठ बनाकर सफलता प्राप्ति में सहयोग प्रदान करता है लेकिन फिर भी कभी कभी हमे उतनी सफलता नही मिल पाती जिसके हम हकदार है इसका प्रमुख कारण कुंडली मे बन रहे कुछ विशिष्ट दोष भी हो सकते है। भारतीय संस्कृति में वेद और उनके एक अंग ज्योतिष का बहुत महत्त्व है।

आइये जाने की कोनसा ग्रह किस राशी पर उच्च का होकर शुभ फल देता हें और किस राशी में नीच का होकर अशुभ परिणाम/फल देता है।

1. सूर्य ग्रह मेष राशी में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और तुला राशी में नीच का होकर अशुभ फल देता है।
2. चन्द्रमा ग्रह वृषभ राशी में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और वृश्चिक में नीच का होकर अशुभ फल देता है।
3. मंगल ग्रह मकर में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और कर्क में नीच का फल होकर अशुभ फल देता है।
4. बुध ग्रह कन्या में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और मीन में नीच का होकर अशुभ फल देता है।
5. गुरु ग्रह कर्क में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और मकर में नीच का होकर अशुभ फल देता है।
6. शुक्र ग्रह मीन में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और कन्या में नीच का होकर अशुभ फल देता है।
7. शनि ग्रह तुला में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और मेष में नीच का होकर अशुभ फल देता है।
8. राहू ग्रह मिथुन में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और धनु में नीच का होकर अशुभ फल देता है।
9. केतु ग्रह धनु में उच्च का होकर शुभ फल देता हें और मिथुन में नीच का होकर अशुभ फल देता है। ध्यान रखें सिंह एवं कुंभ राशी में कोई भी ग्रह उच्च या नीच का नहीं होता है। मनुष्य के शरीर में ग्रहों का अपना एक मुख्य स्थान है।

जैसे सूर्य को शरीर कहा गया है। चन्द्रमा को मन कहा गया है। मंगल को सत्व , बुध को वाणी-विवेक, गुरु को ज्ञान और सुख ,शुक्र को काम और वीर्य, शनि को दुःख,कष्ट और परिवर्तन तथा राहू और केतु को रोग एवं चिंता का करक/अधिष्ठाता माना जाता है। ज्योतिष सिद्धांत के अनुसार संक्षिप्त में जाने ग्रहदोष से उत्पन्न रोग और उसके निवारण तथा किस ग्रह के क्या नकारात्मक प्रभाव है और साथ ही उक्त ग्रहदोष से मुक्ति हेतु अचूक उपाय।

सूर्य ग्रह सूर्य पिता, आत्मा समाज में मान, सम्मान, यश, कीर्ति, प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा का करक होता है। इसकी राशि है सिंह कुंडली में सूर्य के अशुभ होने पर पेट, आँख, हृदय का रोग हो सकता है साथ ही सरकारी कार्य में बाधा उत्पन्न होती है। इसके लक्षण यह है कि मुँह में बार-बार बलगम इकट्ठा हो जाता है, सामाजिक हानि, अपयश, मन का दुखी या असंतुष्ट होना, पिता से विवाद या वैचारिक मतभेद सूर्य के पीड़ित होने के सूचक है।

उपाय ऐसे में भगवान राम की आराधना करे, आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करे, सूर्य को आर्घ्य दे, गायत्री मंत्र का जाप करे,ताँबा, गेहूँ एवं गुड का दान करें, प्रत्येक कार्य का प्रारंभ मीठा खाकर करें। ताबें के एक टुकड़े को काटकर उसके दो भाग कर, एक को पानी में बहा दें तथा दूसरा जीवन भर अपने साथ रखें। ॐ रं रवये नमः या ॐ घृणी सूर्याय नमः 108 बार (1 माला) जाप करे।

चंद्रमा ग्रह- चन्द्रमा माँ का सूचक है और मनं का कारक है, शास्त्र कहता है की चंद्रमा मनसो जातः। इसकी राशि कर्क है। कुंडली में चंद्रमा अशुभ होने पर माता को किसी भी प्रकार का कष्ट या स्वास्थ्य को खतरा होता है, दूध देने वाले पशु की मृत्यु हो जाती है। स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है, घर में पानी की कमी आ जाती है या नलकूप, कुएँ आदि सूख जाते हैं मानसिक तनाव,मन में घबराहट,तरह तरह की शंका मनं में आती है, मन में अनिश्चित भय व शंका रहती है,सर्दी बनी रहती है। व्यक्ति के मन में आत्महत्या करने तक के विचार बार-बार आते हैं।

उपाय सोमवार का व्रत करना, माता की सेवा करना, शिव की आराधना करना, मोती धारण करना, दो मोती या दो चाँदी का टुकड़ा लेकर एक टुकड़ा पानी में बहा दें तथा दूसरे को अपने पास रखें। कुंडली के छठवें भाव में चंद्र हो तो दूध या पानी का दान करना मना है। यदि चंद्र बारहवाँ हो तो धर्मात्मा या साधु को भोजन न कराएँ और ना ही दूध पिलाएँ। सोमवार को सफ़ेद वस्तु जैसे दही,चीनी, चावल, सफ़ेद वस्त्र, 1 जोड़ा जनेऊ, दक्षिणा के साथ दान करना और ॐ सोम सोमाय नमः का 108 बार नित्य जाप करना श्रेयस्कर होता है।

मंगल ग्रह मंगल सेनापति है,भाई का भी कारक और रक्त के लाल कण का भी कारक माना गया है। इसकी राशि मेष और वृश्चिक है। कुंडली में मंगल के अशुभ होने पर भाई, रिश्तेदारों से विवाद, रक्त सम्बन्धी समस्या, नेत्र रोग, उच्च रक्तचाप, क्रोधित होना, उत्तेजित होना, वात रोग और गठिया हो जाता है। रक्त की कमी या विकृति वाले रोग होते हैं। व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का हो जाता है। मान्यता यह भी है कि बच्चे पैदा तो होते हैं परन्तु जीवित नही रहते।

उपाय ताँबा, गेहूँ एवं गुड,लाल कपडा,माचिस का दान करें। तंदूर की मीठी रोटी दान करें। बहते पानी में रेवड़ी व बताशा बहाएँ, मसूर की दाल दान में दें। हनुमद् आराधना करना,हनुमान जी को चोला अर्पित करना,हनुमान मंदिर में ध्वजा दान करना, बंदरो को चने खिलाना, हनुमान चालीसा,बजरंग बाण, हनुमानाष्टक, सुंदरकांड का पाठ और ॐ अं अंगारकाय नमः का 108 बार नित्य जाप करना श्रेयस्कर होता है।

बुधग्रह- बुध व्यापार व स्वास्थ्य का करक माना गया है यह मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है बुध वाक् कला का भी द्योतक है विद्या और बुद्धि का सूचक है कुंडली में बुध की अशुभता पर दाँत कमजोर हो जाते हैं। सूँघने की शक्ति कम हो जाती है। गुप्त रोग हो सकता है। व्यक्ति वाक् क्षमता भी जाती रहती है। नौकरी और व्यवसाय में धोखा और नुकसान हो सकता है।

उपाय भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करे, गौ सेवा करे, काले कुत्ते को इमरती देना लाभकारी होता है, नाक छिदवाएँ। ताबें के प्लेट में छेद करके बहते पानी में बहाएँ। अपने भोजन में से एक हिस्सा गाय को, एक हिस्सा कुत्तों को और एक हिस्सा कौवे को दें, या अपने हाथ से गाय को हरा चारा, हरा साग खिलाये। उड़दकी दाल का सेवन करे व दान करे, बालिकाओं को भोजन कराएँ। किन्नरो को हरी साडी, सुहाग सामग्री दान देना भी बहुत चमत्कारी है, ॐ बुं बुधाय नमः का 108 बार नित्य जाप करना श्रेयस्कर होता है आथवा गणेशअथर्वशीर्ष का पाठ करे, पन्ना धारण करे या हरे वस्त्र धारण करे यदि संभव न हो तो हरा रुमाल साथ रखें।

गुरु ग्रह - वृहस्पति की भी दो राशि है धनु और मीन कुंडली में गुरु के अशुभ प्रभाव में आने पर सिर के बाल झड़ने लगते हैं। परिवार में बिना बात तनाव, कलह - क्लेश का माहोल होता है। सोना खो जाता या चोरी हो जाता है। आर्थिक नुक्सान या धन का अचानक व्यय,खर्च सम्हलता नहीं, शिक्षा में बाधा आती है। अपयश झेलना पड़ता है। वाणी पर सयम नहीं रहता।

उपाय - ब्राह्मण का यथोचित सम्मान करे। माथे या नाभी पर केसर का तिलक लगाएँ। कलाई में पीला रेशमी धागा बांधे, संभव हो तो पुखराज धारण करे अन्यथा पीले वस्त्र या हल्दी की कड़ी गाँठ साथ रखे, कोई भी अच्छा कार्य करने के पूर्व अपना नाक साफ करें। दान में हल्दी, दाल, पीतल का पत्र, कोई धार्मिक पुस्तक, 1 जोड़ा जनेऊ, पीले वस्त्र, केला, केसर,पीले मिष्ठान,दक्षिणा आदि देवें। विष्णु आराधना करे, ॐ व्री वृहस्पतये नमः का 108 बार नित्य जाप करना श्रेयस्कर होता है।

शुक्र ग्रह शुक्र भी दो राशियां है, वृषभ और तुला, शुक्र तरुण है, किशोरावस्था का सूचक है, मौज मस्ती,घूमना फिरना,दोस्त मित्र इसके प्रमुख लक्षण है कुंडली में शुक्र के अशुभ प्रभाव में होने पर मन में चंचलता रहती है, एकाग्रता नहीं हो पाती खान पान में अरुचि, भोग विलास में रूचि और धन का नाश होता है अँगूठे का रोग हो जाता है। अँगूठे में दर्द बना रहता है। चलते समय अगूँठे को चोट पहुँच सकती है। चर्म रोग हो जाता है। स्वप्न दोष की भी शिकायत रहती है।

उपाय माँ लक्ष्मी की सेवा आराधना करे श्री सूक्त का पाठ करे खोये के मिष्ठान व मिश्री का भोग लगाये ब्राह्मण/ब्राह्मणी की सेवा करे स्वयं के भोजन में से गाय को प्रतिदिन कुछ हिस्सा अवश्य दें। कन्या भोजन कराये, ज्वार दान करें, गरीब बच्चो व विद्यार्थिओं में अध्ययन सामग्री का वितरण करें, निःसहाय, निराश्रय के पालन-पोषण का जिम्मा ले सकते हैं। अन्न का दान करे, ॐ शुं शुक्राय नमः का 108 बार नित्य जाप करना भी लाभकारी सिद्ध होता है।

शनि ग्रह- शनि की गति धीमी है इसके दूषित होने पर अच्छे से अच्छे काम में गतिहीनता आ जाती है कुंडली में शनि के अशुभ प्रभाव में होने पर मकान या मकान का हिस्सा गिर जाता या क्षतिग्रस्त हो जाता है। अंगों के बाल झड़ जाते हैं। शनिदेव की भी दो राशिया है, मकर और कुम्भ शरीर में विशेषकर निचले हिस्से में (कमर से नीचे) हड्डी या स्नायुतंत्र से सम्बंधित रोग लग जाते है। वाहन से हानि या क्षति होती है, काले धन या संपत्ति का नाश हो जाता है। अचानक आग लग सकती है या दुर्घटना हो सकती है।

उपाय हनुमान आराधना करना, हनुमान जी को चोला अर्पित करना, हनुमान मंदिर में ध्वजा दान करना, बंदरो को चने खिलाना, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमानाष्टक, सुंदरकांड का पाठ और ॐ हन हनुमते नमः का 108 बार नित्य जाप करना श्रेयस्कर होता है, नाव की कील या काले घोड़े की नाल धारण करे, यदि कुंडली में शनि लग्न में हो तो भिखारी को ताँबे का सिक्का या बर्तन कभी न दें यदि देंगे तो पुत्र को कष्ट होगा। यदि शनि आयु भाव में स्थित हो तो धर्मशाला आदि न बनवाएँ।कौवे को प्रतिदिन रोटी खिलाएँ। तेल में अपना मुख देख कर वह तेल दान कर दें (छाया दान करे)। लोहा, काली उड़द, कोयला, तिल, जौ, काले वस्त्र, चमड़ा, काला सरसों आदि दान दें।

राहु- मानसिक तनाव, आर्थिक नुक्सान, स्वयं को ले कर ग़लतफहमी, आपसी तालमेल में कमी, बात बात पर आपा खोना, वाणी का कठोर होना व आप्शब्द बोलना, व कुंडली में राहु के अशुभ होने पर हाथ के नाखून अपने आप टूटने लगते हैं। राजक्ष्यमा रोग के लक्षण प्रगट होते हैं। वाहन दुर्घटना,उदर कस्ट, मस्तिस्क में पीड़ा आथवा दर्द रहना, भोजन में बाल दिखना, अपयश की प्राप्ति, सम्बन्ध ख़राब होना, दिमागी संतुलन ठीक नहीं रहता है, शत्रुओं से मुश्किलें बढ़ने की संभावना रहती है। जल स्थान में कोई न कोई समस्या आना आदि ।

उपाय गोमेद धारण करे, दुर्गा, शिव व हनुमान की आराधना करे, तिल, जौ किसी हनुमान मंदिर में या किसी यज्ञ स्थान पर दान करे। जौ या अनाज को दूध में धोकर बहते पानी में बहाएँ, कोयले को पानी में बहाएँ, मूली दान में देवें, भंगी को शराब, माँस दान में दें। सिर में चोटी बाँधकर रखें। सोते समय सर के पास किसी पत्र में जल भर कर रक्खे और सुबह किसी पेड़ में दाल दे,यह प्रयोग 43 दिन करे। इसके साथ हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमानाष्टक, हनुमान बाहुक, सुंदरकांड का पाठ और ॐ रं राहवे नमः का 108 बार नित्य जाप करना लाभकारी होता है।

केतु- कुंडली में केतु के अशुभ प्रभाव में होने पर चर्म रोग, मानसिक तनाव, आर्थिक नुकसान,स्वयं को ले कर ग़लतफहमी, आपसी तालमेल में कमी, बात बात पर आपा खोना, वाणी का कठोर होना व अपशब्द बोलना, जोड़ों का रोग या मूत्र एवं किडनी संबंधी रोग हो जाता है। संतान को पीड़ा होती है। वाहन दुर्घटना,उदर कष्ट, मस्तिष्क में पीड़ा आथवा दर्द रहना, अपयश की प्राप्ति, सम्बन्ध ख़राब होना, दिमागी संतुलन ठीक नहीं रहता है, शत्रुओं से मुश्किलें बढ़ने की संभावना रहती है।

उपाय माता दुर्गा जी, शिव जी व हनुमान जी की आराधना करे। तिल, जौ किसी हनुमान मंदिर में या किसी यज्ञ स्थान पर दान करे। कान छिदवाएँ। सोते समय सिर के पास किसी पात्र में जल भर कर रखें और सुबह किसी पेड़ में डाल दें,यह प्रयोग 43 दिन करे। इसके साथ हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमानाष्टक, हनुमान बाहुक, सुंदरकांड का पाठ और

ॐ कें केतवे नमः का 108 बार नित्य जाप करना लाभकारी होता है। अपने खाने में से कुत्ते,कौव्वे को हिस्सा दें। तिल व कपिला गाय दान में दें। पक्षियों को बाजरा दे। चींटियों के लिए भोजन की व्यस्था करना अति महत्व्यपूर्ण है।

कभी भी किसी भी उपाय को 43 दिन करना चाहिये तब ही फल प्राप्ति संभव होती है। मंत्रो के जप के लिए रुद्राक्ष की माला सबसे उचित मानी गई है। इन उपायों का गोचरवश प्रयोग करके कुण्डली में अशुभ प्रभाव में स्थित ग्रहों को शुभ प्रभाव में लाया जा सकता है। सम्बंधित ग्रह के देवता की आराधना और उनके जाप, दान उनकी होरा, उनके नक्षत्र में अत्यधिक लाभप्रद होते हैं।

जन्म कुंडली में गुरु कृपा एवं ईश्वर कृपा प्राप्ति के योग

डॉ. आर के पाठक 'मयंक'
धर्मशिक्षक भारतीय सेना

सदगुरु कृपा से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। ईश्वरीय कृपा से ही सद्गुरु प्राप्त होते है। 84 लाख योनियों में मानव योनि सर्वश्रेष्ठ है। मानव शरीर प्राप्त करने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं। बहुत से जन्मों के पुण्य जब एकत्रित होते हैं तो जीव को मनुष्य रूपी शरीर प्राप्त होती है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरित मानस के उत्तरकांड में लिखा है,

बड़े भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सद् ग्रंथन्हि गावा।।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।
पाई न जेहिं परलोक संवारा।।

अर्थात् बड़े भाग से ही हमें यह मानव शरीर प्राप्त होता है, और यह मानव शरीर देवताओं के लिए भी दुर्लभ है, ऐसा सभी सद्ग्रंथों की घोषणा है। यह मानव तन अति महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह साधनों का घर है, जिससे हम अपना परलोक सुधार सकते हैं, यह मानव तन ही मोक्ष का द्वार भी है।

मानव शरीर के लिए तो देवता भी तरसते हैं, उनकी अभिलाषा रहती है कि यदि मानव शरीर मिल जाता तो हम भी समुचित साधनों के द्वारा जन्म-मरण के बंधन को काट मोक्ष प्राप्त करने का उपक्रम कर पाते। देवयोनि तो भोग योनि है और अपने सत्कर्मों का सुख फल भोग कर पुनः देवों को स्वर्ग के इतर लोकों में गिरकर अन्यान्य योनियों में भटकना पड़ता है। एकमात्र मनुष्य तन के द्वारा ही कर्म करके हम कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं। यह मानव जीवन सब कुछ दे सकने का सामर्थ्य रखता है, यथा-

नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी।
ज्ञान विराग सकल सुख देनी।।

अतः यह सिद्ध है, कि मनुष्य के समान कोई शरीर नहीं है, जिसकी याचना देव भी करते हैं-

नर समान नहि कवनिउ देही।
जीव चराचर जाचत जेही।।

यह बडभागी मानव तन को पाकर भी जिसने अपना परलोक नहीं सँवारा उसके भाग्य में पछताने के अतिरिक्त कुछ नहीं होता और वह दुःख भोगता है।

सो परत्र दुःख पावई, सिर धुनि-धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ।।

रामचरितमानस उत्तरकांड दोहा नंबर 43।।

भावार्थ- वह परलोक में दुःख पाता है, सिर पीट-पीटकर पछताता है तथा (अपना दोष न समझकर) काल पर, कर्म पर और ईश्वर पर मिथ्या दोष लगाता है।

मनुष्य जीवन और शरीर की नश्वरता जानने के बाद आइए यह बात करते हैं कि ईश्वर और गुरु का सानिध्य किसे प्राप्त होता है और इसका क्या प्रभाव होता है?

ज्योतिष शास्त्र अपौरुषय है यह वेदों का नेत्र है। एक प्रश्न मन में आता है कि कुंडली के ग्रह योग के कारण ईश्वरीय कृपा प्राप्त होती है या भगवत कृपा से ही सारे ग्रह योग अनुकूल हो जाते हैं।

ईश्वर के अवतार के समय आकाश में ग्रहों की स्थिति अपने आप सब अनुकूल हो जाती है जैसे-

तुलसीदास जी रामचरितमानस में लिखते हैं कि भगवान के प्रकट होने के समय आकाश में ग्रहों की स्थिति अपने आप अनुकूल हो गई थी।

जोग लगन ग्रह वार तिथि, सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्ष जुत रामजन्म सुख मूल।।
रामचरितमानस बालकांड दोहा नंबर 190

सद्गुरु के अवतरित होने के समय में भी इसी प्रकार की घटना देखने को मिलती है। जब गुरु नानक देव पृथ्वी पर अवतरित हुए उस समय आकाश में प्रकाश छा गया था और अंधेरा दूर हो गया। लिखा गया।

सतगुरु नानक परगटेया मिटी धुंध जग चानन होवा।
ज्यूंकर सूरज निकला तारे छपे अंधेर बिलोवा।।

यदि ईसाई धर्म की बात करें तो जिजस के जन्म के समय में भी आकाश में एक नए तारे का उदय हुआ था। तीन बुद्धिमान लोग उसी के सहारे खोजते हुए ईसा मसीह के जन्म स्थल तक पहुंचे थे। जिन्हें 3 मैजिक अर्थात् तीन बुद्धिमान लोग कहा गया।

तुलसीदास जी लिखते हैं ईश्वर की कृपा का अनंत गुना प्रभाव होता है। ईश्वर कृपा से वह स्वयं कहां से कहां पहुंच गए? उन्होंने रामचरितमानस के बालकांड दोहा नंबर 26 में लिखा

नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥

भावार्थ- कलियुग में राम का नाम कल्पतरु है जो इच्छित वस्तु प्रदान करने वाला है और मुक्ति का आसरा है। जिसको स्मरण करने से भाँग जैसा निकृष्ट तुलसीदास भी तुलसी के समान पवित्र हो गया अर्थात् तुलसी कहते हैं कि जब तक उन्हें श्रीराम नाम की महिमा का बोध नहीं था वह भांग जैसी निकृष्ट वस्तु थे जिसके सेवन से मन बौराया रहता है। राम नाम जपते ही वह तुलसी जैसे पवित्र हो गए जिसके बिना प्रभु का भोग नहीं लगता।

जन्म कुंडली में द्वादश भाव होते हैं और भगवत कृपा प्राप्ति यदि हो गई तो कुंडली में ग्रहों की स्थिति कैसी भी हो सभी भावों के अनुकूल फल प्राप्त होते हैं। आइए हम देखते हैं कि कुंडली में भगवत कृपा प्राप्ति के योग कैसे बनते हैं।

जन्म कुंडली में भगवत कृपा प्राप्ति के ग्रह योग

1) लग्न पंचम और नवम भाव जन्म कुंडली में धर्म त्रिकोण भाव है। इस भाव

में मेष, सिंह और धनु राशियां धर्म त्रिकोण के लिए, ईश्वर कृपा प्राप्ति के लिए अच्छा फल देती हैं। साथ ही धर्म त्रिकोण में बुध और गुरु की युति, दृष्टि आदि अच्छा फल देती है। धर्म त्रिकोण के अधिपति यदि केंद्र या त्रिकोण में बैठते हैं तो अच्छा फल प्रदान करते हैं और भगवत कृपा प्राप्ति के योग बनते हैं। इसके अतिरिक्त जन्म कुंडली का प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम केंद्र भाव विष्णु भाव कहा जाता है और पंचम, नवम लक्ष्मी स्थान होता है। पंचमेश और भाग्येश तथा पंचम भाव एवं नवम भाव में बैठे ग्रहों के माध्यम से इष्ट देव का निर्धारण होता है। यदि इन ग्रहों का लग्न से संबंध हो तो ईश्वर की कृपा प्राप्ति के योग बनते हैं।

2) जन्म कुंडली में दशमेश बुध हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो भी ईश्वर कृपा प्राप्ति के योग बनते हैं।

3) नवमेश उच्च राशि में हो और उस पर शुभ ग्रहों जैसे शुभ चंद्र, शुभ बुध, गुरु या शुक्र की दृष्टि हो।

4) लग्नेश अथवा लग्न पर नवमेश की दृष्टि होने पर भी प्रभु की कृपा प्राप्त हो जाती है।

5) बृहस्पति ग्रह गुरु कृपा प्राप्ति हेतु सर्वाधिक प्रमुख ग्रह है। यह देवताओं का भी गुरु होता है। यदि नवमेश गुरु स्वयं ही अपनी राशि में बैठा हो अथवा नवमेश बृहस्पति के साथ हो और नवमेश षड वर्गों में बली हो अथवा लग्नेश पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक प्रभु की कृपा से महान यशस्वी होता है।

6) दशम भाव कर्म का होता है और नवम भाव कुंडली में धर्म का होता है। यदि दशमेश केंद्र स्थान में हो और नवमेश भी चतुर्थ भाव में हो और दशम भाव पर उनकी दृष्टि डालने से जातक को प्रभु की कृपा से अपने व्यक्तिगत क्रियाकलापों द्वारा यश का भागी बनाता है।

7) जैसा कि कहा गया है प्रभु की कृपा जिसके ऊपर हो जाए उसे उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिं।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम्।।

अर्थात् ईश्वर की कृपा से गूंगा बोलने लगता है और लंगड़ा पर्वत को चढ़कर पार कर जाता है और जिसकी कृपा से

यह संपन्न होता है उस परमानंद माधव की मैं वंदना करता हूं।

यदि जन्मांग चक्र में लग्नेश उच्च का हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती हो तो ऐसे जातक पर भगवत कृपा की बरसात होती है।

8) यदि जन्म कुंडली में द्वितीयेश उच्च का हो, उच्च का गुरु हो तथा द्वितीयेश पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक को भगवत कृपा प्राप्त होती है।

9) यदि द्वितीयेश उच्च का हो और बली लग्नेश के साथ-साथ स्थित हो तथा द्वितीयेश जिस भाव में हो उस भाव का अधिपति केंद्र भाव में हो तो विशेष भगवत कृपा प्राप्ति के योग बनते हैं।

जन्म कुंडली में भगवत भक्ति के योग

देखिए भगवत कृपा प्राप्ति अलग चीज है और भगवत भक्ति अलग है। यदि कोई व्यक्ति भगवान की कृपा प्राप्त करके भी भगवत भक्ति न करे तो इसमें कोई दैवीय या ईश्वरीय दोष नहीं है इसमें अवश्य उसका ही दोष है।

जन्म कुंडली में भगवत भक्ति की बात करें तो जन्म कुंडली का पंचम भाव ईश्वर के प्रति प्रेम श्रद्धा और भक्ति का परिचायक है। तो जन्म कुंडली का नवम भाव धर्म-कर्म में रुचि एवं क्रियाकलाप को दर्शाता है। उपरोक्त दोनों भावों को मिलाकर ही मानव पर ईश्वर कृपा प्राप्ति का पूर्ण विचार संभव है। इसके अतिरिक्त पंचम भाव में सूर्य, मंगल, गुरु आदि पुरुष ग्रहों की स्थिति या इन ग्रहों की पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि से विशेष हरि कृपा प्राप्ति का योग बनता है और व्यक्ति भगवत भक्ति में लीन होता है।

आध्यात्मिक जीवन के ग्रह योग

अर्थ प्रधान और भोग विलास को ही जीवन का लक्ष्य समझने वाले इस कलियुग में बहुत से धनी लोग भी विलासिता से परे होकर ईश्वर के ओर उन्मुख हो रहे हैं। आप लोग स्वयं देखते होंगे अमेरिका आदि देशों के बहुत से धनी लोग इस्कान छ्ह्यष्थड्ड आदि के माध्यम से भारत के धर्म स्थलों, मठों आदि में तपस्वी जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यदि उनके कुंडली में रिसर्च करेंगे तो उनकी कुंडली में भी भगवत कृपा प्राप्ति और भगवत भक्ति के योग अवश्य प्राप्त होंगे। आप सभी इस पर शोध भी कर सकते हैं। शोध करें और इसका परिणाम हम तक अवश्य पहुंचाएं।

कुंडली के त्रिकोण भाव से भगवत भक्ति के योग

जन्मकुंडली के जो 12 भाव होते हैं उसमें प्रथम, पंचम और नवम भाव धर्म त्रिकोण का है जो भगवत कृपा प्राप्ति का प्रमुख त्रिकोण है इसके अतिरिक्त चतुर्थ, अष्टम और द्वादश भाव मोक्ष त्रिकोण का होता है। यह भाव भी बहुत महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति सांसारिकता से कितना विरक्त होकर ईश्वर की ओर उन्मुख होगा। जन्म कुंडली का दूसरा छठा और दशम भाव

अर्थ त्रिकोण का होता है और कुंडली का तीसरा सातवां और ग्यारहवां भाव काम त्रिकोण का है। यदि हम जन्म कुंडली में इन सभी त्रिकोण भावों का अध्ययन करेंगे तो देखेंगे बहुत से ऐसे लोग होते हैं जिनके कुंडली में धर्म त्रिकोण के ग्रह अर्थ त्रिकोण या काम त्रिकोण में बैठ जाते हैं और वे लोग वृद्धावस्था में भी भोग विलास में लिप्त रहते हैं। बुढ़ापे में भी ईश्वर की ओर उन्मुख होने के बजाय भोग विलास की ओर उन्मुख होते हैं और ऐसे लोग शशि थरूर और अनूप जलोटा की राह पर चलते हैं।

बहुत से लोग सोचते हैं, वृद्धावस्था में उनका वेतन मोटा हो जाए। कामकाज का दायरा बहुत छोटा हो जाए। भाग्य मेहरबान हो खूब मान जान हो, भोग विलास में थरूर और जलोटा हो जाएं।

तो वहीं दूसरी तरफ ऐसे भी व्यक्ति हैं जिनके कुंडली में धर्म त्रिकोण और मोक्ष त्रिकोण में अर्थ त्रिकोण और काम त्रिकोण के ग्रह जाकर बैठ जाते हैं। ऐसे लोग गृहस्थाश्रम में भी संत जैसा जीवन व्यतीत करते हैं और बहुत से लोग जिनके कुंडली में धर्म त्रिकोण बहुत बली होता है और अर्थ त्रिकोण तथा काम त्रिकोण के अधिपति धर्म और मोक्ष त्रिकोण में बैठते हैं ऐसे लोग प्रारंभ से ही सांसारिक सुख सुविधाओं से दूर हटकर भगवत भक्ति की ओर उन्मुख होते हैं और देश समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हैं। योगी आदित्यनाथ, नरेंद्र मोदी, स्वामी विवेकानंद जैसा जीवन व्यतीत करने का प्रयास करते हैं।

जन्म कुंडली में आध्यात्मिकता के योग

कोई व्यक्ति धर्म-कर्म में रुचि लेगा या नहीं? ईश्वर भक्त आस्तिक होगा या ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक। इसका भी विवेचन जन्मकुंडली के द्वारा किया जाता है। व्यक्ति के आध्यात्मिक होने के कुछ योग इस प्रकार हैं-

1) दशम भाव में मीन राशि हो उसमें मंगल या बुध स्थित हो तो व्यक्ति ईश्वर की कृपा से पवित्र जीवन व्यतीत करता है।

2) दशमेश भाग्य स्थान में हो और बली नवमेश गुरु और शुक्र से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति पवित्र जीवन आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करता है।

3) नवमेश का शुभ होना, नवमेश का बली होना और नवमेश पर गुरु या शुक्र की दृष्टि या नवमेश के साथ उसकी युति होना भी व्यक्ति को आध्यात्मिकता की तरफ मोड़ता है।

4) यदि लग्नेश दशम भाव में हो और दशम भाव का स्वामी भाग्य भाव में हो। दशमेश पर केवल शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो भी व्यक्ति धर्म-कर्म में रुचि लेता है और आध्यात्मिक जीवन जीने का कार्य करता है।

5) जन्म कुंडली में चंद्र गुरु का गजकेसरी योग और जन्मांग में मंगल और शनि का एक साथ होना भी ईश्वर की ओर उन्मुख करता है।

6) जन्म कुंडली में गुरु और शनि ग्रह आध्यात्मिकता की ओर ले जाते हैं व्यक्ति को ईश्वर की तरफ मोड़ते हैं। जबकि इसके विपरीत चंद्र और शुक्र भोग विलास की ओर प्रेरित करते हैं। यदि आपकी कुंडली में चंद्र, शुक्र का प्रभाव ज्यादा रहेगा तो आप सांसारिक भोग विलास में लिप्त रहेंगे और गुरु शनि का प्रभाव ज्यादा होने पर ईश्वर की ओर उन्मुख होंगे। जीवन में इसीलिए महादशाओं का भी विशेष प्रभाव होता है। यदि व्यक्ति के जीवन में ईश्वर प्राप्ति कारक ग्रहों की दशा चल रही है तो वह आध्यात्मिक जीवन जीने का प्रयास अवश्य करेगा।

7) जन्म कुंडली में यदि केतु व्यय भाव में बैठा हो तो वह मोक्ष कारक होता है। ऐसा माना जाता है कि उस व्यक्ति ने कुछ अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए अंतिम जन्म लिया है। इसके बाद उसको जन्म मरण से छुटकारा मिल जाएगा और मोक्ष प्राप्ति हो जाएगी। ऐसा व्यक्ति सांसारिकता से अधिक आध्यात्मिकता की तरफ प्रेरित होकर ईश्वर आराधना में रत रहता है।

8) जन्मकुंडली के व्यय भाव में शुभ ग्रह हों तथा व्यय भाव का मालिक स्वगृही या मित्र राशि में हो तो भी यह जातक को धार्मिकता की ओर ले जाता है।

9) यदि जन्म कुंडली में अकेला गुरु उच्च का होकर छठे, आठवें, प्रथम, चतुर्थ सप्तम या दशम भाव में हो और अन्य सभी ग्रह कमजोर हों तो व्यक्ति सांसारिकता त्याग कर मोक्ष प्राप्ति की तरफ अग्रसर होता है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर किसी के जन्मकुंडली को देखकर हम यह बता सकते हैं कि वह व्यक्ति कितना आध्यात्मिक है। धर्म के प्रति उसकी रुचि कितनी है। उसके जीवन में गुरु की कृपा प्राप्त होगी या नहीं? ईश्वर की कृपा प्राप्ति के कितने योग हैं और मोक्ष प्राप्ति के अवसर कैसे हैं। कुंडली से इन सबका आंकलन किया जा सकता है।

भगवत भक्ति ईश्वर कृपा प्राप्ति के उपाय

यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में ईश्वर कृपा और गुरु कृपा प्राप्ति के योग मध्यम हैं तो भी वह कुछ उपायों को करके अपने इन ग्रहों को बली कर सकता है और ईश्वर और गुरु की कृपा प्राप्त कर धार्मिक जीवन व्यतीत कर मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकता है। इसके लिए व्यक्ति को योग और प्राणायाम का सहारा लेना चाहिए। प्रतिदिन कुछ समय निकालकर ईश्वर आराधना करनी चाहिए। जन्म कुंडली के सभी ग्रहों के अशुभ प्रभाव को दूर करके शुभ प्रभाव प्राप्त करने के लिए नौ ग्रह गणेश रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। साधना करें इसके अतिरिक्त कुछ धार्मिक और तांत्रिक क्रियाएं जैसे योनि पूजन, लिंग अर्चन, भैरवी साधना, चक्र पूजन आदि कर सकते हैं। ईश्वर में आस्था रखें और अष्टांग योग दर्शन जिसमें आसन, प्राणायाम से लेकर धारणा, ध्यान, समाधि तक का सफर तय होता है वहां तक पहुंचने का प्रयास करें। आपको सफलता अवश्य मिलेगी। एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कर्ता भाव से दूर रहें। जो कुछ भी करें वह ईश्वर को समर्पित करें और ईश्वर से उसकी कृपा प्राप्ति भक्ति और दया का आशीर्वाद मांगे। यदि आप अपना सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर देंगे तो आपकी जिम्मेदारी ईश्वर स्वयं अपने ऊपर लेता है। जो कुछ भी आपके जाने अनजाने गलतियां होती हैं उनको भी माफ करता है और आपको अच्छे कार्यों की तरफ प्रेरित करता है। जब तक व्यक्ति के अंदर अहं का भाव रहता है वह सोचता है मैं कर रहा हूं तब तक ईश्वर भी पूर्ण रूप से सहायता नहीं करते।

दो अक्षर का शब्द है याद जिसका उल्टा होता है दया। यदि आप ईश्वर को याद करेंगे तो वह उसके बदलने में आपके

ऊपर दया अवश्य करेगा।

कुछ उदाहरण देखिए- द्रोपदी चीर हरण के समय जब तक द्रोपदी सोच रही थी, इस सभा में भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य कुलगुरु कृपाचार्य हैं तब तक मेरा चीरहरण कौन कर सकता है। परंतु सभी चुप रहे। फिर उसने सोचा मेरे पति इतने बलवान हैं। सबसे अधिक सत्यवादी धर्मात्मा युधिष्ठिर हैं। सर्वश्रेष्ठ गदाधर भीम हैं। सर्वश्रेष्ठ धनुषधारी अर्जुन है इनके रहते मेरा कौन अहित कर सकता है परंतु सभी पहले ही दास हो चुके थे कोई कुछ नहीं बोल पाया। अंत में उसने सोचा कि मैं यज्ञसेनी हूं मेरा जन्म भी अग्नि से हुआ है। मैं स्वयं अपनी रक्षा करने में सक्षम हूं। परंतु जब दुशासन के शक्ति के आगे उसकी एक न चली और उसको लगा कि मैं सभा के बीच में नंगी हो जाऊंगी तो उसने कन्हैया को पुकारा और कहा कि केवल अब आपका ही सहारा है। भगवान तुरंत आए और उसकी लाज बचा लिए। द्रोपदी ने एक बार उलाहना देते हुए भगवान श्री कृष्ण से पूछा, आप अंत में क्यों आए पहले क्यों नहीं आए? भगवान श्री कृष्ण ने कहा इसमें गलती मेरी नहीं है मैं बिना बुलाए कैसे आऊं? जब तुम्हारे पति जुआ खेलने को तैयार हुए और दुर्योधन ने कहा मेरे तरफ से पासा मेरा मामा फेंकेगा तो तुम्हारे पति यह भी कह सकते थे कि मेरे तरफ से पासा वासुदेव फेकेंगे। यदि मैं पाशा फेंकता तो देखता कैसे शकुनी जीत जाता। तुमको दांव लगा पर लगाने से पहले क्या मेरे से उन्होंने सलाह लिया था या मुझे बुलाने का प्रयास किए। तुमने भी मुझे अंत में पुकारा। जैसे ही पुकारा मैं नंगे पांव तुरंत पहुंच गया। अर्थात् ईश्वर भी तभी सहायता करते हैं जब व्यक्ति पूर्ण रूप से उनके प्रति समर्पण कर देता है।

गज और ग्राह का युद्ध हुआ। जल में होने के कारण गज अधिक शक्तिशाली होते हुए भी ग्राह से हारने लगा। उसने पहले भगवान को नहीं पुकारा। उसे लगा कि मैं इतना विशालकाय और शक्तिशाली हूं ग्राह मेरा क्या कर लेगा? परंतु पानी में ग्राह की शक्ति अधिक बली पड़ने लगी और जब गज को लगा कि वह डूब जाएगा तो उसने ईश्वर को पुकारा और बोला हे प्रभु मुझे बचा लो। भगवान तुरंत ही आए

और ग्राह को मारकर गज को बचा लिया।

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा भी है,
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

भावार्थ - संपूर्ण धर्मों को अर्थात् संपूर्ण कर्तव्य कर्मों को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥

श्रीमद भगवत गीता 18 अध्याय 66 श्लोक॥

संसार के बंधनों में रहते हुए गृहस्थाश्रम में भगवत भक्ति कैसे करें?

देखिए हम गृहस्थाश्रम में यदि हैं तो हमें अपने सांसारिक जिम्मेदारियों से भागने की जरूरत नहीं है उनको निभाते हुए भी हम ईश्वर की निरंतर भक्ति कर सकते हैं और इसमें बस इतना ही करना है कि जो कुछ भी आप कर्म कर रहे हैं उसमें कर्ता का भाव न रखते हुए मन में यह विचार करें कि जो कुछ भी आप कर रहे हैं वह ईश्वर की प्रेरणा के द्वारा ही हो रहा है क्योंकि भगवान की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता और अपने सभी कर्मों को ईश्वर को समर्पित कर दें। जो भी आपके अच्छे या बुरे कर्म हैं वह ईश्वर को समर्पित करने पर उसका परिणाम अच्छा ही होगा। उसके बाद आप देखेंगे कि आपके जीवन में कुछ गलत घटित होगा ही नहीं क्योंकि सब त्रुटियों को दूर करके आपके जीवन में सब कुछ अच्छा करने की जिम्मेदारी ईश्वर स्वयं अपने ऊपर ले लेगा।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा।
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात्।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै।
नारायणयेति समर्पयामि ॥

इसका तात्पर्य यह है कि हे नारायण, श्री हरी में अपने तन, वचन, मन, इन्द्रियों से, बुद्धि से, आत्मा से जो भी घटित हो रहा है वह मैं आपको समर्पित करता हूँ। यह प्राकृतिक रूप से या मेरे मन के विचारों के कारण हो रहा है वह आपको अर्पित है। मैं यह सभी श्री नारायण के चरण कमल पर समर्पित करता हूँ। भाव यह है कि साधक के द्वारा जो भी कुछ ज्ञात रूप में और अज्ञात रूप में किया गया है वह सभी कुछ ईश्वर की प्रेरणा से ही होता है इसलिए वह सभी ईश्वर को समर्पित है।

Whatever I do (Perform), with my body, speech, Mind or Sense, using my Intellect, natural tendencies of my Mind, Whatever I do, I do all for others I Surrender them all at the Lotus Feet of Sri Narayana, I dedicate it all to that Supreme Lord Narayana.

इसका एक लाभ यह भी होता है जब आप जानते हैं जो कुछ भी आप कर रहे हैं वह ईश्वर को समर्पित करेंगे तो आप ईश्वर को साक्षी मानकर कार्य करेंगे और गलत रास्ते पर जाने से बचेंगे।

फिर भी यदि किसी को लगता है कि हमने जाने अनजाने में कुछ गलत कर दिया है तो ईश्वर से उसके लिए क्षमा भी मांग सकते हैं।

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा।
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधं।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व।
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

हे परमेश्वर! मैंने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, कर्ण, नेत्र अथवा मन से अभी तक जो भी अपराध किए हैं, वे विहित हों अथवा अविहित, उन सब पर आपकी क्षमापूर्ण दृष्टि प्रदान कीजिए। हे करुणा के सागर भोले भंडारी श्री महादेवजी, आपकी जय हो। जय हो।

इस प्रकार आत्मा जिसका परम लक्ष्य परमात्मा को प्राप्त करना है यह तभी संभव है जब हम अपना गृहस्थाश्रम का कार्य करते हुए भी परमात्मा से अपना संबंध बनाए रखें और गृहस्थ आश्रम के बाद प्रभु भक्ति में लीन होकर अपने जीवन लक्ष्य को पूरा करें।

लोकतंत्र का प्रहरी ग्रह शनि

डॉ. प्रशांत खानवलकर

राजनीति में लोकतंत्र एक मौलिक दृष्टिकोण है। नीतिगत मूल्यों का पैमाना है मनुष्य की एक निश्चित अवधारणा और समाज में उसके स्थान का हालांकि लोकतांत्रिक संस्थाएं और प्रारूप व्यापक रूप से भिन्न है। कुछ महत्वपूर्ण मूल्य है जो लोकतंत्र को व्यापक रूप से निर्धारित करते हैं, कुछ महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य है जो जीवन के लोकतांत्रिक तरीके को निर्धारित करते हैं। वैदिक युग में राष्ट्र या जनपद का मुखिया राजा होता था । वस्तुतः राजा के पुत्र को पिता की मृत्यु के पश्चात राजा का पद दिया जाता था किंतु यह आवश्यक था कि उस राजा के पुत्र का वरण विशः या प्रजा करें। यदि राजा का पुत्र राजा के रूप में प्रजा को योग्य प्रतीत होता तो प्रजा उसे ही वरण कर लेती, योग्य पुत्र के अभाव में प्रजा को यह अधिकार था कि वह राजवंश से किसी अन्य व्यक्ति या कुलीन परिवारों के किसी व्यक्ति का राजा के पद के लिए वरण करें ।

आरंभ में 'आर्य विश सभा समितियों' के माध्यम से 'विशपति' (प्रजापति) को चुनते थे। शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए उन्हें पराक्रमी राजा का नेतृत्व अपेक्षित था। राजा के निर्वाचन या वर्ण को सूचित करने के लिए अथर्ववेद में मंत्र के माध्यम से कामना की गयी है-

त्वा विशो वृणुता राज्याय त्वामिभः प्रदिशः पंचदेवी वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रा विभजा वसूनि ।

अर्थात- प्रजा (विशः) राज्य के लिए तुम्हारा वरण करती हैं सब दिशाओं के लोग तुम्हारा वरण करते हैं। तुम राष्ट्र रुपी शरीर के सर्वोच्च स्थान पर आसीन रहो और वहां रहते हुए उग्र शासक के समान सब में संपत्ति का विभाजन करो । इसका तात्पर्य यही हुआ कि राजा का निर्वाचन सबकी सम्मति एवं स्वीकृति पर प्रजा अथवा जनता ही करती थी।

अथर्ववेद के अनुसार-

**आ त्वाहार्षमत रे धिर्धर्वास्तष्ठाविवाचलिः
विशस्तवा सर्वा वाञ्छंतु मा
त्वद्राष्ट्रमधिमशत् इहैवैधि मापच्योष्ठाः पर्वत
इवा विवाचलिः इंद्र हैव ध्रुवस्तिष्ठेह
राष्ट्रमधारय ।**

(अथर्ववेद 6/87/11-2)

अथर्ववेद की उपरोक्त मंत्रो से लोकतंत्र के अधिनायक कर्णधार, राजा या आज के परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री से संबंधित धारणाएं स्पष्ट हो जाती है। प्रथमतः तो यह की जनता या प्रजा प्रधान (राजा) को ध्रुव स्वरूप में राज्य करने देने की इच्छुक थी, उसकी सामूहिक (बहुसंख्यक) इच्छा यह थी कि वरुण, बृहस्पति आदि देवता राजा को सृष्टि पर्यंत कार्य करने की शक्ति प्रदान करें, जिससे वह भी पृथ्वी दयुलोक, पर्वत आदि की भांति ध्रुव रुपेण स्थिर रह सके ।

यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि राजा के स्थायित्व की इच्छुक प्रजा होने पर भी वह राजा से राष्ट्र में घुब रूप में सत्तासीन बने रहने का अधिकार छीन सकती है इसका प्रमाण उपरोक्त मंत्र में अभिहित शब्द **मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत** से है।

अर्थात जहां प्रजा (जनता) को राजा को सिंहासीन करने का अधिकार था वही वह उसे पदच्युत करने की भी अधिकारिणी थी।

यहा ज्योतिष शास्त्र अनुसार प्रजा के इसी अधिकार का प्रतिनिधि कारक शनि है जो लोकतंत्र का प्रहरी तब भी था और आज भी है। अभिप्राय यह है कि हमारे स्वतंत्र राष्ट्र के लोकतंत्र की आधारशिला में कहीं न कहीं अथर्ववेद की यह कामना भी समाहित है।

अथर्ववेद के साथ-साथ यजुर्वेद के कुछ मंत्र है जिनमें प्रजा द्वारा राजा के वरण के संकेत मिलते हैं -

**इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय
महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यार्ये-
द्रस्यैद्रियाय । (- यजुर्वेद 9/40)**

अर्थात राजा का निर्वाचन प्रजा इसी प्रयोजन से करती है कि वह सब प्रकार की विपतियों से प्रजा की रक्षा करें वह सबसे ज्येष्ठ (प्रधान) होकर रहे अर्थात सर्वोपरि हो, उसके नेतृत्व में जनता का प्रभुत्व कायम रहे, वह इंद्र से भी बढकर ख्यातनाम हो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भले ही वर्तमान संवैधानिक चुनाव मतदान प्रक्रिया वैदिक काल में ना रही हो किंतु राजा को विशों और सजातों की अनुमति प्राप्त करना आवश्यक था। वंशानुगत राज्यों में भी इसकी अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य था क्योंकि यह राज्याभिषेक का अंग बन चुका था। भारत जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्र में लोकतंत्र की प्रक्रिया सार्वजनिक चर्चा की खुलेपन से आलोचनात्मक जांच की और अंततः सहमति की है, कुल मिलाकर यह सभ्यता द्वारा तैयार की गई सरकार का सबसे सुखद मानवीय रूप है, संवैधानिक प्रारुप है।

क्योंकि इसका मूल रूप से तात्पर्य है कि सरकार शासित एक स्वतंत्र सहमति आधारित संस्था पर निर्भर एक नैतिक विश्वास, इसकी आधारशिला से आम व्यक्ति की स्वतंत्रता, गरिमा और संतुष्टि यह सब मोटे तौर पर शनि के अंतर्गत आता है। जो उसमें निहित जनमानस स्वतंत्रता निष्पक्ष भूमिका और मानवता को दर्शाता है।

क्योंकि शनि लोकतंत्र का कारक ग्रह है सभी निर्वाचित नेता उनके जन्मांग में शनि की स्थिति से कारकत्व शक्ति प्राप्त करते हैं। शनि जनमानस या आम आदमी और सत्ता के मध्य लोकतांत्रिक प्रक्रिया के साथ घनिष्ठ रूप से (एक सेतु बनकर जुड़ा हुआ है। इसलिए जनता पर शासन करने वाली लोकतांत्रिक सरकार में और उसके नेताओं (कर्णधारों) की कुंडली में शनि का विशेष महत्व है । इन के माध्यम से शनि की कार्यप्रणाली सतही या जमीनी स्तर पर अंतिम छोर पर खड़े एक आम आदमी तक अंतिम विकासवादी चरण का प्रतिनिधित्व करती है।

एक समय जब सत्ता की शक्ति धरोहर (विरासत) के रूप में पिता (राजा) से पुत्र (राजकुमार) या वारिस को हस्तांतरित होती रही जैसा कि वहां राजशाही पुत्र कारक बृहस्पति होता है वह राजसी संतान (वारिस) की कुंडली में महत्वपूर्ण रूप से संकेतक राजशाही वारिस के रूप में चित्रित होता रहा, वहां प्रायः बृहस्पति 10 वे भाव से संबंद्ध देखा गया। कालांतर में जैसे-जैसे शनै शनै राजाओं की जगह लोकतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा निर्वाचित या स्वयंभू नेताओं ने ले ली जो की जनमानस में लोकप्रियता की लहरों पर सवार होकर सत्ता में आए। वहां हम बृहस्पति को पाते है की वे (भले ही अनिच्छा से) शनि के लिए रास्ता बना रही हो। जैसे बृहस्पति राजशाही या पैतृक सत्ता के पारंपरिक मूल्यों का समर्थन करता हुआ प्रतिनिधि है वैसे ही आज की लोकतांत्रिक सरकारों में सूर्य स्वयं राजा या राज्य / देश के मुख्य प्रधान का प्रतिनिधित्व करता है। सूर्य एक राजनीतिक या राजनीतिक के रूप में अपने नेतृत्व प्रकृति या क्षमता प्रकट कर सकता है यह राजनीतिक क्षेत्र में स्थापित होने में मदद कर सकता है लेकिन चमकने या स्थायित्व के लिए एक नेता या राजनीतिज्ञ को अकेले सूर्य का सकारात्मक प्रभाव अपर्याप्त है । शनि को राजनीतिक प्रभावों की सीमा का न्याय करने में उचित ध्यान देने वाले ग्रह के रूप में देखा जाता है। क्योंकि वह इस क्षेत्र में सूर्य की तुलना में बड़ी भूमिका निभाता है।

Down to earth नेता की भांति ऐसा नेता जो कभी कार्यकर्ता रहा हो या उसे जमीनी स्तर पर जनता से सरोकार रहा

हो। इसलिए हम देखते हैं इस समय भारत ही नहीं विश्व इतिहास में शनि की भूमिका विकासवादी प्रक्रिया के सोपान में प्रकृति और मनुष्य को प्रस्तुत हुए मुद्दों के कारण राजनीतिक रूप से भी बढ़ी है। यदि हम किसी चुने हुए नेता के चार्ट की जांच करेंगे तो हम पाएंगे कि शनि एक प्रमुख स्थान पर है उदाहरण के लिए द्वितीय चतुर्थी या दसवें भाव के शनि के साथ एक राजनीतिक भी जनता पर मूल प्रभाव प्रदान करेगा। इन स्थानो (भाव) में इतनी शक्ति और स्थिति (स्टेट्स) देने वाला कहां जाता है जितना कोई अन्य यह नहीं दे सकता।

एलन लियो के अनुसार नेपोलियन बोनापार्ट अपने 10 वे भाव में शनि के कारण ही ऊंचाइयों तक पहुंचे ।

शनि मकर और कुंभ राशि में रहकर अपनी कारकत्व क्षमता के बेहतर परिणाम देता देखा गया है।

मेदिनी ज्योतिष अनुसार चतुर्थ भाव राज सिंहासन का भाव है तो जनतांत्रिक गतिविधियों का भी भाव है दशम भाव राजनायिक शासक / प्रधान (राजा) का जबकि ग्रहों में मेदिनी ज्योतिष अनुसार शनि को आम जनता और जनतंत्र या लोकतंत्र का कारक माना गया है, यह प्रजातांत्रिक संस्थानों का भी कारक है और आपातकाल, राष्ट्रीयकरण जैसी महत्वपूर्ण गतिविधियों का भी।

शनि के अत्यधिक लाभकारी प्रभाव से एक आम आदमी राजा या राष्ट्रप्रमुख बन सकता है तो इसके बुरे प्रभाव से एक राजा या राष्ट्र प्रमुख रंक में भी बदल सकता है। यह शनि का ही प्रभाव था जो नेपोलियन को भी ले आया । जिस तरह शनि शक्ति प्रदान करता है ठीक उसी तरह से जब अच्छा चल रहा हो तो शक्तिशाली को बाधित करने की शक्ति भी होती है इंदिरा जी को भी हमने आपातकाल के उपरांत इसी शनि के प्रभाव से अपनी तानाशाही के दौर के बाद शक्ति विहीन होते देखा। हम विश्व के किसी महान नेता में उसकी कुंडली में शनि का प्रभाव का अध्ययन कर यह जान सकते हैं कि वह जातक जनमानस का प्रिय नेता या तानाशाह या अत्याचारी या संत क्यों था।

लोकतंत्र की शक्ति के रूप में शनि की महत्वपूर्ण भूमिका को हम आगे स्वतंत्र भारत की कुंडली में भी देखेंगे।

व्यक्ति हो, समाज हो या राजनीति में पक्ष विपक्ष शनि संयोजन का कार्य करता है जितना भी बिखराव है उन सब को समेटना शनि का कार्य है। लेकिन शनि उन विचारों, स्थितियों को ध्वस्त करता है जिनका कोई आधार नहीं है और भारतीय राजनीति में भी हमने देखा है लोकतंत्र हेतु भिन्न घटकों के संयोजन से दलों की एकता में जब वैचारिक आधार केवल सत्ता या पद पाने की लालसा हो, कमोबेश रेत के महल सी स्थिति निर्मित हो तो शनि को उसे ढहाते भी देखा है। चाहे धन संग्रह हो या पद संग्रह हो या संपत्ति संग्रह ऐसे संग्रह के मार्ग पर मन के चलने पर उसका अहम् भी उच्च होगा तो शनि उसे आगाह करेगा अगर फिर भी व्यक्ति का मन अहम की चपेट से बाहर न निकलें तो शनि उसे ध्वस्त कर देगा।

वायु तत्व का संबंध विचार से है, विचार का आधार आकाश से है। वर्तमान में हमारे शनि का Aquarian age (कुंभगत) होना वैश्वीकरण या ग्लोबलाइजेशन का सूचक है और इसमें (वर्तमान) दुनिया में राजनीतिक रूप से भारत के एक शक्ति के रूप में उभरने का सूचक आधार भी भारत के दशम (कर्म) स्थान का शनि (योग कारक) है, वैसे भी यह कुंभ शनि की प्रिय राशि है और इसी वैश्वीकरण के दौर में Aquarian age के चलते एक सशक्त

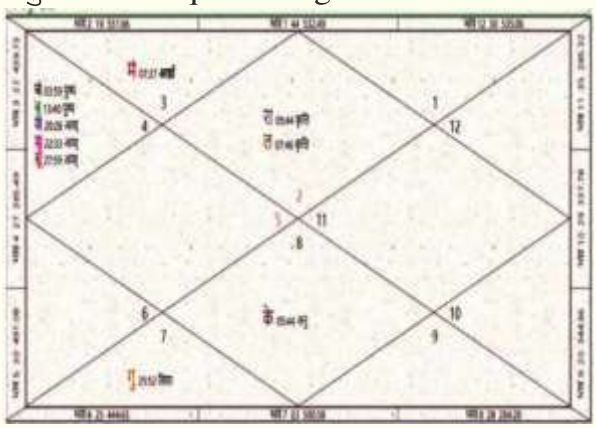

कर्णधार का नेतृत्व कार्यकाल देश को पुनः मिलना प्रतीत होता है।

(1) स्वतंत्र भारत की कुंडली

स्वतंत्र भारत की कुंडली 15 अगस्त 1947 मध्य रात्रि (00:00) की है, लग्न वृषभ स्थिर राशी और जन्म राशी कर्क हैं तथा जन्मनक्षत्र पुष्य है । शनि की महादशा में भारत को आजादी प्राप्त हुई थी। कुंडली के तृतीय भाव में कर्क राशि में सूर्य चंद्र शनि बुध शुक्र ये पांच यह बैठकर पंचग्रही योग बना रहे हैं, जो कि पराक्रम का भाव है भारत की कुंडली का तीसरा भाव बहुत बलवान है। तृतीय भाव में अनेक यहाँ की युति में उतार-चढ़ाव की स्थिति के बावजूद शनि की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। शनि का वृषभ लग्न में योग कारक भाग्येश होकर तृतीय पराक्रम में स्थित होकर नवम पर स्वराशि दृष्टि प्रदान करना और नवमांश में (जन्मांग की नवमगत) मकर राशि (स्वराशि) में लग्नेश के साथ लाभ भाव में होना लोकतंत्र की मजबूत आधारशिला का प्रतीक है और भारत के लिए भाग्य विधाता यह के रूप में देखा जा सकता है। इसी शनि की महादशा में 1947 से 1965 तक भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध में भारत को सफलता प्राप्त हुई। भारत के प्रथम प्रधानमंत्रित्व के समय कालखंड में भी इसी शनि की दशा भारत की कुंडली में रही थी जो कि भारत के अखंड और मजबूत लोकतंत्र का आधार का प्रहरी साबित हुआ।

(2) सरदार वल्लभ भाई पटेल 31-10-1875 18:45, नाडियाड -

अब हम भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री रहे लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की कुंडली में शनि की भूमिका देखें स्वतंत्र भारत की कुंडली की भांति इनकी भी वृषभ लग्न की कुंडली है, जिसमें शनि योग कारक ग्रह होकर नवम आव में स्वराशि का उच्च के मंगल की युति में है चंद्रमा से मंगल शनि दोनों तृतीय पराक्रम भाव में है। शनि की राशि में शनि से युक्त उच्च मंगल के दशा और क्रमशः सूर्य और चंद्र की अंतर्दशा में देश की आजादी के उपरांत गृहमंत्री के रूप में देसी रियासतों के अखंड भारत में विलय में लोकतंत्र की मजबूती हेतु उनके पराक्रम की विशेष भूमिका रही जो की नवम भाव के (चंद्र से तृतीय) शनि मंगल की युति का प्रभाव दर्शाती है । चन्द्रमा मंगल की राशि और शनि के नक्षत्र में है।

शनि सरदार पटेल की कुंडली में आत्मकारक ग्रह भी होकर कारकांश लग्न में है, जो जैमिनी अनुसार कर्म से प्रसिद्धि या प्रसिद्ध कर्म से कैरियर का संबंध दर्शाता है। (इसी प्रकार के शनि का प्रभाव हम आगे इंदिरा जी की कुंडली में भी देखेंगे)

सरदार पटेल की स्वतंत्र भारत की अखंडता और लोकतंत्र की मजबूत आधारशिला हेतु देशी रियासतों के भारत राष्ट्र में विलय में कुंडली के आत्मकारक और योग कारक भाग्य भाव स्थित स्वराशि के शनि और उसकी युति में चंद्रमा से पराक्रम भाव के मंगल (मकर राशिस्थ) की मुख्य भूमिका रही और इन दोनो यहाँ के प्रभावी कारकत्व से उपजे पराक्रम ने उन्हें लौह पुरुष कहलाया ।

अंगुलियाँ सामान्य परिचय

आर एन मिश्रा

अंगुलियाँ हमारे व्यक्तित्व तथा हम अपने आपको कैसे व्यक्त करते हैं, इसके बारे में बताती हैं। कई बार अंगुलियों से ही हमें ऐसी बातें पता चल जाती हैं, जिसके लिए अन्य स्थान से पुष्टि करने की जरूरत ही नहीं रहती। जबकि हाथ की रेखाओं से ज्ञात की गई बातों की पुष्टि हाथ में अन्य स्थानों पर व अन्य चिन्हों से भी करनी पड़ती है। एक सामान्य तथा स्वस्थ अंगुली सीधी तथा आकार प्रकार में समान होनी चाहिए। अंगुलियाँ अपने अंतिम सिरे में थोड़ी सी संकरी हो तथा उनके तीनों पर्व लगभग समान लम्बाई के हो तो ऐसी अंगुलियाँ वातावरण से ऊर्जा सही मात्रा में ग्रहण करती हैं एवं यही ऊर्जा हाथ व शरीर में बिना किसी बाधा के जाती है।

किसी अंगुली का दूसरी अंगुली की तरफ झुका होना, टेढ़ा होना सामान्यतः उस अंगुली के गुणों में कमी लाकर उसे एक तरह से हानि कारक बनाता है। अंगुली का नाखून वाला प्रथम पर्व हमारी सोच, बीच वाला पर्व हमारे मैनेजमेंट, हमारे दिमाग तथा हमारे एक्शन को एवं तीसरा पर्व भौतिकता व हमारे शरीर को बताने वाला होता है। अंगुलियों की आपस की दूरी भी कम महत्व की नहीं होती है। अंगुलियों के बीच सामान्य दूरी होना व्यक्ति का सामान्य टेम्परामेंट या व्यवहार बताता है। यानी व्यक्ति बिना किसी के प्रभाव या दबाब या बाधा से अपना काम करता है। अंगुलियों की ज्यादा दूरी एक तरह की स्वतंत्रता की चाहत को बताती है। उदाहरण के तौर पर

कनिष्ठा का दूर जाना व्यक्ति को नियमित रूप से एक समय विशेष या एक अंतराल में अकेला रहने के लिए प्रेरित करता है। अन्य अंगुलियों का

शनि की अंगुली से चिपकना भी अंगुली विशेष के गुणों में कमी लाता है। व्यक्ति में डर या सर्तकता को बताता है। अंगुलियों में गाँठ का होना यानी दिमाग का बीच में आना। ऐसे लोग बुद्धिमान जरूर होते हैं व अपना काम या विचार बहुत सोच कर करते या व्यक्त करते हैं, परन्तु इनके एक्शन थोड़े धीमे होते हैं। रिलेशनशिप में कई बार इसके कारण दिक्कतें आती हैं।

अंगुलियों को समझने के लिए पहले हमें अंगुली विशेष के बारे में जानना होगा और फिर देखना होगा कि हाथ की अंगुलियों की एक दूसरे के संदर्भ में क्या स्थिति है। अंगूठे के बाजू से शुरू अंगुलियों के नाम क्रमशः तर्जनी, मध्यमा, अनामिका एवं कनिष्ठा हैं। (चित्र 9-1) सबसे पहले हम जानेंगे, अंगुलियों के सामान्य आकार-प्रकार, उसके पर्व व लचीलेपन के बारे में।

9-1

अंगुलियों के प्रकार

1. छोटी अंगुलियाँ

वैसे तो अंगुलियाँ हमेशा हथेली से छोटी होती हैं, परन्तु हथेली से आधा इंच

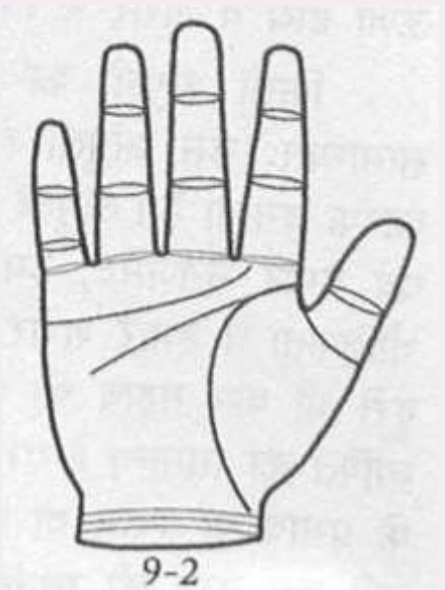
9-2

या ज्यादा छोटी हो तो अंगुलियाँ छोटी कहलाती हैं। (चित्र 9-2) यदि हाथ की तुलना में अंगुलियाँ छोटी हैं तो ऐसे व्यक्ति किसी भी चीज़ के विस्तार में न जाते हुए तुरंत त्वरित बुद्धि से निर्णय लेकर आगे बढ़ते हैं। एक बार मन में विचार आ जाने के बाद तुरंत उस कार्य को करते हैं। ये कभी खाली नहीं बैठते । अगर छोटी अंगुलियाँ मोटी भी हों तो अनैतिक काम करने की संभावना ज्यादा होती है।

2. लम्बी अंगुलियाँ

ऐसे व्यक्ति किसी बात के विस्तार में जाते हैं। छोटी से छोटी बात पर भी ध्यान केन्द्रित करते हैं व उसका विश्लेषण करते हैं। ऐसे लोग विचारक, सभ्य, कलात्मक रुचि रखने वाले, संवेदनशील, मिलनसार परंतु छोटी-छोटी बातों में डिस्टर्ब होने वाले होते हैं। शक की प्रवृत्ति इनमें पायी जाती है। एक्शन की अपेक्षा सोच-विचार में समय ज्यादा लगाते हैं।

परन्तु अच्छे चिंतक होते हैं। (चित्र 9-3)

9-3

3. मोटी अंगुलियाँ

मोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति का मस्तिष्क कुछ कम विकसित होता है, जिस कारण इनमें दुर्गुण आसानी से आ जाते हैं, जैसे- लापरवाह होना, चिड़चिड़ापन या क्रोधी होना। ऐसे लोग अक्सर मेहनत का काम करते हैं, जैसे किसान, मजदूर आदि। ऐसे व्यक्ति एक जगह टिककर काम नहीं कर पाते।

4. मोटी माँस युक्त अंगुलियाँ

ऐसे लोग भौतिकवादी, भोग-विलास पंसद, खाने-पीने के शौकीन होते हैं।

5. पतली अंगुलियाँ

ऐसे लोग खाने-पीने, लग्ज़री को छोड़ अपने दिमाग की खुराक पर ज्यादा विश्वास करते हैं। ऐसे लोग होशियार होते हैं। पतली अंगुलियाँ अगर लम्बी भी हैं, तो उनमें समझ बढ़ जाती है।

अंगुलियों के पर्व

प्रत्येक अंगुली के 3 पर्व होते हैं। सबसे ऊपर वाला प्रथम पर्व मानसिक ताकत को बताता है। चिंतक व विचारक इसी श्रेणी में आते हैं। ऐसे लोगों के पर्व यदि कुछ उभरे भी हैं तो निश्चित ही उनमें कुछ विशेषता या निपुणता होती है। दूसरा पर्व व्यवहारिकता को तथा तीसरा पर्व भौतिकता व अपनी को बताता है। पर्व पर खड़ी रेखाएँ शुभ फल करती हैं और आड़ी रेखाएँ अशुभ । जो पर्व शुभ हो तो उस पर्व संबंधी गुण व्यक्ति में विशेष होंगे, अशुभ होने से वे गुण कम होंगे। अपने विचारों को कार्यरूप में परिणित करने के लिए प्रथम व द्वितीय पर्व में संतुलन जरूरी है। बीच वाला पर्व ज्यादा लम्बा होने से व्यक्ति बिना सोचे या बिना योजना के अधिकतर काम करता है। सुरक्षा

अंगुलियों का लचीलापन

सामान्य रूप से अंगुलियों में थोड़ा लचीलापन होना चाहिए। यानी पीछे मोड़ने पर मुड़ना चाहिए। ऐसे लोग परिस्थिति अनुसार अपने को ढाल लेते हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं व लेखन में रुचि रखते हैं। यदि अंगुलियों के सबसे ऊपर के पर्व पीछे की तरफ मुड़ते हैं तो व्यक्ति में रचनात्मकता होती है। ऐसे लोग प्रतिभाशाली होते हैं। ऐसे लोग आकर्षक भी होते हैं। ये गैर परम्परा वादी होते हैं। ये अपने लचीलेपन का फायदा भी उठाते हैं। यदि अंगुलियाँ कड़ी हैं, लचीली नहीं हैं तो व्यक्ति परंपरागत, एक ही तरह का विचार रखने वाला व उस पर दृढ़ रहने वाला होगा। अपने विचारों के मामले में एक तरह से हठी होता है। कई बार व्यवहारिकता इनके लिए ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि अंगुलियाँ थोड़ी सी अंदर की तरफ मुड़ी हुई हैं तो व्यक्ति बहुत चतुर, विस्तारवादी तथा चीजों को अपने पास पकड़ कर रखना चाहेगा।

अंगुलियों के आकार

अंगुलियों का नाखून वाला पर्व विभिन्न आकार का हो सकता है। यह अंगुलियों या पर्वत की विशेषताओं को प्रभावित करते हैं। मूलतः अंगुलियाँ पाँच प्रकार की होती हैं, जो कि उनके शेप के अनुसार होती हैं।

1. चौकोर अंगुलियाँ

ऐसे लोग नियम को मानने वाले होते हैं। अपने काम के प्रति गंभीर होते हैं, तार्किक होते हैं और निर्णय लेने में माहिर होते हैं। ऐसी अंगुलियाँ कम देखने में आती हैं। ऐसे लोगों में कुछ न कुछ प्रतिभा अवश्य होती है। इन्हें एनजी वातावरण से सही मात्रा में प्राप्त होती है।

2. चमसाकार अंगुलियाँ

ऐसे लोग ऊर्जा से भरपूर होते हैं, परन्तु थोड़े आवेगी होते हैं। उनमें आत्मविश्वास होता है तथा ऐडवेंचर पसंद होते हैं। खेल जगत में ऐसी अंगुलियों वाले खिलाड़ी ज्यादा मिलते हैं।

3. कोन के आकार वाली अंगुलियाँ

ऐसे लोग संवेदनशील होते हैं, इन लोगों पर दूसरों का प्रभाव जल्दी पड़ता है। ऐसे लोग अपने दिल की भावनाओं से ज्यादा चलते हैं तथा कलाप्रेमी होते हैं।

4. नुकीली अंगुलियाँ

ऐसे लोगों पर वातावरण का काफी प्रभाव पड़ता है, ऐसे लोग कल्पना लोक में विचरण करने वाले होते हैं। इनमें अतीन्द्रिय ज्ञान क्षमता होती है। अंगुलियाँ नुकीली होने पर वातावरण से एनर्जी ग्रहण करती हैं, जो जातक को ज्यादा संवेदनशील बनाती हैं। इनका स्वभाव जल्दी नर्वस होने का रहता है। जहाँ एक ओर कलात्मक कार्यों के लिए यह आकार अच्छा है, वहीं व्यवसाय के लिए यह नुकसान दायक होता है।

5. गोलाई लिए हुई अंगुलियाँ

यह एक सामान्य प्रकार है, ऐसे लोग परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को ढाल लेते हैं। सोशल होते हैं। एक प्रकार से ऐसे लोग संतुलन बनाकर चलते हैं। ज्यादातर लोगों की अंगुलियों के प्रकार इसी श्रेणी में आते हैं।

अंगुलियाँ हथेली में किस तरह व्यवस्थित हैं

यदि हाथ में अंगुलियाँ अपने आधार पर एक सीध में हैं तो व्यक्ति में कामनसेंस अच्छा होता है। वह संतुलित होता है तथा जीवन में उसका उद्देश्य स्पष्ट होता है। ऐसे लोग सफल होते हैं, जबकि अंगुलियाँ ऊपर नीचे ज्यादा है तो व्यक्ति के जीवन में संघर्ष ज्यादा रहता है।

जीवन में अचानक मिलने वाली भौतिक व आर्थिक सफलता के ज्योतिषीय सूत्र : कृष्णमूर्ति पद्धति

ज्योतिर्विद डॉ. निशा शर्मा

वैश्वीकरण के इस समय में सांस्कृतिक, तकनीकी और जीवन मूल्यों में स्वीकारता और सामन्जस्यता बनाने का प्रयास चल रहा है। काल की नियति, निरंतर परिवर्तन ही है और काल के साथ सामंजस्यता स्थापित करने के लिए तो प्रकृति स्वयं ही सहयोग करती है। भौमिक और वातावरणीय बदलाव के साथ-साथ, व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक स्तर में भी आश्चर्यजनक बदलाव आ रहे हैं।

वैश्वीकरण से बदलते हुए वर्तमान युग में, युवावर्ग अनेकानेक चुनौतियों और प्रतिस्पर्धाओं के दवाब व मानसिक पीड़ा से गुजर रहे हैं। इनकी शारीरिक क्षमता व मानसिक सहनशीलता भी प्रभावित होती जा रही है। कोई भी व्यक्ति भौमिक उन्नति के जिस भी पायदान पर है, वहां संतुष्ट नहीं है। अपने से ऊपर की तरफ देखकर भौतिक सम्पन्नता के साथ और भी ऊपर जाने की होड़ रखता है। एक अन्य दृष्टिकोण से देखा जाए तो एक तरह से बहुत अच्छी बात है! हर व्यक्ति की भौतिक उन्नति करने की सोच के कारण ही समाज और देश उन्नति करते हैं।

आइये जानते हैं कि ज्योतिष की मदद से यह कैसे जाना जा सकता है कि किसी व्यक्ति विशेष की कुंडली में वो कौन से योग होते हैं जो अचानक ही उसको ऐसे अवसर मिलते हैं जो फर्श से उठाकर तरक्की के अर्श पर पहुंचा देते हैं या फिर इसके विपरीत भी, अचानक ही अर्श से सीधा फर्श पर पटक देते हैं। मानव जीवन में उन्नति के यह योग केवल आर्थिक ही नहीं होते बल्कि आध्यात्मिक उन्नति, विशेष योग्यताओं से मानसिक उन्नति, उच्च शिक्षा, उच्च पद आदि की प्राप्ति या फिर अचानक ही प्रसिद्धि पा लेना और इन्हीं सबके विपरीत भी।

हम अपने आसपास भी देखते हैं कि बहुत लोगों को मेहनत करने के बाद भी सफलता नहीं मिलती वहीं कुछ लोगों का एक दौर ऐसा आता है कि अचानक ही उनको सफलता मिलती चली जाती है। जो कहते हैं ना, मिट्टी को हाथ लगाते हैं तो सोना बनता चला जाता है। कर्म तो सभी लोग करते हैं लेकिन उनमें से कुछ ही भाग्यशाली लोग होते हैं जिनके साथ वक्त अचानक ही बहुत मेहरबान हो जाता है। तो आज इस सेमिनार के माध्यम से, अपने अनुभव के आधार पर ऐसे ही कुछ ज्योतिषीय सूत्रों को मैं आपके साथ साझा करूँगी। यहां समयसीमा की बाध्यता है अतः केवल

अचानक मिलने वाली भौतिक व आर्थिक सफलता के ज्योतिषीय सूत्रों की उदाहरण कुंडलियों के माध्यम से विवेचनात्मक शोध को संक्षिप्त में प्रस्तुत कर रही हूं।

संज्ञान है कि सदैव ही देश, काल, पात्र और परिस्थितियों को धयान में रखते हुए ज्योतिषीय विश्लेषण करने का वैदिक विधान है ।सर्व विदित है कि किसी भी व्यक्ति की कुंडली का विश्लेषण करते समय प्रथमतः लग्न और लग्नेश की स्ट्रेंथ, फिर उसकी मानसिक क्षमता और बौद्धिक क्षमता का आकलन करना आवश्यक होता है। लग्न भाव व लग्नेश, मानसिक क्षमता के लिए चतुर्थ भाव व चंद्र का विश्लेषण विशेष है। और बौद्धिक स्तर बुध और गुरु एवं तृतीय,पंचम व नवम भाव का विश्लेषण करते हैं। कुंडली के सभी भावों व ग्रहों की प्रत्येक घटना में अपनी-अपनी भूमिका होती है। परंतु यहां मैं केवल मुख्य बिंदुओं पर ही ध्यान केंद्रित करूँगी।

कुंडली में 4,8,12 भाव को मोक्ष त्रिकोण माना गया है। मोक्ष का मतलब पूर्णता को प्राप्त कर लेना है। और पूर्णता की परिभाषा भी आत्मनिष्ठ व व्यक्तिपरक है। फिर भी हम जानते हैं कि पूर्णता को पाने के लिए तो तपना होता है। व्यक्ति को तपाने की तीव्रता क्रमशः 4,8,12 भावों की होती है।

4, 8, 12 भावों के अनेक कारकत्वों के साथ सर्वाधिक चुनौतियां भी इन्ही भावो के पास हैं। अति तीव्रता के रोग, हानि, अपमान, दुर्घटना, अवसाद, गहन दुख, बीमारियां, मृत्यु और मृत्यु तुल्य कष्ट अस्पताल में भर्ती होना, एकाकी, निर्जन वैराग आदि अनेक नकारात्मकता इन्हीं के अंदर समायी हुई है। जिनको ज्योतिष में क्रमशः तालाब, गहरा कुआं और समुद्र के समान परिमाणात्मक उपाधि दी गई है।

जीवन में अचानक होने वाली किन्ही भी घटनाओं के लिए इन्ही मोक्ष भावों को जिम्मेदार माना गया है। क्योंकि ये मोक्ष त्रिकोण ही व्यक्ति के जीवन के परिवर्तन के भाव हैं।

जीवन में अचानक मिलने वाले आर्थिक सफलता या आर्थिक हानि के ज्योतिषीय सूत्र-विश्लेषण को निम्न महत्वपूर्ण बिंदुओं के द्वारा समझ सकते हैं;

1. कुंडली लगन को कष्ट देने वाले या लग्न को खत्म करने वाले 8 और 12 भावों को मुख्य माना गया है । इसी सिद्धांत पर यह प्रत्येक भाव के बारे में सत्य है। जीवन में तकलीफ देने का भाव आठवां है, तो आठवें भाव को अथवा आठवें भाव की क्षमताओं को नष्ट कर देने वाले भाव -आठवें से आठवां और आठवे से बारहवां भाव यानी कि तृतीय एवं सप्तम भाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । वैसे ही द्वादश भाव को कमजोर कर देने वाले

भाव- द्वादश का अष्टम अर्थात सप्तम भाव होता है और द्वादश का द्वादश अर्थात एकादश भावों की भूमिका मुख्य रहती है। अन्य ग्रह और भावों की भूमिका सहयोगी होती है।

2. 8वे भाव के सब लॉर्ड का संबंध, अपने नक्षत्र लॉर्ड और सब लॉर्ड के द्वारा अगर 2 3 7 10 11 के साथ बनता है तो जीवन में अचानक ही धन प्राप्ति के योग होते हैं। शुक्र , गुरु बुध ग्रहों में से किन्ही का सहयोग होना अत्यंत आवश्यक है।

3. 12वे भाव के सब लॉर्ड का संबंध अपने नक्षत्र लॉर्ड और सब लॉर्ड के द्वारा 2 3 7 10 11 के साथ बनता है तो अचानक ही व्यक्ति को बहुत बड़ी मात्रा में धन की प्राप्ति होती है। शुक्र, गुरु, बुध ग्रहों में से किन्ही का सहयोग होना अत्यंत आवश्यक है। लेकिन साथ में व्यय भी अत्यधिक होता है।

4. अगर 8वे भाव के सब लॉर्ड का संबंध अपने नक्षत्र लॉर्ड और सब लोड के द्वारा 12वे, चौथे, छठवे भावों के साथ बनता है तो यह योग व्यक्ति को मानहानि के साथ धन हानि से बर्बाद कर देता है। अर्थात व्यक्ति अर्श से फर्श पर आ गिरता है, धन और सम्मान सब नष्ट हो जाता है। राहु, शनि, केतु जैसे ग्रहों का उपस्थित होना आवश्यक है।

5. 12वे भाव का सब लोड अपने नक्षत्र लॉर्ड व सब लॉर्ड के द्वारा 4, 6, 8भावों के साथ संबंध बनाए और राहु,शनि, केतु, मंगल जैसे ग्रह भी शामिल हो तो व्यक्ति के धन और सम्मान की हानि तो होती ही है साथ में उसका शारीरिक, आर्थिक, व मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। पुनः स्थापित हो जाने की संभावना नहीं होती है।

6. फिर भी, ईश्वर के नाम की आशा है, अवसर है, आशीर्वाद भी हैज विपरीत परिस्थितियों में मन की इनर कोर को स्ट्रैंथ देना बहुत जरूरी है। बिल्कुल वैसे ही जैसे शारीरिक बल और स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए कसरत करते हैं तो शरीर के अंदर मसल्स की इनर कोर को स्ट्रैंथ देते हैं और शरीर मजबूत बनता है। वैसे ही मन को स्ट्रैंथ देने के लिए मन की इनर कोर को स्ट्रैंथ देना जरूरी है। मन चूँकि स्थूल नहीं है, यह अदृश्य व सूक्ष्म है तो इसको स्ट्रैंथ भी सूक्ष्म के द्वारा ही दी जा सकती है। दान, सहयोग, पूजा, प्रार्थना, योग, प्राणायाम के द्वारा ब्रह्मांड की उन अदृश्य इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव्स और इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एनर्जी के साथ, मन का संतुलन स्थापित करने का प्रयास करना ही चाहिए जहां शरीर की सीमा खत्म हो जाए। यहां सब करने से पंचम-नवम भाव क्रियाशील हो जाने पर मन की दुर्बलता नष्ट होकर, व्यक्ति में नई जीवनी शक्ति भर जाती है।

अब उदाहरण कुंडलियों के माध्यम से इसको समझते हैं;

उदाहरण क्रमांक प्रथम

इस कुंडली मे केवल 8वे एवम 12वे भावों से ही संक्षिप्त विश्लेषण करेंगे

1. 8वे भाव के सब लोड बुध 6वे भाव में बैठे हैं बुध, राहु के नक्षत्र में है जो स्वयं 7 9 3 10 के सूचक हैं। राहु मंगल और शुक्र के प्रतिनिधि भी हैं। पुनः 3 5 7 के सुचक हैं। प्रथम नियम के अनुसार 8वे भाव का शमन हो रहा है।

2. 12वे भाव का सब लोड शुक्र है और शुक्र गुरु के नक्षत्र में है केतु के सब में है केतु स्वयं शुक्र और गुरु के प्रतिनिधि हैं गुरु 6 4211 भावों के दृढ़ सूचक हैद्ध केतु 4 3 5 8 के सूचक हैं। केतु, शुक्र और गुरु के माध्यम से पुनः 6 4 2 11 5 8 7 जैसे भावों के सूचक है। अतः यहां दूसरे नियम के अनुसार 7 और 11 भावों के साथ सभीउन्नति कारक भाव दिखाई देते हैं। इनमें सभी भाव लग्न के लिए सकारात्मक है और 8वे और 12वे भावों

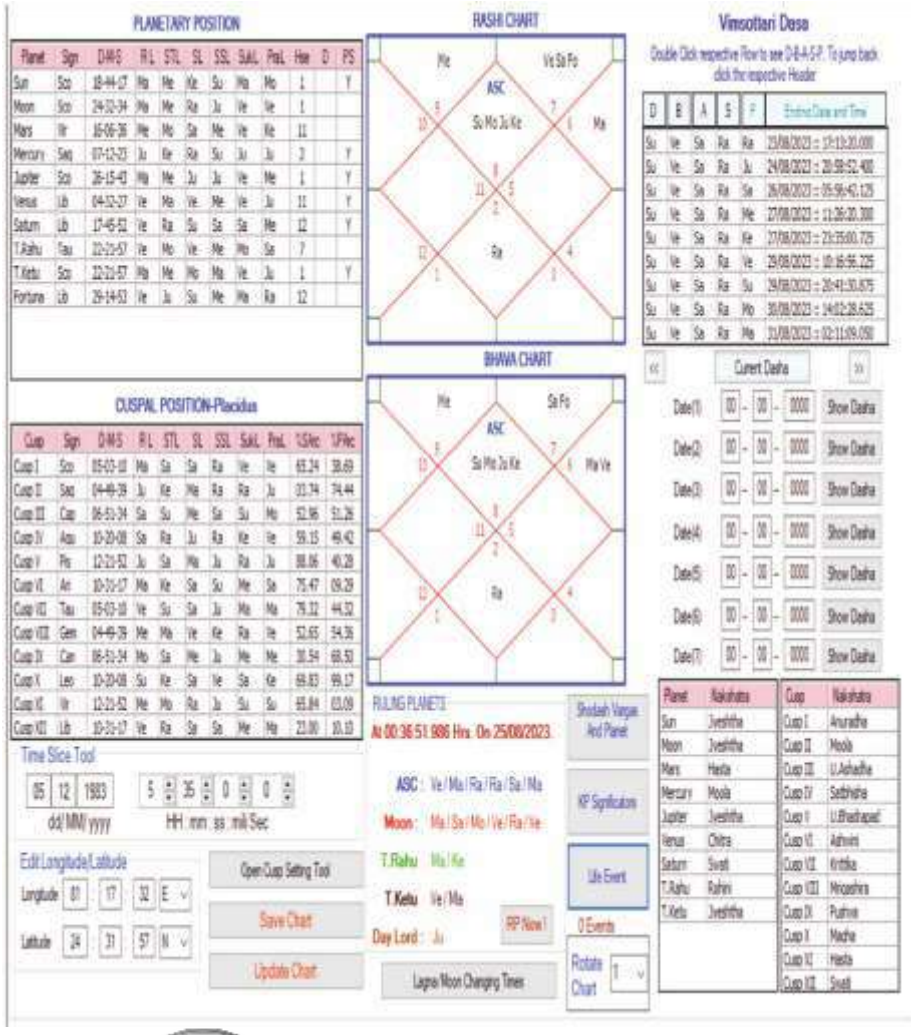

के लिए नकारात्मक हैद्य बुध, गुरु, शुक्र, राहु जैसे सभी वृद्धि कारक आवश्यक ग्रह आपस में संबंध बनाए हुए हैं। इन व्यक्ति ने अपने प्रारंभिक युवा जीवन में अनेक साल तक तृतीय श्रेणी की नौकरी की। बुध की महादशा और चंद्र की अंतर्दशा में अचानक ही इनके जीवन में ऐसे अवसर आते चले गए कि आज अनेक कॉलेज, यूनिवर्सिटी न केवल देश मे वरन विदेश में भी इनका बिजनेस विस्तार लिए हुए हैं।

उदाहरण क्रमांक द्वितीय

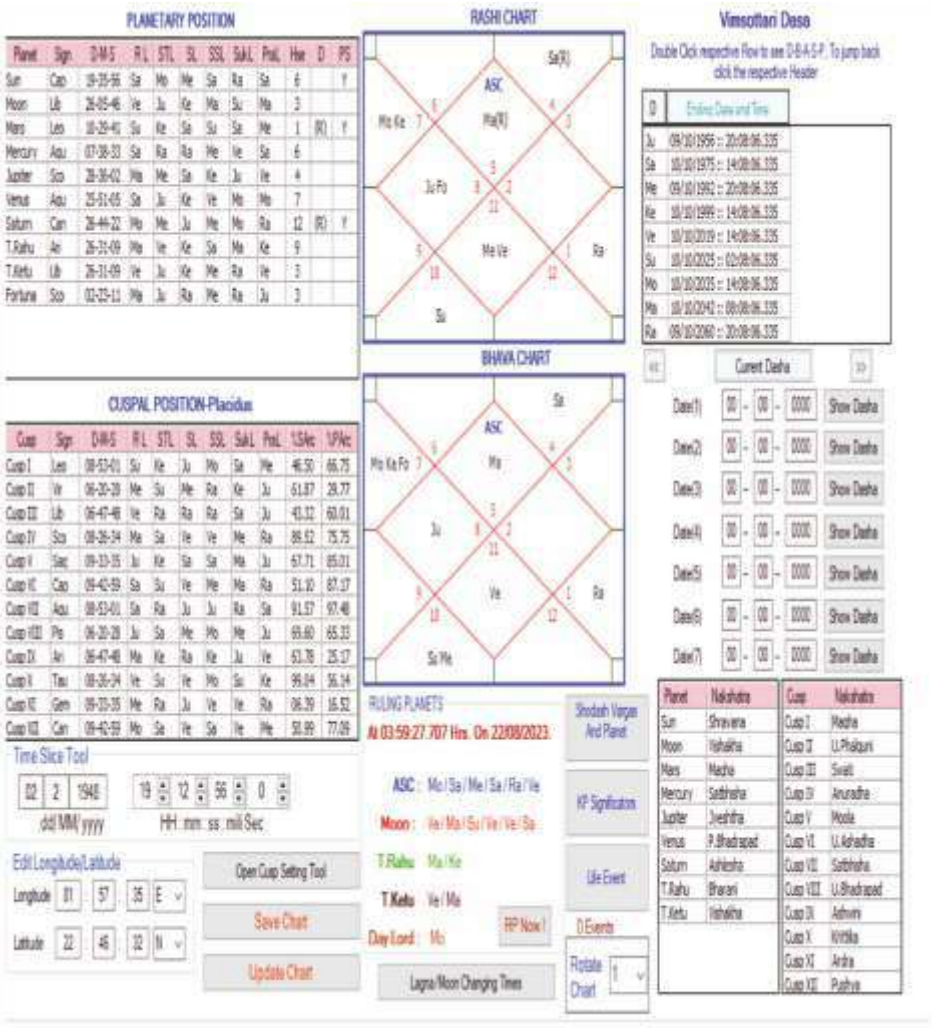

इस कुंडली में भी केवल 8 वे और 12वे भाव का ही संक्षेप में ही विश्लेषण करेंगे और व्यावसायिक व आर्थिक सफलता चेक करेंगे-

1). 8वे भाव के सब लोड शुक्र है। शुक्र, मंगल के नक्षत्र में है। मंगल 1, 11, 9, 1, 6 को सूचित कर रहे हैं। शुक्र के ही सब में है। और शुक्र 11, 1,6,7, 12 को सूचित कर रहे हैं और अनटेनन्टेड होकर तीसरे लार्ड शनि जो स्वंय भी मजबूत हैं, उनके साथ युति बना रहे हैं। 11वे भाव में हैं। यहां 8वे भाव सभी इंप्रूविंग भावों को दिखा रहा है । यहां प्रथम रूल के अनुसार 8वे हाउस का सब लोड अपने 4, 8, 12 से कनेक्ट हो रहा है। मंगल के द्वारा स्वयं से चौथे भाव से, शनि के द्वारा तृतीय भाव यानी कि अपने से आठवां भाव और शुक्र के द्वारा अपने से 12वीं भाव से कनेक्ट हो रहा है। अतः आठवे भाव का शमन हो रहा है और लग्न को भौतिक सफलता देने वाले सभी भावों से कनेक्टेड है।

2). अब 12वे भाव को देखते हैं। 12वे भाव का सब लोड शनि ही है। शनि स्वयं ही स्ट्रांग होकर 12वे भाव में बैठा है। मेरे अनुभव के अनुसार भाव में बैठा हुआ ग्रह उस भाव का अतिरिक्त सब लोड की तरह व्यवहार करता है। शनि, राहु के नक्षत्र में है जो कि 12वे से 8वे होकर, 7वे भाव में बैठा है और 1,7,9, भाव को सूचित कर रहा है। शनि, सूर्य के सब में है, जो 2, 1,8,11 10 भाव को सूचित कर रहा है। यह भी लग्न के लिए उन्नतिकारक भावो के साथ संयोग बनाते हुए अपने से 12वे भाव को दर्शाता है।

यह जातिका प्रोफेशन से यह डॉक्टर है। लेकिन अचानक ही जीवन में कुछ अवसर मिले और अचानक ही व्यावसायिक लोगों से संपर्क बढ़े। व्यवसाईयों के साथ जुडी और राजनीति में एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में उभर कर, बहुत ही कम समय में अत्यधिक आर्थिक सफलता हासिल की।

व्यक्ति के जीवन में अत्यधिक अच्छे, कम अच्छे और खराब सभी तरह के मिलने वाले फल और घटनाएं कुंडली के किसी ना किसी भाव के अधिकार क्षेत्र में होते हैं। इनका लाभ लगन को यानी व्यक्ति को स्वयं को मिलता है। प्रसन्नता या परेशानी दोनों का अनुभव लग्न के लिए ही रहेगा। परंतु हर भाव का अपने आप में एक स्वतंत्र अस्तित्व भी है। जो भी घटनाएं या फल जिस भाव में है, अगर वह भाव अपने से 2, 3, 6,10,11 वृद्धि कारक भावों से जुड़ेगा तो वह विशेष फल, उत्तम कोटि का होगा और उस मूल भाव को कमजोर कर देने वाले 4,8, 12 भावों से जुड़ेगा तो मूल भाव के फलों को नष्ट या कमजोर कर देने वाला होगा ।

शब्द- सीमा की बाध्यता होने के कारण अपनी बात को कहने के लिए मैंने यहां केवल दो उदाहरण कुंडलियों के माध्यम से अपने ज्योतिषीय अनुभव के सूत्र को आप सबके साथ साझा किया है। अब आप सभी से निवेदन है कि कृपया इस सूत्र का अन्य कुंडलियों पर लगाकर परीक्षण करें और मुझे भी इस सूत्र की सत्यता का संज्ञान दें।

दशम भावः पशु चिकित्सक योग

कर्नल डॉ. नरेश कुमार सोनी

दशम भाव से ऋषियों ने सब कर्मों के फल की प्राप्ति का विषय कहां है। वह शुभ, अशुभ ग्रहों की दृष्टि योग तथा राशि और ग्रहों के स्वभाव तथा बल के अनुसार ही समझना चाहिए। दशम भाव दो केन्द्रो (चतुर्थ व सप्तम) से अधिक बाली भाव है व्यवसाय का विचार करते समय दशम भाव से दशम भाव सप्तम-सप्तम भाव से भी व्यवसाय का विचार किया जाता है। दशम भाव दशमेश, सप्तम भाव सप्तमेश, उनमें स्थित ग्रह ग्रहों की युक्ति एवं उन पर ग्रहों की दृष्टि का व्यवसाय निर्धारण में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

जब हम डॉक्टर बनने के योग की बात करते हैं तो हमें औषधि,योग, अस्पताल, शल्य चिकित्सा आदि विषयों से संबंधित ग्रहों, राशियों एवं नक्षत्रों के दशम भाव पर प्रभाव के बारे में सोचना होगा।

पशु चिकित्सक बनने के लिए उपरोक्त विषयों के अलावा पशु पक्षियों से संबंधित ग्रह, राशियों एवं नक्षत्रो का दशम भाव पर प्रभाव पर भी अनुसंधान करना आवश्यक है।

मेष राशि - मंगल मेष राशि का स्वामी है जो साहस, ऊर्जा एवं उद्यम का प्रतीक है। दंत चिकित्सक, चिकित्सक मस्तिष्क के सर्जन पर इसका प्रभाव होता है तथा सेना व पुलिस से संबंध बनाता है।

वृष राशि- शुक्र वृष राशि का स्वामी है, इसका संबंध आइसक्रीम,दूध ,दही, पनीर डेयरी आदि व्यवसायो से होता है।

मिथुन राशि- बुध ग्रह मिथुन राशि का स्वामी है। यह बुद्धि का कारक है। अध्यापक, व्यापारी, रेलवे, एयरलाइंस डॉक्टर के पेशे से इसका संबंध रहता है।

कर्क राशि- चंद्र ग्रह कर्क राशि का स्वामी है। यह अस्पताल का कार्य, डेयरी, दूध ,दही, परिचारिका एवं डॉक्टर के रोजगार में सहायक होता है।

सिंह राशि- इसका स्वामी ग्रह सूर्य होता है। दवाई एवं रसायन, औषधि, वन से उत्पन्न जड़ी बूटी पर आधारित औषधि बनाने वाला होता है। सूर्य औषधि का कारक ग्रह है।

कन्या राशि- इस राशि का स्वामी बुध ग्रह है। डॉक्टर , मनोचिकित्सक के लिए बुध ग्रह का संबंध होता है।

तुला राशि- शुक्र ग्रह का संबंध पशुओं से होता है, मादा पशुओं के लिए चंद्र या शुक्र ग्रह से विचार किया जाता है।

वृश्चिक राशि- वृश्चिक राशि एक जल तत्वीय राशि है इसका संबंध नर्स, केमिस्ट, डॉक्टर, दांत के डॉक्टर, विष या विष पर आधारित औषधीया, रसायन द्रव्य पदार्थ से संबंधित रोजगार से होता है।

धनु राशि- धनु राशि का स्वामी गुरु होता है। इसका संबंध घुड़सवारी एवं गाय से होता है।

मकर एवं कुंभ राशि- इसका स्वामी ग्रह शनि ग्रह है हिंसात्मक पशु जैसे कुत्ते बिल्ली एवं भैंस का संबंध शनि ग्रह से होता है।

मीन राशि-मीन राशि का स्वामी गुरु होता है। पानी से संबंधित कार्य, डॉक्टर, नर्स एवं गाय से संबंधित कार्यों से इसका संबंध होता है।

ग्रहों के आधार पर रोजगार विचार अत्यंत गंभीर नहीं बल्कि जटिल भी है। क्योंकि ग्रह केवल 09 ही है और रोजगार अनेक है।

पशु चिकित्सक विभिन्न प्रकार के पशु पक्षियों का इलाज करता है। हर प्रकार के पशुओं का प्रतिनिधित्व अलग-अलग ग्रह करते हैं। पशुओं का कारक ग्रह शुक्र है। मादा पशुओं के लिए चंद्र या शुक्र कारक ग्रह है। हिंसात्मक पशुओं जैसे कुत्ते बिल्ली का कारक ग्रह शनि है। गाय का दूध, घी पीलापन लिए होता है एवं गाय का संबंध गुरु ग्रह से होता है। वैसे दूध ,दही , घी का संबंध चंद्र ग्रह से होता है। बकरी का संबंध राहु ग्रह से होता है। कुत्ते का संबंध केतु और क्रूर ग्रह शनि से जोड़कर देखा गया है।

कृषि एवं गौ पालन- यदि चतुर्थेश (भूमिपति) वह मंगल (भूमिपुत्र) बली होकर केंद्र त्रिकोण या एकादश लाभ भाव में हो तथा दशमेश की युति/दृष्टि चंद्रमा व शुक्र से हो तो जातक कृषि कार्य एवं डेयरी से रोजगार पता है।

नक्षत्र

जन्म नक्षत्र और कर्म नक्षत्र के अनुसार आजीविका, व्यापार चुनने में सफलता जल्दी मिलती है।

अश्विनी नक्षत्र - (क्षेत्र 0 डिग्री से 20कला मेष राशि, नक्षत्र स्वामी केतु)

व्यवसाय-पुलिस, सेना, डॉक्टर, चिकित्सा, शल्योपचार , घोड़े का व्यापारी एवं दांतों का डॉक्टर

भरणी नक्षत्र- (क्षेत्र 13 डिग्री 20 कला से 29 डिग्री 40 कला, मेष राशि, नक्षत्र स्वामी-शुक्र)

व्यवसाय- पशुपालन, पशु चिकित्सालय, कसाई खाना, चर्म उद्योग, सर्जन ,मेटरनिटी हॉस्पिटल ,रोगाणु विशेषज्ञ।

कृतिका द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ चरण (क्षेत्र 0 डिग्री से 10 डिग्री वृषभ राशि तक, नक्षत्र स्वामी सूर्य)

व्यवसाय-सरकारी नौकरी, सरकारी क्षेत्र, दवा विक्रेता, मेडिकल डिपार्टमेंट।

रोहिणी नक्षत्र- (क्षेत्र 10 डिग्री से 23 डिग्री 20 कला, वृषभ राशि तक, नक्षत्र स्वामी चंद्र)

व्यवसाय- डेयरी फार्म, दूध आइसक्रीम, चर्मकार

मृगज़िरा पूर्वार्ध (क्षेत्र 23 डिग्री 20 कला से 30 डिग्री तक, वृषभ, नक्षत्र स्वामी मंगल)

व्यवसाय- चर्म उद्योग, पशु चिकित्सक, पशुपालन

आश्लेषा (क्षेत्र 16 डिग्री 40 कला से 30 डिग्री कर्क राशि तक, नक्षत्र स्वामी बुध)

व्यवसाय-नर्स, जड़ी बूटी ,विष रोग के विशेषज्ञ।

मधा (क्षेत्र 0 डिग्री सिंह राशि से 13 डिग्री 20 कला सिंह तक नक्षत्र स्वामी केतु)

व्यवसाय- दवाइयों का उत्पादक, सेना, सर्जन, पुलिस, सरकारी नौकरी, वैद्य चर्म रोग की विशेषज्ञ

पूर्वा फाल्गुनी प्रथम चरण (क्षेत्र 13 डिग्री 20 कला से 26 डिग्री 40 कला तक, सिंह राशि में नक्षत्र स्वामी शुक्र)

व्यवसाय- पशु चिकित्सालय, पशुपालन, मांस विक्रेता, कसाई खाना, चमड़ा, खाल सर्जन एवं अध्यापन।

उत्तरा फाल्गुनी प्रथम चरण (क्षेत्र 26 डिग्री 40 कला से 30 डिग्री सिह राशि में नक्षत्र स्वामी सूर्य)

व्यवसाय- सरकारी नौकरी, प्रशासक डॉक्टर केमिस्ट, ड्रगिस्ट, गर्भाधान केंद्र, जच्चा बच्चा अस्पताल, हृदय रोग विशेषज्ञ, नेत्र रोग विशेषज्ञ।

उत्तर फाल्गुनी, दूसरा तीसरा एवं चौथा चरण (क्षेत्र 0 डिग्री कन्या राशि से 10 डिग्री कन्या राशि तक, नक्षत्र स्वामी सूर्य)

व्यवसाय- फिजिशियन, स्वास्थ्य विभाग अस्पताल।

स्वाति नक्षत्र (क्षेत्र 6 डिग्री 40 कला से 20 डिग्री तक तुला राशि में नक्षत्र स्वामी राहु)

व्यवसाय- चर्म उद्योग, रेडियोलॉजिस्ट, सर्जरी के औजार, नर्स, दूध विक्रेता।

अनुराधा (क्षेत्र 3 डिग्री 20 कला से 16 डिग्री 40 कला तक वृश्चिक राशि में नक्षत्र स्वामी शनि)

व्यवसाय- सेना, पुलिस, स्वास्थ्य सेवा कर्मचारी, नर्स, दंत विशेषज्ञ, अस्थि विशेषज्ञ, गुप्त रोग विशेषज्ञ, कसाई खाना।

ज्येष्ठा (क्षेत्र 16 डिग्री 30 कला से 30 डिग्री वृश्चिक राशि में नक्षत्र स्वामी बुध)

व्यवसाय- घुड दौड़, घुड़सवारी, चिकित्सक, शल्य चिकित्सक।

मूल नक्षत्र (क्षेत्र 0 डिग्री से 13 डिग्री 20 कला तक धनु राशि में नक्षत्र स्वामी केतु)

व्यवसाय-वैद्य, डॉक्टर, सर्जन, घुड़दौड़, जड़ी बूटी का व्यापार।

पूर्वाषाढा (क्षेत्र 13 डिग्री 20 कला से 26 डिग्री 40 कला तक धनु राशि में नक्षत्र स्वामी शुक्र)

व्यवसाय-पशु चिकित्सक, अस्पताल संचालक, आयुर्वेदिक दवाइयां।

श्रवण (क्षेत्र 9 डिग्री 10 कला मकर से 23 डिग्री 20 कला मकर राशि, नक्षत्र

स्वामी चंद्र)

व्यवसाय-दूध, द्रव्य औषधियां, आइसक्रीम

घनिष्ठ पूर्वार्ध (क्षेत्र 23 डिग्री 20 कला से 30 डिग्री मकर राशि तक नक्षत्र स्वामी मंगल)

व्यवसाय-ऑर्थोपेडिक सर्जन, पुलिस, पशुपालन

शतभिषा (क्षेत्र 9 डिग्री 40 कला से 20 डिग्री कुंभ राशि में नक्षत्र स्वामी राहु)

व्यवसाय- डॉक्टर

उत्तरा भानुपद-(क्षेत्र 3 डिग्री 20 कला से 16 डिग्री 40 कला मीन राशि तक, नक्षत्र स्वामी शनि

औषधि का व्यापार, हड्डियों का विशेषज्ञ, धर्मार्थ चिकित्सा, मछली पालन।

डॉक्टर बनने के योग

शल्य चिकित्सक

- दशमेश पर मंगल की दृष्टि
-केतु की दशम भाव पर दृष्टि
-दशमेश की मंगल से युति
-मंगल की राहु से युति
-दशम भाव/दशमेश पर राहु/ केतु की दृष्टि या युति

डॉक्टर (एलोपैथी)

-सूर्य एवं राहु की युति
-मंगल का दशम भाव, दशमेश, सप्तम भाव या सप्तमेश पर प्रभाव
-दशम भाव में स्थित ग्रह कृतिका नक्षत्र में
-नवमेश कुंडली में मंगल स्वराशि, उच्च का या वर्गोत्तमी
-मंगल व शनि का संबंध

डॉक्टर आयुर्वेद

-दशम भाव में कर्क राशि
-लग्न-स्वाति नक्षत्र में
-एकादशेश कृतिका नक्षत्र में
-लग्नेश/दशमेश आर्दा नक्षत्र में
-शनि चंद्र एवं मंगल का दशम भाव से संबंध
-षष्ठेश गुरु दशम भाव में स्थित

डेयरी -कृषि ,दूध उत्पादन एवं विक्रय

- पुनर्वसु-4 नक्षत्र में जन्म(जलीय पदार्थ अथवा तरल पदार्थ के विक्रय से आजीविका)
- लग्न नक्षत्र मूल 4 भूमिगत पदार्थों के व्यापार से लाभ
- दशम भाव/दशमेश/सप्तम भाव या सप्तमेश में बुध का प्रभाव तथा बुध पूर्वाषाढ़ा/एक नक्षत्र में (होटल व घी के व्यापार से आजीविका)।
- चंद्र का दशम भाव/ दशमेश/ सप्तम भाव या सप्तेमश पर प्रभाव एवं नवांश कुंडली में चंद्र स्वराशि/ उच्च का या वर्गो - दूध, दही, डेयरी या मिल्क पार्लर से आजीविका।

पशु चिकित्सक (वेटेनरी डॉक्टर)

जातक का शतभिषा 3, पुष्य-2, माघ-3,4, उत्तराषाढ़ा 2,4, रेवती 2,4, कृतिका 4, रोहिणी 1, पूर्वाषाढ़ा 2, चित्रा 2, विशाखा, मूल 2 नक्षत्र जन्म।

दशम भाव में स्थित ग्रहों के नक्षत्र स्वामी शनि, मंगल, केतु, शुक्र, गुरु, राहु, चंद्र।

दशम भाव पर मंगल, शनि, शुक्र, गुरु, राहु, केतु, सूर्य, बुध की दृष्टि।

दशमेश मंगल, शनि, शुक्र, गुरु, बुध।

विभिन्न पशु-पक्षियों का इलाज पशु चिकित्सक करता है। उसका संबंध पशु चिकित्सा के साथ-साथ पशुपालन, डेयरी, दूध, दही, घी के उत्पादन से भी होता है। वन्य पशु, मुर्गीपालन, कसाई खाना, मछली पालन से भी होता है। इसी सभी के लिए अलग-अलग ग्रहों जिम्मेदार होते हैं अतः उन पर विचार करना आवश्यक है।

विवाह के समयकी गणना के सूत्र

ज्योतिर्विद एस.के.ताम्रकार

विवाह की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि जीवन साथी का चयन किस प्रकार किया गया है। तो इस प्रकार यह भी जानने की इच्छा रहती है कि विवाह कब होगा यानी विवाह का समय जानने के क्या पैरामीटर है।

किसी भी जातक की कुंडली में विवाह सम्बंधित एनालिसिस करके उसमें उस समय से रिलेटेड दशाओं को छाँटा जाता है। जो कि विवाह करवाने में सक्षम होती हैं। यह भी सलाह है कि कम से कम 2 दशाओं से विवाह का समय चेक करें ताकि होने वाली चूक कम से कम हो सके।

जैसे- हम विंशोत्तरी दशा को देखते ही हैं साथ ही में जैमिनी चर दशा, जो की काफी सही है उसे भी लगाकर चेक कर लेना चाहिए।

आइए कुछ पैरामीटर के बारे में जान लेते हैं।

1.विंशोत्तरी दशा

विंशोत्तरी महादशा और अंतर्दशा का लग्न कुंडली या नवांश कुंडली में लग्न/लग्नेश या सप्तम/सप्तमेश या उनसे संबंधित ग्रहों से सम्बन्ध-

इस पैरामीटर के अनुसार दोनों दशानाथों की स्थिति, दृष्टि या युति जन्म कुंडली और नवांश कुंडली में दोनों या किसी एक के लग्न/लग्नेश या सप्तम/सप्तमेश या उन भावों में ग्रहों से संबंध अवश्य होने चाहिए। नवांश चार्ट को हमेशा देखें क्योंकि वह जातक की सूक्ष्म कुंडली होती है।

2. चर अंतरदशा

चर अंतर्दशा का संबंध दाराकारक नवांश, दारापद, उपपद और नवांश कुंडली या लग्न कुंडली के लग्न/लग्नेश या सप्तम/सप्तमेश से बनना चाहिए।

3. विवाह सहम पर गोचर के गुरु का प्रभाव देखें

विवाह सहम कुंडली में एक संवेदनशील बिंदु है जिसे लग्नेश और सप्तमेश के भोगांशो को जोड़कर उसमें से 360 घटाकर प्राप्त किया जाता है। वह राशि विवाह सहम कहलाती है। कई बार किसी व्यक्ति को देखकर ऐसा लगता है कि प्रभु ने आपके लिए ही बनाया है। विवाह सहम पर दृष्टि डालकर गुरु बृहस्पति यही भाव पैदा करते हैं।

जैसे- लग्नेश की डिग्री - 4 -10ए-15%
सप्तमेश की डिग्री 10 -05ए-10%
= 14 -15ए-25%
- 12
= 2 -15ए-25%

यह तीसरी राशि याने मिथुन में विवाह सहम है।

4. दोहरा गोचर

गुरु एवं शनि का गोचर में रहते समय लग्न/लग्नलग्नेश या सप्तम/सप्तमेश पर प्रभाव यानी दोहरा गोचर होना चाहिए।

गुरु - काल पुरुष की कुंडली के धर्माधिपति हैं।

शनि - काल पुरुष की कुंडली के कर्माधिपति हैं।

यानी कालरूपी शनि और जीवनरूपी गुरु की अनुमति मिले बिना जीवन में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नहीं हो पाता है। इसलिए विवाह के लिए इन दोनों का दोहरा गोचर लग्न/लग्नेश या सप्तम/सप्तमेश को प्रभावित जरूर करना चाहिए।

5. जन्म जन्म का संयोग जीवन साथी मिलन

इस पैरामीटर में यह देखते हैं कि विवाह के तुरंत पहले क्या लग्न कुंडली के लग्नेश-सप्तमेश ने गोचर में कोई संबंध बनाया है। पृथ्वी पर दो शरीरों का मिलन होने से पहले आकाश में लग्नेश से सप्तमेश आपसे मिलन करके इस बात को सार्थक कर देते हैं कि जोड़ियां स्वर्ग में बनती है।

6. गोचर के गुरु का जन्म कालीन शुक्र या मंगल पर प्रभाव

इस पैरामीटर के तहत विवाह के समय गोचर का गुरु पुरुष जातक के जन्म कालीन शुक्र को और महिला जातक की कुंडली में मंगल को प्रभावित करता है।

7. सूर्य व अन्य ग्रहों का लग्न या सप्तम के आसपास होना

इसका अर्थ यह है कि विवाह के दिन मंडप में तमाम देवता रूपी ग्रह आकर आशीर्वाद प्रदान करते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि आमतौर पर उस दिन अधिकांश ग्रह लग्न या सप्तम भाव के आसपास केंद्रित हो जाते हैं। सूर्य की ऐसी स्थिति की पुष्टि दरअसल विवाह का माह निकालने में हेल्प कर सकती है।

8. लग्नेश और और सप्तमेश की स्थिति

विवाह के दिन या उसके तुरंत पहले लग्नेश सप्तम भाव में या सप्तमेश लग्न से गोचर करके अपनी सहमति प्रदान करता है।

9. चंद्र की भूमिका

विवाह के दिन सर्वाधिक तीव्रगति से चलने वाले चंद्रमा की क्या भूमिका रही है। चंद्रमा ज्यादातर विवाह का इवेंट टाइम विवाह तिथि तक निकालने में काम आता है।

फलित ज्योतिष में ज्योतिषी का दायित्व

अरविंद पाण्डेय

> *यह स्पष्ट है ज्योतिष की हम सेवा नहीं कर रहे हैं बल्कि ज्योतिष हमारा ज्ञानार्जन कर रहा है। ज्योतिष प्राचीन काल से है और सदा रहेगा जब तक चांद सितारे और भूगोल खगोल विद्या रहेगी। ज्योतिष जीवन्त रहेगा... ।*

हम सब फलित/गणित/सिद्धांन्त के ज्ञानके ज्योतिषी है। अधिकांशतः ज्योतिषी अपने शौक के खातिर हैं कुछ अपने यश के खातिर हैं और कुछ व्यवसाय के खातिर परंतु सभी का उद्देश्य ज्योतिष के ग्रहों का मानव जीवन तथा प्रकृति पर होने वाले संबंध का आकलन करना है यह स्पष्ट है ज्योतिष की हम सेवा नहीं कर रहे हैं बल्कि ज्योतिष हमारा ज्ञानार्जन कर रहा है। ज्योतिष प्राचीन काल से है और सदा रहेगा जब तक चांद सितारे और भूगोल खगोल विद्या रहेगी। ज्योतिष जीवन्त रहेगा... ।

हमें क्या करना चाहिए

1 विषय के प्रति वफादार रहे

यदि हम फलित ज्योतिष करते हैं तो हमें फलित विवेचन करने में वफादार रहना चाहिए व्यक्तिकी आभा को देखकर फलित नहीं करना चाहिए।

2 ज्ञान की निरंतरता रखे

हमेशा अपने ज्ञान को परिपक्व रखना चाहिए ग्रहों नक्षत्रों के गोचर भ्रमण और उसके होने वाले प्रभाव का सदैव अध्ययन करते रहना चाहिए

3 सत्यवक्ता होना चाहिए

ज्योतिष फलित करने में हमेशा सत्य का पक्षधर होना चाहिए यदि कोई कन्या का पिता आता है और कहता है कि साहब लड़के से पत्रिका में मिल जाए ऐसी नकली पत्रिका बना दीजिये ऐसा कदापि नहीं करना चाहिए। ग्रह जो बता रहे हैं उसे स्पष्ट रूप से बोलना चाहिए।

4 विश्वासघात और अंध विश्वास नही करे

त्रुटिपूर्ण फलित बताकर पृछ्क से उपाय के रूप में धन ऐंठने का कार्य नहीं करना चाहिए। व्यर्थ के दोष बता कर मारक समय, किसी द्वारा कालेजादू करने का शक बताकर पूजा करके धन ऐंठने वालों नें इस विषय को बदनाम किया है ऐसी भ्रांतियों से अपने आपको दूर रखें और समाज को भी आगाह करें।

5 अपने आचरण शुद्ध और सदाचारी रखे

यदि हम चरित्रवान रहेंगे तो निश्चित रूप से समाज हम पर भरोसा करेगा और हमारी आचरण की शुद्धि को देखकर समाज के लोगों को भरोसा बढ़ेगा और यह भरोसा ज्योतिष के प्रति एक बड़ा योगदान होगा।

6 धन के लोलुप नही रहें

कोई भी व्यक्ति अगर हमारे पास अपनी समस्या लेकर आता है तो निश्चित रूप से परेशान व्यक्ति ही आता है उसे सहयोग और सही मार्गदर्शन देने का कार्य करना चाहिए जिससे कि ग्रहयोगों से परेशान व्यक्ति कोई एक मार्गदर्शक के रुप में ज्योतिषज्ञ सिद्ध हो सके जिस प्रकार की बीमार होने पर व्यक्ति चिकित्सक के पास जाता है उसी प्रकार मानसिक रूप से और आर्थिक रूप से परेशान व्यक्ति ग्रहों के चिकित्सक अर्थात ज्योतिषी के पास इस विश्वास के साथ उपस्थित होगा कि उसे सही मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

7 ईश्वर का भवत होना चाहिए

अपने कार्य को करने के लिए आत्म बल की वृद्धि हेतु सदैव ईश्वर भक्ति जरूरी है। इसके कारण व्यक्ति में ईमानदारी और चरित्रवान होने की आदत रहती है जिससे कि विषय के प्रति अपने आप वफादार होने लगता है।

8 स्वप्रशंसा से दूर रहे

फलित करता और गणित करता विद्वान को अपनी प्रशंसा से दूर रहना चाहिए आने वाले व्यक्ति के बारे में उसकी समस्या को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए ना कि उसे अपनी प्रशंसा करके आकर्षित नहीं करना चाहिए। पहले किसी और को बताई गई भविष्यवाणी जो सही निकली हो उसे आने वाले व्यक्ति को बता कर अपनी अनावश्यक प्रशंसा नही करना चाहिए यह कार्य दूसरो पर छोड़ना चाहिए जिनकी भविष्यवाणी सही गई हो वे स्वयं आपकी प्रशंसा करेंगें अतः अपना स्वयं का और आने वाले व्यक्ति का समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

9 गुण ग्राह्यता की आदत रहना चाहिए

ज्ञान पर हर व्यक्ति परिपक्व हो यह जरूरी नहीं है ज्योतिष का ज्ञान एक अथाह समुद्र है जिसमें से मोती ढूंढते रहने की आदत होना चाहिए गुण और ज्ञान कहीं से भी प्राप्त हो उसे सदा ग्रहण करने का प्रयास सदा करते रहना चाहिए। संत तुलसी ने कहा है कि

सीमिटी सीमिटी जल भरे तलावा
जिमी सद्गुण सज्जन पह आवा

कहने का आशय है कि थोड़ा थोड़ा ज्ञान यदि विद्वानों से प्राप्त होता रहेगा तो व्यक्ति स्वयं विद्वान हो जाता है जिस प्रकार की थोड़े-थोड़े जल से तालाब भर जाता है।

एक अच्छे और कुशल ज्योतिषी तथा ज्योतिष की सेवा करने के लिए उपरोक्त 9 बिंदु मेरे अनुभव से मैंने व्यक्त किए हैं यदि इसके अतिरिक्त और कोई ज्ञानामृत बिन्दु की आवश्यकता हो तो विद्वानों से सादर अनुरोध है सभी विद्वानों को सादर नमन..

VargaChakras (kundalis) in Jyotish Classics?

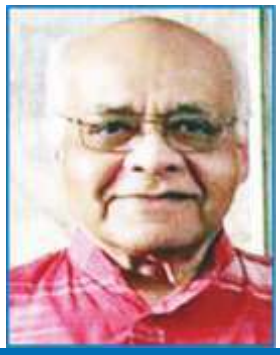

Rohiniranjan

PREAMBLE AND BACKGROUND

Recently on one of the many jyotish lists on internet, spirited discussions took place for examining the status of a variety of jyotish parameters, including charadasha, karakamsha. As characteristically happens, some of the discussants began to branch into other side discussions which really had nothing to do with the original questions or topics and some even became a bit emotional, as also often happens on the internet where attention spans of days and weeks are required in order to get to the bottom of things and where sometimes a topic is being discussed on many different boards. However, nothing was really resolved, and some of the regulars began expressing their frustrations about these topics coming up again and again and directing people to archives etc. Unfortunately, the yahoo forums/fora are such that only limited searching of past messages is possible without losing all hair, and the archives sometimes are maintained on another yahoo site so this does not help matters when all one wants is to get a quick summary of what others are using and if possible their reasons, why! This latter usually brings out more gall than good information even though the intention of the person posing the question was noble and not confrontational.

Somewhere, along the path, another topic was born which began questioning the use of amshavargakundalis or varga chakras. Now this is something that is utilized in jyotish going back to almost the first memories of even the oldest members in the forum who eventually admitted to such being the case. I myself, though not that senior, have seen horoscopes that were drawn in the century before last where the jyotishi had drawn the rashi chakra and navamsha and dashamsha and so on and more importantly had commented on these charts in his reading. So, at least some individuals had been utilizing varga-charts even a couple of hundred years ago and conceivably perhaps even before those times.

Somewhere during the discussion, in one of the lists, one of the members made available an article in which the author had expressed thoughts to the contrary, i.e., vargas should not be used in a chart format! A *heated* discussion ensued which sidestepped the more important and pertinent matter of the practical merits of using of navamsha varga as a secondary chart. A few individuals asked for proofs in classics that indicates that ancient jyotishis advocated of varga chakras. The discussants emphasized that ONLY rashi chakra must be used and varga placements should only be used for determining the strengths of planets etc. Now, those who have studied BPHS would know, that 16 vargas had been defined by the Sage starting with (and including) rashi or kshetravarga and so on. One of the members brought to all astrologer=s attention that Parashara had described very clearly how to determine bhavas in the rashi chart (ascendant, 10th house and then trisection of the arcs, etc. in Chapter V or BPHS). This was indeed true and a positive step forward in the discussion. There were parallel discussions going on which were rehashing the point that BPHS was not original and was perhaps not even a classic and written by one or a group of "latter day saints'n'sages" [sic!] in jyotish and therefore cannot be treated as a classic. Obviously, there was some support for this as could be similarly expected if someone were to make a comment that jyotish was nothing but a derivative of Babylonian astrology that the army that came with Alexander brought to India. I believe a discussion on that topic is in progress currently somewhere.

To those who were still interested and intrigued by this, there seemed to be two streams of thought prevailing:

a) Only Rashikundalis should be used. Other vargakundalis were the product of corrupted understanding of the classics B which themselves many concur might not have survived in pure form [though some of them have thankfully survived in reasonably good shape!]. Underlying this is

the belief some may harbour that, alike the iceberg, available Jyotish is only 1/10th of the total body while the submerged 9/10th is mostly lost and partly hidden in the secret chambers of paramparas and some of the secret documents that exist but jealously guarded by the custodian clans! I do not know how much of this iceberg conjecture is based on facts and how much is wishful fiction. According to the purists of this stream of thought, vargas MUST only be used as measures of qualitative and quantitative strength of planets and for the consideration of the deities and primal forces those represent BUT not in the form of a horoscope and certainly no serious consideration must be given to aspects and bhava considerations. Just for clarity, they would maintain, for instance, that while the 2nd house lord in navamsha is an important indicator, the fact that it is placed in the 2nd navamsha varga from the navamsha lagna (essentially in 2nd house in navamsha chart) is not significant. Or, for instance, if mars is in aries sign and libra navamsha, and saturn is in gemini sign and libra navamsha, the two planets are not related (though they would be depicted as being conjoined in the same navamsha varga in a navamsha chart).

b) Regardless of whether overtly described or not, the other stream of thinking maintains that vargakundalis have an important role to play in jyotish and possibly are of significant utility in discerning primary mandates matters pertaining to the prescription given by sages. In other words, navamsha chart, for example, would hold a significant sway over matters of marriage and

spouse, while saptamsha chart would be of similar import in the examination of children in a given nativity=s reading. These vargas should be examined in a chart format.

I do not recall anyone in the >camp (b)= saying that the first part of (a) is not correct, namely, the varga positions must be considered, per se, for examination of strength and quality of a planet as prescribed within the jyotish framework. In fact most of them utilized concepts from both (a) and (b) streams. There seemed to be a few other individuals who totally denied the veracity of thought stream (b) and a few were a bit guardedly taciturn about it, perhaps to avoid acrimony and getting ensnared in the controversy. Or perhaps there were some other <unspoken> reasons, known only to them.

WHAT DO THE CLASSICS SAY: While the purists and historians duke it out as to what constitutes a Classic and what not, there seemed to be no significant resistance to accepting BrihatParashara Hora Shastra, described B by a very accomplished and brilliant, jyotishi who is an excellent writer and teacher and a very wise person beyond his years B as ... a remarkably well-preserved and reasonably intact, well-organized compendium of jyotish knowledge. So I spent a few minutes going through it after Chapter 5 (G.C. Sharma's rendition) was brought to our attention as a strong indication of bhavas only being considered in rashi and in none of the other vargas since the Sage had not explicitly stated so. On the surface, this indeed seemed to be the case! However a further stroll into the magnum opus brought me to the chapter on Karakamshas In this Chapter 35 (Karakamshaphalaadhyaaya), BPHS describes the effects of planets that are in 2nd or 5th from karakamsha (sloka 30 31 for instance) and other houses also from karakamsha in subsequent slokas. Additionally, in sloka 33 BPHS mentions about the aspects (drishti) of moon and venus on the 4th from karakamsha and also in sloka 13. The implication is clear and in some details and depth!

Now, here lies the quandary:

BPHS has to the best of my understanding not clarified if the karakamshakundali is to be read in the navamsha arrangement or the rashi arrangement (even though in both cases the karakamsha sign will be taken from the navamsha where AK is placed). Modern jyotishis (including those considered notable) are split over this matter.

This, therefore, will be the deciding factor. If you see planetary arrangements for the karakamsha chart in rashi after finding the seed orientation (atmakaraka in navamsha), then you would say that the above citation in BPHS does not clarify or indicate the use of varga

kundali or of bhavas in sub-rashivargas. On the other hand, if you continue to use the navamsha positions of other planets for the karakamsha examination, then there lies the less explicit (than Chapter 5) but important recommendation that houses matter and should be studied in vargas. By extrapolation, as in the navamsha, so in the dashamsa and the remaining 13 vargas(Rashior kshetravargahaving being unequivocally accepted as suitable for studying houses in a horoscopic manner: Chapter 5, BPHS!). However, there still was no evidence or classical indication for the use of drishtis(aspects) in amshavargakundalis. A case was made about it Ajust not being astronomically correct@ because drishtisare based on angular distances (even though vedicdrishtis are more lax in orbs than their western tropical astrology counterparts, but angle-based all the same). There was more searching that needed to be done, obviously!

At this juncture, someone mentioned that Kalyan Varma, the king turned jyotishi was a reputable source and had dealt with navamshas in a brilliant manner and had not recommended the use of varga kundali. It was indeed a cue from the Universe! My next focus of attention was BSaravali, a text that I absolutely love! Anyways, I recalled something in Saravali that I was a bit bothered by early on during my jyotish learning. Indeed, soon I was looking at Chapters 22 onwards where effects of drishtis between planets were mentioned by Kalyan Varma.

Before I got into it, though, I needed to make sure what a drishti means to jyotishis. Most jyotishis writing in english use the term >aspects= for drishtis, just like their tropical brethren. However, there are some differences. Conjunction is an aspect, however yugma or more specifically yuti (coming together of planets) is not technically a drishti but a state of planetary relationships and association thereof. Several references in Satyacharya=s writings mention AYutoDrishto@ and other grammatical forms of these two terms. Now Satyacharya is economical in the use of words, if nothing else. He would not use two words that mean the same thing next to each other! This then would imply that Yuti (conjunction) is separate from Drishti (aspect) in jyotish parlance. Yuti is not drishti, though the effect or blending influence might be similar. Next, looking into the mathematical consideration of drishti in drigbala, conjunctions do not come into consideration when determining aspect strengths. In fact the planets have to be greater than 2 signs in order to get a aspect strength value (drishtibal). This allows an unambiguous cuff of separation between two planets and yuti or conjunction not getting aspect strength at all. An indirect but important confirmation that conjunction is not meant when ancient jyotishis referred to >drishti=.

How come, then, Kalyan Varma in several shlokas (e.g., Chap. 22, sloka 6, 7, 14 ..., Chap.26, slokas 25, 29, on and on in similar slokas B talks about effects of drishtis (no mention of conjunctions or yutis) between sun and mercury and sun and venus, and mercury and venus? Once or twice could have been a mistake or error committed by a dozing student of Kalyan Varma who was taking dictation (soon after lunch break) but there are simply too many instances there! Now, even a neophyte in astrology would agree that venus and definitely mercury would never get so far from sun to enter into a drishtisambandh! UNLESS, obviously, Kalyan Varma was not referring to the rashi horoscope but also to amshavarga horoscopes! Yes, this makes sense and easy to swallow!!

Putting 2 and 2 together BParashara indicating house relationships in varga charts in the karakamsha examination and Kalyan Varma even more directly and at several places referring to something that can be an arc-distance possibility only in varga charts B are providing firm indication of jyotish classics recommending the use vargas in a kundali, chakra or horoscope form with consideration of bhavas as in rashi as well as aspects, or drishtis!

A good beginning, I say! Now we would all need to study further and find practical applicability for this information. Even more than what has been shown in the past by way of demonstration of use of varga charts in practical jyotish. Not so much to convince a few individuals who would rather hang on to their pegs (the kind that are on the walls for hanging our coats and umbrellas) of comfort and conviction, but to create more light and less smoke in the modern caverns of jyotish. A much admired Jyotishi generally signs off his messages with, AMay Jupiter=s light shine on us@. To that I would like to add, AMaybe we should invite the soul-karaka Sun too B for the modern Jyotish cavern needs all the light it can attract and receive!

U.K. Jha

Hora Traditional method

In an odd sign the first hora of 15 degrees is ruled by the Sun, and the second hora of the last 15 degrees is ruled by the Moon. In an even sign the first hora is ruled by the Moon and the second by the Sun. The drekkanas (ten degrees each) are ruled by the lords of the first, fifth, and ninth lords from it, if it is a movable sign; by the lords of the ninth, first and the fifth houses from it, if it is a fixed sign; and by the lord of the fifth, ninth, and first houses from it, if it is a dual sign.

Notes -The names of planets lording over the 12 signs have been given earlier. The following table throws light on lordship of Horas (15 degrees each) of the 12 signs.

Sign	Hora lord (0-15 degree)	Hora lord (15-30 Degrees)
Aries	Sun-Leo	Moon-Cancer
Taurus	Moon-Cancer	Sun-Leo
Gemini	Sun	Moon
Cancer	Moon	Sun
Leo	Sun	Moon
Virgo	Moon	Sun
Libra	Sun	Moon
Scorpio	Moon	Sun
Sagittarius	Sun	Moon
Capricorn	Moon	Sun
Aquarius	Sun	Moon
Pisces	Moon	Sun

in the case of an even sign. Half of Rashi is called Hora. These are totally 24 counted from Aries and repeat twice (at the rate of 12) in the whole of the zodiac.

In the Hora pattern above only Two horas of Sun and moon are admissible

The correct pattern is as below.

	Signs	Ar	Ta	Ge	Cn	Le	V	L	Sc	Sag	Cap	Aq	Pi
Hora	Degree	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1st Hora of odd sins 2nd Hora of even signs	0-15	1	11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3
1st hora of even signs 2nd hora of odd signs	15-30	10	8	6	4	2	12	10	8	6	4	2	12

Hora Pattern as explained By UK Jha vide an article in Times of Astrology Oct -Nov-Dec 2016

The spirally circuitous route followed by the signs in this chart is quite interesting. For the sign Aries the first Hora falls in Aries and the second Hora is of the sign 10th to Aries that is Capricorn. Then it moves to the 3rd sign in reverse manner to get the first Hora of Taurus i.e., Scorpio. Again, it proceeds to the 10th sign in reverse manner to have the second Hora of Taurus i.e., Aquarius. From here it again moves to the 3rd sign in reverse way. That gives the first Hora of Gemini i.e., Sagittarius. Now it moves to the 10th sign in direct way and that gives the second Hora of Gemini i.e., Virgo. It again moves to the 3rd sign in reverse way to have the first Hora of Cancer i.e., Cancer. From there it moves to the 10th sign in reverse and gives the second Hora of Cancer i.e., Libra. From there it further proceeds to the 3rd sign in reverse way to get the first Hora of Leo i.e., Leo. Then we move to the 10th sign again in direct way to obtain the second Hora of Leo i.e., Taurus. From Taurus again the third sign in reverse order gives Pisces and it is the first Hora of Virgo. When we proceed to the 10th sign from there in reverse way, we get second Hora of Virgo i.e., Gemini. Here we get a set of 12 signs. The same set is repeated from Libra to Pisces. Thus, two cycles are obtained in a spirally circuitous fashion. Let us now apply the concept lordship here. For all the odd signs we get fiery signs in first Hora presided over by hot Surya and the second Hora as earthy signs presided over by Moon. For all the even signs we get first Hora as watery signs presided over by cold - Moon and second Hora as airy signs presided over by hot Surya. Therefore, all the fiery and airy signs are presided over by hot Surya and watery and earthy signs are presided over by cold Moon. Now fiery and air are friendly Tatva as earth and water as friends. As such, the deity of the signs presided over by Surya are Devata or divine energy. Fire or subtle heat latent in everything is the first form of divine energy. Again, the oblation to Pitir is offered with water during the Pitri Paksha. That is why the deity has been declared after describing the lords presiding over the Horas for odd and even signs. In addition to this let us take the case of Aries. The first Hora ruled by Devata is a moveable fire and the second Hora controlled by Pitri is also a moveable earth. For Taurus both are fixed Gemini they are dual-water and air; for fire and, earth. For Cancer--it is moveable water and air. So, when Devata is moveable, the Pitri is also moveable. If Devata is fixed, the Pitri is also fixed and the when Devata is dual Pitri too is dual. This shows the compatibility at the third level that is at the level of deity.We not only get a symmetry here but the conditions laid in BPHS for erection of Hora (D/2). chart is also met here in all respect. Therefore, we may say that this is the correct speculum for drawing the Hora chart.

Conception - In astrology

Jatinder Pal Singh Sandhu

In astrology the 7th house represents Sexual intercourse, marriage, spouse etc, the 2nd/8th house represent the inheritance including the gene pool from both sides, the paternal and maternal families. The 5th and 11th houses represent progeny for the native and the spouse.

Some presume that 7th house is where the sexual activity takes place and thus conception should be taken from 7th house, but every sexual act does not lead to the conception.

As per the 10 stages of the pregnancy as specified in saravali and brihat jataka in detail, each month in pregnancy has a specific lord, if we consider each month to begin from 7th the 10th ends up in the 4th which represents womb and mother but not progeny, progeny is better represented and in logical order if the first month be taken from 8th the 10th month representing prasuti or childbirth will naturally end up on 5th, the house that represents progeny for the native.

The 2nd and 8th house axis represents families of the native and the native's spouse, so a conception that leads to a successful child birth is an addition to the family, it is these houses that contribute to the gene pool (Paternal and maternal) so the foetus acquires the gene pool from this axis only, the 8th house is said to represent the inheritance that also means the inherited diseases.

Genes- Genes are very tiny structures located on the chromosome of the cell nucleus. They are the packets of our inheritance codes; not visible by any form of microscopy.

Each cell in the body has a pair of each gene. Only the gametes (reproductive cells: sperms and ovum) have a single copy of genes. Thereby, a baby gets one copy of genes from each of her parent to form her own inheritance map, Genome, by Mendel's Law of inheritance.

At conception, fertilization of ovum by sperm forms a single cell known as "zygote". The zygote divides, multiplies and differentiates into millions of cells that form various organ systems and structures of our body. This intricate progression and vast transformation towards foetal development is regulated by genes inherited.

The ten stages of pregnancy -

The ten stages of pregnancy as per Brihat Jatak - Kalala (Liquid state) Ruled By Venus, Ghana (Solidification) Ruled by Mars, Ankura (Germination) ruled by Jupiter ,Asthi (bones) Ruled by sun ,Twach (skin Formation) Ruled by moon ,Angaja (limb formation) Ruled by Saturn ,Chetna (mental faculties, neurons etc.) Ruled by mercury, Hunger And thirst by lord of Adhana lagna conception time chart,Udvega ruled by Moon ,Parsuti (delivery)ruled by Sun. The ten stages can also be called ten months of the pregnancy period.

Conception & ten stages- as to why I have taken each house from 8th onwards to 5th house representing the 10th month called Prasuti or child birth and ruled by planet Sun,the answer is simple each month represents Sun in transit over a Zodiac sign.

Points- At birth the transit of Rahu/Ketu in 2nd/8th house axis or have a connect with 8th house lord or placed such that they are in trine to the said houses or lord.

At the time of conception transit Sun makes a connect natal Jupiter or 8th lord.

Natal Jupiter be in Kendra, trikona or 2nd /8th house from transit Sun at birth.

Or transit Sun is in 11th from Jupiter.

Let us examine few Charts Based on Sun's position at the time of Conception and childbirth.

Example 1 Male

At the time of birth of Son, the Position of Sun in transit is in Pisces, going reverse on position and taking 10 months (273 days average gestation period of pregnancy) we arrive at sign Gemini, Sun was in Gemini at the time of conception and exactly opposite to the 5th Lord and 5th house. (Here Jupiter is the lord of 5th and 8th in the natal horoscope, Sun in transit at the time of birth is in Pisces and over natal 2nd,11th lord Mercury.

Jupiter in transit connects to the 11th/2nd Lord Mercury, Jupiter also aspects its 8th house-based sign Pisces being the lord of 5th and 8th.

Saturn in transit establishes link with the ascendant lord Sun through 10th aspect.

At Birth Rahu and Ketu transit in trine to 2nd /8th house.

The benefic auspicious Guru

Rishi Kumar Shukla
IPS Ex DGP M.P.
Chairman Astrovers

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञाननिस्तत्त्वदर्शिनः।।34।।

Gita says, learn the Truth by approaching a Guru. Inquire from him with reverence and render service unto him. Such an enlightened Teacher can impart knowledge unto you because he has seen the Truth.

Guru or Jupiter is the largest body in the Solar System and in all forms of astrology has been considered as auspicious and the provider of dhi or the wisdom of the intellect. There are several patterns in the cycles up above in the sky which need to be understood to apply them to Jyotish and also probably find some rationale behind the classical jyotish sutras. A lot of research is needed in this field.

As it is said:

यथा ब्रह्माण्डे तथा पिंडे, यथा पिंडे तथा ब्रह्माण्डे

As is in the body so in the Universe, as is in the Universe so in the body. Originating from Yajurveda, it says we can learn all about us through the study of the flow of the cosmic cycles. Here we study the Synodic cycles of Jupiter or Guru. It is fascinating to learn them, I do not propose any clear Jyotish based answers but ask the readers to raise research issues to take it further. The Jupiter synodic cycles reveal an extraordinary picture and are the basis of this study.

It is known that Jupiter has an average cycle of less than 12 years in which it goes around the zodiac, traversing through one rashi or sign approximately in a year. When we get more specific, Jupiter takes 11.862 years to complete sidereal cycle and the average synodic cycle (From one opposition of Jupiter from Sun to the next opposition is a synodic cycle) of Jupiter is approximately 398.9 days. A known astronomical cycle for Jupiter is the synodic multiple cycle that is exactly of 83 years on the moving tropical zodiac. Jupiter returns to approximately the same position with respect to the Sun in this period. 76 synodic cycles of Jupiter equal 83 years. Jupiter moves on anaverage 5 minutes per day or two and a half degree per month and completes its sidereal period in 4322 days and it changes from one rashi to another in 361 days. However, it is fascinating to delve deeper in this.

Annual Jupiter cycle: Contrary to accepted average values, Jupiter does not move 5 minutes/day in any one particular month. As the following chart depicts, Jupiter moves at a rate of 6/7 degrees /month or when in close proximity or conjunction to Sun and in fact covers a distance of nearly 35/40 degrees in six months. It is near stationary or very slow for two months in a year when it goes retrograde and slides back 10 degrees in retrograde motion every year. This chart observes the movement of Jupiter over a one-year cycle.

The data is based using Lahiri Ayanamsha. However, it reveals similar data in any other ayanamasha adjusted data. A key pointer is that the speed of Jupiter is different in different Rashis/signs. While Jupiter moves 7 degrees while in conjunction to Sun in Aries/Pisces, it moves 6 30 while in Le, Vi, Li and Sc. With corresponding distinct values for rashis/signs in between.

CHART 1	Jupiter in Taurus			Jupiter in Libra			
Date	Sun	Jupiter	Movement in 1 Month	Date	Sun	Jupiter	Movement in 1 Month
14/May/2012	0 Ta 17	29 Ar 26		17/Oct/1993	0 Li 10	1 Li 02	
15/Jun/2012	0 Ge16	6 Ta 43	7-17	16/Nov/1993	0 Sc 10	7 Li 29	6-27
16/Jul/2012	0 Cn 14	13 Ta 23	6-50	16/Dec/1993	0 Sg 09	13 Li 17	5-48
17/Aug/2012	0 Le 20	18 Ta 40	5-17	14/Jan/1994	0 Cp 09	17 Li 51	4-34
17/Sep/2012	0 Vi 21	21 Ta 50	3-10	13/Feb/1994	0 Aq 09	20 Li 30	2-39
17/Oct/2012	0 Li 19	22 Ta 04	0-14	14/Mar/1994	0 Pi 08	20 Li 33	0-03
16/Nov/2012	0 Sc20	19 Ta 27	-2-37	14/Apr/1994	0 Ar 09	18 Li 01	-2-32
16/Dec/2012	0 Sg 26	15 Ta 31	-3-58	15/May/1994	0 Ta 10	14 Li 10	-3-51
14/Jan/2013	0 Cp 24	12 Ta 43	-2-48	15/Jun/1994	0 Ge 09	11 Li 24	-2-46
13/Feb/2013	0 Aq 27	12 Ta 35	-0-08	16/Jul/1994	0 Cn 10	11 Li 18	-0-06
15/Mar/2013	0 Pi 29	15 Ta 17	2-42	17/Aug/1994	0 Le 09	13 Li 58	2-40
14/Apr/2013	0 Ar 27	20 Ta 09	4-52	17/Sep/1994	0 Vi 09	18 Li 41	4-43
14/May/2013	0 Ta 03	26 Ta 22	6-13	17/Oct/1994	0 Li 10	24 Li 39	5-58
15/Jun/2013	0 Ge 01	3 Ge 25	7-13	16/Nov/1994	0 Sc 10	1 Sc 10	6-31

CHART 2

Date Conjunction	Conjunction	Progressive Difference between two Successive Conjunctions	Date Opposition	Opposition Jupiter Position	Progressive Difference between two Successive Oppositions	Difference between Conjunction /Opposition
8/May/2000	24 Ar 01		11/28/2000	12 Ta 17		18-16
14/Jun/2001	29 Ta 39	**35-38**	1/1/2002	16 Ge 45	34-28	17-24
20/Jul/2002	3 Cn 18	33-39	2/2/2003	19 Cn 12	32-27	15-54
22/Aug/2003	5 Le 01	31-43	3/4/2004	20 Le 02	30-50	15-01
22/Sep/2004	5 Vi 24	30-23	4/3/2005	20 Vi 02	***30-00***	14-38
22/Oct/2005	5 Li 17	***29-51***	5/4/2006	20 Li 03	***30-01***	14-46
22/Nov/2006	5 Sc 33	***30-16***	6/6/2007	20 Sc 56	30-53	15-23
23/Dec/2007	7 Sg 03	31-3	7/9/2008	23 Sg 29	32-33	16-26
24/Jan/2009	10 Cp 23	33-20	8/14/2009	28 Cp 04	34-35	17-41
26/Feb/2010	15 Ag 44	35-21	9/21/2010	4 Pi 22	36-18	18-38
6/Apr/2011	22 Pi 26	36-42	10/29/2011	11 Ar 15	**36-53**	18-49

Jupiter/Sun conjunction/ opposition cycle

Of immense significance is the following chart of Jupiter/Sun conjunction and opposition over a period of 12 years showing a single cycle. It is this observation, which leads to the basic premise of this answer for precession and the ayanamsha. The chart corroborates the crucial observation that Jupiter moves at varying speeds in different rashis. The following inferences are evident:

When in Leo, Virgo, Libra and Sagittarius, Jupiter progresses around 15/16 degrees from conjunction to opposition. This slowly increases till there is a value of 18 degrees for Jupiter movement while in Aries and Pisces.

Even more visible is the fact, that the synodic cycle of Jupiter is different and varying when Jupiter is in different rashis. That while the conjunction/opposition is at a near 390-degree progression of sun or a Jupiter progression of 30 degrees when in Leo, Virgo, Libra, Scorpio; it varies significantly in other rashis.

Jupiter/Sun synodic multiple cycles: The multiple synodic cycle of Jupiter observed over a period of 83 years shown in the following chart reveals:

a) The Sun/Jupiter conjunction cycle is of 12 years but of 11 conjunctions. In each full cycle of the rashis/signs, there is one rashi in which there is no conjunction.

b) The same is true of the Sun/Jupiter opposition, the cycle contains 11 rashis/signs and there is one sign missing.

c) Significantly, if we use ayanamsha corrected values there will be no year in which Ju/Sun conjunction/opposition does not take place in either Virgo or Libra rashis. The cycle moves around in the reverse order and after a cycle in which there is no conjunction between the two in Sagittarius, in the next cycle, it is

Cancer, which is not in the list. Very rarely, almost once in a few hundred years, it so happens that either Leo or Scorpio misses out on conjunction or opposition. In fact, a fine-tuning of the ayanamsha correction will ensure that Ju/Su conjunction will always take place in Leo, Virgo, Libra and Scorpio.

It is to be noted that while in Virgo and Libra, Jupiter progressions over 12 years are almost constant at around 4.2 degrees while they go on increasing for the other signs/rashis.

Another significant observation is that there is a clear pattern of synodic values. In a single cycle, in successive conjunctions, the progression of

CHART 3: Conjunction in successive years =➔

Date	Aries		Taurus		Gemini		Cancer		Leo		Virgo		Libra		Scorpio		Sagittarius		Capricorn		Aquarius		Pisces	
	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min
8/May/2000	24	1	29	39			3	18	5	01	5	24	5	17	5	33	7	3	10	23	15	44	22	26
13/May/2012	29	9			4	29	7	49	9	17	9	32	9	25	9	49	11	34	15	13	20	49	27	35
19/May/2024			4	7	9	9	12	11	13	27	13	38	13	34	14	8	16	8	20	2	25	50		
17/Apr/2035	2	37	9	0	13	47	16	34	17	41	17	48	17	47	18	28	20	38	24	44			0	40
22/Apr/2047	7	29	13	44	18	20	20	55	21	52	21	55	21	56	22	46	25	10	29	33			5	42
27/Apr/2059	12	33	18	39	22	58	25	15	25	59	25	56	25	59	27	0	29	43			4	27	10	51
3/May/2071	17	43	23	37	27	36	29	36			0	9	0	3	0	12	1	26	4	27	9	28	16	1

Jupiter from the preceding conjunction is oscillating from 30 degrees to 37 degrees. In the chart while the differential progression of the conjunction between Taurus and Aries is 35 degrees 37 minutes, it is just 29 degrees 53 minutes between Libra and Virgo. This value again increases to 36/42 between Pisces and Aquarius and then recedes back to 29/53 between Libra and Virgo.

Multiple conjunction cycles:

The following chart focuses on Jupiter/Sun conjunctions from 1702 to 1879. This corroborates the observations from single cycles of Jupiter conjunctions. Again, the cusp of Virgo and Libra is the lowest point in the differential progressions of Jupiter conjunctions in successive years. In the differential progressions over 12 years in a rashi/sign; In Pisces and Aries the differentials are 5 degrees on an average and in Virgo/Libra they are 4.2 degrees. The patterns are similar stretched over almost 10000 years in an ayanamsha adjusted ephemeris but conspicuously different on the tropical spring equinox-linked ephemeris.

The 344-year Jupiter cycle:

Observation of the multiple long-term cycles of Jupiter conjunctions/opposition with Sun reveals that in every 344 years and five days or 315 conjunctions/oppositions; Jupiter and Sun return to nearly the same point in the Zodiac. This natural cycle like the others that are known, the Metonic cycle; the Saros cycle runs in a series. From any date in a calendar and using an ayanamsha adjusted nirayaana ephemeris, to any other date 344 years+4/5 days away will lead to the same position of Jupiter as well as Sun. This chart focuses on the progressive movement of Jupiter over 350 years, showing a cycle of 344 years wherein Jupiter/Sun conjunction or opposition takes place at the same point on the zodiac. It may be noted in the chart that on 18 Sept 1992, Sun and Jupiter get conjunct at 1 Vi 21 (Lahiri Ayanamsha) and then 344 years and five days (or 320 conjunctions) later on 23 September, 2336 they get conjunct again at 1 Vi 14.

This cycle named for convenience as the **Ujjayini cycle** also shows slow progression over a millennium. These observations suggest that we should be able to assess the strength and effectiveness of Guru in a chart based on its speed, the rashi etc. It also can link several answers to classical Guru based answers. For me, this remains a research activity. May Guru guide us and show us the light to fins more specific answers.

CHART 4

Year	Aries		Taurus		Gemini		Cancer		Leo		Virgo		Libra		Scorpio		Sagittarius		Capricorn		Aquarius		Pisces	
	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min	Deg	Min
1702	7	49	14	4	18	33	21	0	21	50	21	50	21	51	22	46	25	18	29	52			6	8
1714	13	0	19	1	23	10	25	21	26	1	25	59	26	6	27	14			0	3	4	52	11	15
1726	18	1	23	47	27	40	29	37			0	11	0	8	0	22	1	41	4	45	9	48	16	18
1735	23	2	28	35			2	13	3	58	4	24	4	19	4	34	6	1	9	17	14	34	21	14
1750	27	58			3	22	6	47	8	19	8	36	8	29	8	50	10	30	14	4	19	38	26	26
1762			3	3	8	10	11	14	12	31	12	40	12	35	13	7	15	4	18	59	24	48		
1774	1	39	8	5	12	54	15	40	16	44	16	49	16	46	17	29	19	43	23	55	29	54		
1786	6	44	12	57	17	28	19	59	20	54	20	57	20	59	21	52	24	20	28	46			4	56
1797	11	46	17	49	22	5	24	23	25	9	25	9	25	11	26	10	28	48			3	28	9	48
1809	16	40	22	37	26	41	28	46	29	21	29	16	29	23			0	33	3	28	8	25	14	57
1821	21	48	27	30			1	14	3	1	3	27	3	20	3	34	4	59	8	15	13	31	20	11
1833	26	55			2	20	5	45	7	17	7	35	7	28	7	51	9	31	13	5	18	35	25	8
1845			1	52	7	0	10	8	11	28	11	42	11	38	12	10	14	4	17	52	23	34		
1857	0	20	6	47	11	41	14	34	15	45	15	53	15	50	16	26	18	29	22	30	28	23		
1869	5	14	11	36	16	18	18	59	19	59	20	2	20	0	20	45	23	3	27	21			3	28

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अक्टूबर 2023

इस माह के आरंभ में आपकी राशि वालों को धार्मिक तथा मांगलिक खर्च की अधिकता रहेगी। किस उपलक्ष में भ्रमण करने के योग भी बन सकते हैं राजकीय कार्य में सफलता प्राप्त होगी मास के अंतिम 2 सप्ताह में स्थाई संपत्ति के क्रय करने के योग बन सकते है। संतान पक्ष से संतुष्टि तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों में व्यस्त रहने की संभावना है। व्यापारी वर्ग को समय शुभ है कृषक वर्ग को अधिक य करना पड़ेगा। नौकरी करने वालों को समय शुभ है। विद्यार्थी वर्ग को अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए मास की 3 ,7, 11, 17, 21एवं 23 तारीख शुभ है

नवम्बर 2023

मास का पूर्वार्ध खर्चीला है अपनी बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यय हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य के कारण भी व्यय संभव है। माह के उत्तरार्द्ध में अपने पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होने के योग हैं पुराने मित्रों से वैचारिक मतभेद ना हो इसका ध्यान रखे। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल, कृषक वर्ग को समयअधिक खर्चीला, नौकरी वर्ग को अपने कार्यों से संतोष, विद्यार्थी वर्ग कोशिक्षा मे व्यवधान रह सकता हैं। मास की 3 6 नो 12 18 24 एवं 30 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2023

मास का पूर्वार्ध आपके लिए शुभ और सफलता दायक है। अपने पुराने मित्रों से संपर्क होगा। कोई रुका हुआ कार्य पूर्ण होने की उम्मीद है। मास का उत्तरार्ध अपने नियमित कार्यों में सफलता दायक है राजकार्यों में विजय, यश और सफलता मिलेगी। संतान पक्ष से संतुष्टि रहेगी व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल ।कृषक वर्ग को अपने नियमित कार्यों में लाभ। नौकरी वालों को अधिक व्यस्तता पूर्ण तथा विद्यार्थी वर्ग को अपने अध्ययन में संतोष मिलेगा इस माह की 3, 6, 9 ,12 ,18 ,24 एवं 30 तारीख शुभ रहेगी।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अक्टूबर 2023

विगत माह से यह माह चिंताओं में कमी करेगा। व्यर्थ भ्रमण इस माह में होगा। अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करें, स्वास्थ्य खराब रह सकता है। अधिक धनलाभ की इच्छा से कोई जोखिम भरा कार्य नहीं करें, स्वास्थ्य खराब रह सकता है। अधिक धनलाभ की इच्छा से कोई जोखिम भरा कार्य नहीं करें अन्यथा धन-व्यय हो सकता है। व्यापारी वर्ग को धनलाभ में कमी। खर्च की अधिकता। कृषक वर्ग वालों को अपनी अस्थिरता के कारण कोई नुकसान। नौकरी वालों को त्रुटिपूर्वक कार्य नुकसानदेह हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग का समय सामान्य है। दि. 5, 6, 9, 14, 16, 17, 23, 24, 25 एवं 29 नेष्ट है। निर्णयों में सावधानी बरतें।

नवम्बर 2023

मास के पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य खराब रहेगा। अपने कार्य में बाधाएं उपस्थित करने का प्रयास होगा किन्तु अपनी बुद्धि चातुर्य से बाधाएं दूर होंगी। मास के उत्तरार्द्ध में इच्छित कार्य में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्यं लाभ मिलेगा। अपनी प्रतिष्ठा एवं समान की वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग को चिंताओं की वृद्धि, आर्थिक लाभ में कमी, खर्च की अधिकता, कृषि कार्य वालों को उत्पादन में समुचित लाभ। नौकरी वालों को तरक्की के अवसर। विद्यार्थी वर्ग को श्रम का उचित लाभ। मास की 3, 6, 9, 12, 21, 27 उत्तम रहेगी।

दिसम्बर 2023

स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिजनों से व्यर्थ विवाद से बचें। व्यर्थ भ्रमण संभव है। अज्ञात शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। खाद्य पदार्थ के सेवन में ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को खर्च की अधिकता (आपके अनुपात में), नौकरी वर्ग के लिए अधिकारियों एवं सहयोगियों की प्रसन्नता। दिनाँक 2, 4, 6, 8, 10, 18, 20, 22 एवं 26 शुभ हैं।

मिथुन
का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

अक्टूबर 2023

आपके लिए मास का पूर्वार्द्ध लाभप्रद रहेगा। आर्थिक लाभ समय पर होगा तथा पुरानी रुकी हुई समस्या का निराकरण होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मास के अंतिम 2 सप्ताह में कार्य की अधिकता रहेगी लेकिन आर्थिक रुकावटें दूर होगी। मानसिक चिंताएं अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल है ,कृषक वर्ग को अधिक य करने से लाभ मिल पाएगा, नौकरी करने वालों को समय पर लाभ के योग है। विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए ,इस माह की 2, 5,7, 9,15,19,24 एवं 27 तारीख अनुकूल रहेंगी।

नवम्बर 2023

मास का पूर्वार्ध कार्य की गतिविधियों में वृद्धि करेगा। धन लाभ के योग बनेंगे सरकारी काम में सफलता मिल सकेगी मास के उत्तरार्ध में पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी आर्थिक खर्च अधिक होगा भ्रमण यथासंभव टाल दे। व्यापारिक वर्ग को अधिक खर्च कारक समय, कृषक वर्ग को समुचित लाभ, नौकरी वर्ग को अपने कार्य में पूर्ण रूप से यश मिलेगा विद्यार्थी वर्ग के विद्यालय में सामान्य दिक्क तें रह सकती है मास की 3 ,6, 12, 15, 21 ,24 तथा 30 तारीख से शुभ है।

दिसम्बर 2023

मांस का प्रारंभ आपके लिए उत्तम है वर्षभर जो कार्य रुके रहे उनमें गति प्राप्त होगी। साथ ही रुका हुआ द्रव्य प्राप्त होने की उम्मीद लगती है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें अधिक भ्रमण हो सकता है मास का उत्तरार्ध व्यस्तताओं से भरा रहेगा। कई कार्यों को करने की आपकी जिज्ञासा के फल स्वरूप दौड़ धूप अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग कोकार्य में व्यस्तता तथा भ्रमण के साथ लाभ, कृषक वर्ग को कार्य का अपेक्षित लाभ , नौकरी करने वालों को समय सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को भ्रमण अधिक रहेगा। मास में 2 , 5,7, 9, 17, 22 26 एवं 29 तारीख शुभ रहेगी।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डर्य
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अक्टूबर 2023

आपके लिए मास का पूर्वार्द्ध लाभप्रद रहेगा। आर्थिक लाभ समय पर होगा तथा पुरानी रुकी हुई समस्या का निराकरण होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मास के अंतिम 2 सप्ताह में कार्य की अधिकता रहेगी लेकिन आर्थिक रुकावटें दूर होगी। मानसिक चिंताएं अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल है ,कृषक वर्ग को अधिक य करने से लाभ मिल पाएगा, नौकरी करने वालों को समय पर लाभ के योग है। विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए ,इस माह की 2, 5,7, 9,15,19,24 एवं 27 तारीख अनुकूल रहेंगी।

नवम्बर 2023

मास का पूर्वार्ध कार्य की गतिविधियों में वृद्धि करेगा। धन लाभ के योग बनेंगे सरकारी काम में सफलता मिल सकेगी मास के उत्तरार्ध में पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी आर्थिक खर्च अधिक होगा भ्रमण यथासंभव टाल दे। व्यापारिक वर्ग को अधिक खर्च कारक समय, कृषक वर्ग को समुचित लाभ, नौकरी वर्ग को अपने कार्य में पूर्ण रूप से यश मिलेगा विद्यार्थी वर्ग के विद्यालय में सामान्य दिक्क तें रह सकती है मास की 3 ,6, 12, 15, 21 ,24 तथा 30 तारीख से शुभ है।

दिसम्बर 2023

मांस का प्रारंभ आपके लिए उत्तम है वर्षभर जो कार्य रुके रहे उनमें गति प्राप्त होगी। साथ ही रुका हुआ द्रव्य प्राप्त होने की उम्मीद लगती है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें अधिक भ्रमण हो सकता है मास का उत्तरार्ध व्यस्तताओं से भरा रहेगा। कई कार्यों को करने की आपकी जिज्ञासा के फल स्वरूप दौड़ धूप अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग कोकार्य में व्यस्तता तथा भ्रमण के साथ लाभ, कृषक वर्ग को कार्य का अपेक्षित लाभ , नौकरी करने वालों को समय सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को भ्रमण अधिक रहेगा। मास में 2 , 5,7, 9, 17, 22 26 एवं 29 तारीख शुभ रहेगी।

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, ढू, रे

अक्टूबर 2023

अधिकारियों की अप्रसन्नता। विवाद से दूर रहे। आर्थिक रुकावटें। कोर्ट कचहरी के विवाद में व्यस्तता। उत्तरार्द्ध में चिंताओं में कमी। स्वास्थ्य में कमजोरी। किसी अप्रिय घटना से मन को दुःख। व्यापारी वर्ग को आलस्य के फलस्वरूप कार्यों में लाभ की गुंजाईश कम रहेगी। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित विवाद से सावधानी रखना चाहिए। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक, जोखिम भरे कार्य में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को परिस्थितियां अनुकूल। दिनाँक 1, 5, 7, 9, 11, 17 शुभ रहेंगी।

नवंबर 2023

यह मास विगत समय से अनुकूल रहेगा। कठिनाईयों के कार्य आसानी से हल होंगे। पारिवारिक सुख मिलेगा। संतान को अपने कार्य में सफलता से परिवार में सुख-शांति महसूस करेंगे। साझेदारों पर अनावश्यक क्रोध से बचें। अन्यथा विवाद संभव है। मास के उत्तरार्द्ध में भ्रमण यथासंभव टालें। कृषक वर्ग को समय रहते अपने कार्य निपटाने पर लाभ संभव। नौकरी वर्ग को स्थानांतरण। विद्यार्थी वर्ग को सफलता रहेगी। मास की 2,7,11,17,19,24 तारीख शुभ है।

दिसंबर 2023

अधिक कार्य के कारण शारीरिक कमजोरी महसूस करेंगे इसी कारण माह के उत्तरार्द्ध में कार्य में बाधाएं तथा पेंडिंग रह सकता है। कार्यों की सफलता में रूकावट आना संभव है। नियमित कार्यों में सतर्कता रखना आवश्यक है। व्यापारी वर्ग को खर्च पर नियंत्रण, नौकरी वर्ग को अधिक कठिनाई से सफलता, कृषक वर्ग को उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को स्थान परिवर्तन अथवा शिक्षा में बदलाव संभव है। (मास की तारीख 3, 6, 12, 18, 24 शुभ है) रहेगा।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अक्टूबर 2023

मास का पूर्वार्द्ध आपको रचनात्मक कार्यक्रमों के करने में सहयोगी रहेगा अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा। मास के अंतिम 2 सप्ताह में खर्च की अधिकता रहेगी । किसी पुराने कार्य को करने में अधिक यत्न करना पड़ेगा। व्यापारी वर्ग को खर्च कारक समय। कृषक वर्ग को लाभप्रद। नौकरी करने वालों को अपने कार्यों से संतुष्टि रहेगी। विद्यार्थी वर्ग समय के सदुपयोग करने का ध्यान रखें इस माह की 4 ,14 ,16 ,19, 21 ,27 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2023

मास का पूर्वार्ध आपको अधिक व्यस्तता का है कार्य के पूर्ण होने तक सावधानी एवं सतर्कता रखना आवश्यक है। लाभ के सुअवसर प्राप्त होंगे मास का उत्तरार्ध आपको अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता देगा, साथ ही धन लाभ की समुचित व्यवस्था भी करेगा व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में व्यस्तता अधिक, नौकरी वर्ग को समय संतोषप्रद, विद्यार्थी वर्ग को अधिक य करने से लाभ. मिलेगा मास की 3 ,7, 9 ,11, 16 ,19, 23 एवं 26 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2023

मासका पूर्वार्द्ध रुके हुए कार्य पूर्ण करने में सहयोगी रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी तथा राजकीय कार्य समय पर हल होंगें। मास के उत्तरार्ध में आपको अपने नजदीकी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। सुखद यात्रा भी संभव है अपने कार्यों में विशेष ध्यान देने से सफलता मिलेगी व्यापारी वर्ग को सामान्य समय ।कृषक वर्ग को आर्थिक कठिनाइयां। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक। विद्यार्थी वर्ग का समय का ध्यान रखना चाहिए। मास की 3, 6 9 ,12, 18, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अक्टूबर 2023

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

नवंबर 2023

मास के प्रारंभ में आर्थिक रुकावटें दूर होंगी। अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे। दापत्य सुख उत्तम रहेगा। किसी राजकीय कार्य के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च की संभावना मास के उत्तरार्द्ध में रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य से लाभ। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर सहयोग मिलेगा। मास की 2, 4, 6, 8, 10, 13, एवं 21 तारीखों में सावधानी बरतें।

दिसंबर 2023

मास के पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें। अनावश्यक चिंताए नहीं पालें। अपने पारिवारिक सदस्यों से भावनाओं में आकर संबंध न बिगाड़ें, इसमें सावधानी बरती जाए। अपने नियमित कार्य तथा आय वृद्धि के अवसर बनेंगे। व्यापारी वर्ग को साझेदारी में सावधानी रखनी चाहिए। कृषक वर्ग समय का ध्यान देकर कार्य करें। नौकरी वर्ग वालों को अधिकारियों की अप्रसन्नता विद्यार्थी वर्ग को कठिन यत्न करने पर सफलता। दिनाँक 2, 4, 8, 13, 17, 26 अशुभ हैं।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अक्टूबर 2023

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

नवम्बर 2023

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

दिसम्बर 2023

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, पी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

अक्टूबर 2023

मास का पूर्वार्द्ध आपके लिए अनुकूल प्रतीत होता है। सुख वैभव के संसाधन की वृद्धि होगी। स्थाईत्व प्राप्त होगा तथा मानसिक संतोष रहेगा। मास के उत्तरार्ध में अपने नजदीकी मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा स्वास्थ्य पर ध्यान देना आवश्यक है। व्यापारी वर्ग को समय पर धन लाभ। कृषक वर्ग को अधिक श्रम से धन लाभ। नौकरी करने वालों को समय अनुकूल। विद्यार्थी वर्ग को अपने मेहनत का सही फल प्राप्त होगा मास की नो 11, 17, 22, 24 एवं 29 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2023

मास का पूर्वार्द्ध आपको अपने कार्यों में सफलता दायक है ।नए कार्यों की रूपरेखा बनेगी समय को व्यर्थ ना खोंए, सदुपयोग करें। मास का उत्तरार्ध आपके लिए भ्रमण तथा आर्थिक कठिनाईयों का रहेगा। व्यापारी वर्ग को अधिक खर्च। कृषक वर्ग को अपने कार्य से संतुष्टि। नौकरी करने वालों को परिवर्तन संभव. ।विद्यार्थी वर्ग को सामान्य दिक्क तें रहेगी।

दिसम्बर 2023

मास का पूर्वार्ध आपके लिए कुछ चुनौतियों भरा कार्य लेकर आया है। आप अपनी पूरी क्षमता के साथ यदि कार्य में सफल हुए तो यश एव धन लाभ प्राप्त होगा। मास का उत्तरार्ध व्यस्तता पूर्ण रहेगा। सुखद भ्रमण के योग भी बनेंगे तथा पारिवारिक कार्यों में अधिक खर्चके योग बनेगे। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अधिक भागदौड़ रहेगी ।नौकरी करने वालों को मास सामान्य रहेगा विद्यार्थी वर्ग को समय प्रतिकूल है, अधिक खर्च के योग हैं। मास की 5, 7, 11, 17, 19 ,26 एवं 30 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2023

प. हेमचद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

अक्टूबर 2023

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

नवम्बर 2023

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

दिसम्बर 2023

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, पत्नी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अक्टूबर 2023

मास का पूर्वार्द्ध आपको रचनात्मक कार्यक्रमों के करने में सहयोगी रहेगा अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा। मास के अंतिम 2 सप्ताह में खर्च की अधिकता रहेगी । किसी पुराने कार्य को करने में अधिक यत्न करना पड़ेगा। व्यापारी वर्ग को खर्च कारक समय। कृषक वर्ग को लाभप्रद। नौकरी करने वालों को अपने कार्यों से संतुष्टि रहेगी। विद्यार्थी वर्ग समय के सदुपयोग करने का ध्यान रखें इस माह की 4 ,14 ,16 ,19, 21 ,27 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2023

मास का पूर्वार्ध आपको अधिक व्यस्तता का है कार्य के पूर्ण होने तक सावधानी एवं सतर्कता रखना आवश्यक है। लाभ के सुअवसर प्राप्त होंगे मास का उत्तरार्ध आपको अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता देगा, साथ ही धन लाभ की समुचित व्यवस्था भी करेगा व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में व्यस्तता अधिक, नौकरी वर्ग को समय संतोषप्रद, विद्यार्थी वर्ग को अधिक य करने से लाभ. मिलेगा मास की 3 ,7, 9 ,11, 16 ,19, 23 एवं 26 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2023

मासका पूर्वार्द्ध रुके हुए कार्य पूर्ण करने में सहयोगी रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी तथा राजकीय कार्य समय पर हल होंगें। मास के उत्तरार्ध में आपको अपने नजदीकी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। सुखद यात्रा भी संभव है अपने कार्यों में विशेष ध्यान देने से सफलता मिलेगी व्यापारी वर्ग को सामान्य समय ।कृषक वर्ग को आर्थिक कठिनाइयां। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक। विद्यार्थी वर्ग का समय का ध्यान रखना चाहिए। मास की 3, 6 9 ,12, 18, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

अक्टूबर 2023

यह माह आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। अपने लाभ का अनुपात व्यय से कम होगा इसलिए संतुलित व्यय करने का प्रयास करना चाहिए। पारिवारिक कार्यों में अधिक व्यस्तता रहेगी। कोर्ट कचहरी के विवाद रहेंगे। दूसरों के विवाद से बचना चाहिए। व्यापारी वर्ग को आय में कमी, नौकरी वर्ग वालों को व्यस्तता अधिक। कृषक वर्ग अपने कार्यों में लाभ, विद्यार्थियों को अनुकूल समय है। (तारीख 5,7,13,17,23,30 शुभ है)

नवंबर 2023

अपने कार्य के विस्तार की ललक इस माह में पूरी होगी। इस समय होने वाले निर्णय अपने भविष्य के लिए अनुकूल रहेंगे। अपने कार्य के लिए अधिक समय देवे ताकि सफलता मिल सके। पत्नी एवं संतान की ओर से स्वास्थ्य की चिंता रह सकती है। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ और अच्छे संपर्क की वृद्धि। नौकरी वर्ग वालों को संतोष, कृषक वर्ग को उत्तमलाभ, विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक कष्ट। (तारीख 2, 4, 8 12, 16, 20, 24, 28 उत्तम रहेगी)

दिसंबर 2023

विगत माह की कठिनाईयों से कार्य इस माह के अंत तक सफलता दायक रहेंगे। साझेदारों अथवा विश्वसनीय मित्र के भरोसे छोड़े गए कार्य की पुनः पुनरावृत्ति करनी पड़ेगी। कोर्ट, कचहरी के विवादों में असफलता नहीं हो इसका ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को आर्थिक हानि प्रद। नौकरी वर्ग वालों को सजगता से कार्य करना चाहिए। कृषक वर्ग को ऋणग्रस्तता में कमी करना हितकारक होगा। विद्यार्थी वर्ग का व्यर्थ भ्रमण संभव। मास की 1,3,6,9,11,19,27,29 शुभ है।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

अक्टूबर 2023 के व्रत पर्व

1 अक्टूबर, रविवार - तृतीया तिथि श्राद्ध

2 अक्टूबर, सोमवार - संकष्टी चतुर्थी, चतुर्थी तिथि श्राद्ध, महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती

3 अक्टूबर, मंगलवार - पंचमी तिथि श्राद्ध

4 अक्टूबर, बुधवार - षष्ठी तिथि श्राद्ध

5 अक्टूबर, गुरुवार - सप्तमी तिथि श्राद्ध

6 अक्टूबर, शुक्रवार - श्रीमहालक्ष्मी व्रत, जिऊतिया व्रत, अष्टमी तिथि श्राद्ध

7 अक्टूबर, शनिवार - नवमी तिथि श्राद्ध, मातृनवमी

9 अक्टूबर, सोमवार - दशमी तिथि श्राद्ध

10 अक्टूबर, मंगलवार - इंदिरा एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव

11 अक्टूबर, बुधवार - द्वादशी तिथि श्राद्ध, सन्यासी, यति, वैष्णवों का श्राद्ध

12 अक्टूबर, गुरुवार - प्रदोष व्रत, त्रयोदशी तिथि श्राद्ध

13 अक्टूबर, शुक्रवार - चतुर्दशी तिथि श्राद्ध

14 अक्टूबर, शनिवार - स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या / पितृ विसर्जन सर्वपितृ अमावस्या

15 अक्टूबर, रविवार - आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा,शारदीय नवरात्र/ घट स्थापना प्रारंभ

16 अक्टूबर, सोमवार - चन्द्रदर्शन

17 अक्टूबर, मंगलवार - सूर्य की तुला संक्रान्ति रात्रि 1 बजे

18 अक्टूबर, बुधवार - तुला संक्रान्ति पुण्यकाल

19 अक्टूबर, गुरुवार - सिंदूर तृतीया

20 अक्टूबर, शुक्रवार - तलषष्ठी/सरस्वती देवी का आवाह्न

22 अक्टूबर, रविवार - दुर्गाष्टमी पूजन

23 अक्टूबर, सोमवार - महानवमी, भ्रदकाली नवमी

24 अक्टूबर, मंगलवार - विजयादशमी दशहरा पर्व

26 अक्टूबर, गुरुवार - प्रदोष व्रत

28 अक्टूबर, शनिवार - शरद पूर्णिमा व्रत

29 अक्टूबर, रविवार - कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारंभ

शुभ मुहूर्त अक्टूबर 2023

1 अक्टूबर, रविवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन, भूमिक्रय (सवेरे 9.15 से 12.10 दिन में)

3 अक्टूबर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 11.00 से 12.30 दिन में)

4 अक्टूबर, बुधवार - नामकरण (सवेरे 10.30 से 12.00 के बीच)

5 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 7.30 के बीच)

7 अक्टूबर, शनिवार - पूंजी निवेश (दोपहर 13.30 से 15.30)

8 अक्टूबर, रविवार - वाहन, जमीन क्रय (सवेरे 9.15 से 11.50)

11 अक्टूबर, बुधवार - पूंजी निवेश (दोपहर 11.00 से 12.15)

12 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार आरंभ, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 12.00 से 13.30)

14 अक्टूबर, शनिवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.25 से 9.15 के बीच प्रारंभ)

15 अक्टूबर, रविवार - प्रसूति का स्नान, वाहन, जमीन क्रय, नवरात्री घटस्थापना (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन, सायं 6.15 से 9.15)

16 अक्टूबर, सोमवार - अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.00 से 10.20)

17 अक्टूबर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.30 से 11.30)

18 अक्टूबर, बुधवार - पूंजी निवेश (सवेरे 11.00 से 12.15 दिन)

21 अक्टूबर, शनिवार - पूंजी निवेश (दोपहर 13.30 से 16.30 सायं)

23 अक्टूबर, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, वाहन जमीन क्रय, दुर्गानवमी हवन पूजन (सवेरे 9.15 से 10.35 सायं 4.30 से 6.30)

24 अक्टूबर, मंगलवार - विजयादशमी, विजय मुहूर्त शस्त्र पूजन (10.30 से 13.35 दिन)

25 अक्टूबर, बुधवार - नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 15.15 से 18.30 सायं)

26 अक्टूबर, गुरुवार - नामकरण, नवीन व्यापार आरंभ (दिन में 12.15 से 13.35)

27 अक्टूबर, शुक्रवार - अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना नवीन व्यापार आरंभ (सूर्योदय से सवेरे 10.40 के बीच)

31 अक्टूबर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 11.30)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

नवंबर 2023 के व्रत पर्व

1 नवम्बर, बुधवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत / करवा चौथ

3 नवम्बर, शुक्रवार - स्कन्द षष्ठी

5 नवम्बर, रविवार - अहोई अष्टमी

9 नवम्बर, गुरुवार - रम्भा एकादशी व्रत / गोवत्स द्वादशी

11 नवम्बर, शनिवार - धनतेरस, धनवंतरी जयन्ती

12 नवम्बर, रविवार - नरक चतुर्दशी, रूप चौदस, दीपावली पर्व, प्रदोष काल में गणेश कुबेर, लक्ष्मी इंद्रादि देव पूजन

13 नवम्बर, सोमवार - स्नानदान की अमावस्या

14 नवम्बर, मंगलवार - कार्तिक शुक्ल पक्ष, अन्नकूट, गोवर्धन पूजन

15 नवम्बर, बुधवार - चंद्रदर्शन, भाईदूज, चित्रगुप्त पूजन

16 नवम्बर, गुरुवार - वैनायकी गणेश चतुर्थी

18 नवम्बर, शनिवार - सौभाग्य पंचमी

20 नवम्बर, सोमवार - गोपाष्टमी

21 नवम्बर, मंगलवार - आंवला नवमी, अक्षय नवमी

22 नवम्बर, बुधवार - आशादशमी

23 नवम्बर, गुरुवार - प्रबोधिनी एकादशी (स्मार्त एवं वैष्णव)
देवोत्थान एकादशी

25 नवम्बर, शनिवार - शनि प्रदोष व्रत/वैकुण्ठ चतुर्दशी

26 नवम्बर, रविवार - काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस

27 नवम्बर, सोमवार - स्नानदान व्रत की पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा

28 नवम्बर, मंगलवार - मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारंभ

30 नवम्बर, गुरुवार - संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

शुभ मुहूर्त नवंबर 2023

1 नवम्बर, बुधवार - नवीन कार्य, पूंजी निवेश (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)

3 नवम्बर, शुक्रवार - भवन, भूमि, वाहन क्रय, पूंजी निवेश (सूर्योदय से सवेरे 10.40, दिन में 12.15 से 13.30)

5 नवम्बर, रविवार - अन्नप्राशन, भवन, भूमि, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 12.10 दिन में)

8 नवम्बर, बुधवार - नामकरण, पूंजीनिवेश (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)

9 नवम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (दिन में 12.15 से 13.35)

10 नवम्बर, शुक्रवार - खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, भवन, भूमि, वाहन क्रय (दिन में 12.15 से 13.35)

11 नवम्बर, शनिवार - धन संपत्ति की पूजन (सवेरे 7.20 से 9.10 और दिन में 13.30 से 16.30)

12 नवम्बर, रविवार - दीपावली पर्व, गणेश कुबेर और लक्ष्मी पूजन (17.31 से 21.20 निशिथ काल रात्रि में 23.55 से 1.20)

13 नवम्बर, सोमवार - खेत जोतना, बीज बोना, पूंजी निवेश (सवेरे 9.00 से 10.40)

14 नवम्बर, मंगलवार - अन्नकूट, गोवर्धन पूजन (सवेरे 10.00 से दिन में 12.30) प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 11.30)

15 नवम्बर, बुधवार - भाईदूज, चित्रगुप्त पूजन (सवेरे 11.00 से दिन में 12.00, सायं 7.30 से 9.30)

16 नवम्बर, गुरुवार - अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 12.10 से 13.35)

17 नवम्बर, शुक्रवार - खेत जोतना, बीज बोना, पूंजी निवेश (सूर्योदय से सवेरे 10.40)

20 नवम्बर, सोमवर - खेत जोतना, बीज बोना, भवन, भूमि, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 10.40, सायं 16.30 से 18.30)

22 नवम्बर, बुधवार - नामकरण, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन)

23 नवम्बर, गुरुवार - देवपूजन तुलसी विवाह सायं 5.00 से 8.30 प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, गृहआरंभ, भूमिपूजन, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.00 बजे के बीच)

24 नवम्बर, शुक्रवार - कर्णवेध, अक्षरारंभ, विद्यारंभ, गृह प्रवेश, देवप्रतिष्ठा, भवन भूमि, वाहन क्रय, नवीन व्यापार, जलाशय, उद्यान निर्माण, बीज बोना, खेत जोतना (सूर्योदय से सवेरे 10.40 के बीच)

25 नवम्बर, शनिवार - देवप्रतिष्ठा, जलाशय, उद्यान निर्माण, पूंजी निवेश (दिन में 13.30 से 16.30 सायं)

27 नवम्बर, सोमवार - अन्नप्राशन, देवप्रतिष्ठा, जलाशय, उद्यान निर्माण, (सवेरे 9.00 से 10.15, सायं 16.30 से 18.30)

28 नवम्बर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 11.00 से 11.30)

29 नवम्बर, बुधवार - नामकरण, कर्णवेध, मुण्डन, चौलकर्म, गृहारंभ, देव प्रतिष्ठा, जलाशय, उद्यान निर्माण, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से 11.30 के बीच)

30 नवम्बर, गुरुवार - जीर्ण गृह प्रवेश (दिन में 12.00 से 13.30)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

दिसंबर 2023 के व्रत पर्व

5 दिसम्बर, मंगलवार - कालाष्टमी, भैरव जयन्ती

8 दिसम्बर, शुक्रवार - उत्पत्ति एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

10 दिसम्बर, रविवार - प्रदोष व्रत

11 दिसम्बर, सोमवार - मास शिवरात्री

12 दिसम्बर, मंगलवार - स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या

13 दिसम्बर, बुधवार - मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष आरंभ

14 दिसम्बर, गुरुवार- चन्द्रदर्शन

16 दिसम्बर, शनिवार - वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, सूर्य धनु संक्रांति

18 दिसम्बर, सोमवार - चम्पाषष्ठी

19 दिसम्बर, मंगलवार - नन्दा सप्तमी, मित्र सप्तमी

22 दिसम्बर, शुक्रवार - मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मार्त)

23 दिसम्बर, शनिवार - मोक्षदा एकादशी व्रत (वैष्णव),
गीता जयन्ती पर्व

24 दिसम्बर, रविवार - रवि प्रदोष व्रत

25 दिसम्बर, सोमवार - क्रिसमस डे, पिशाच मोचन चतुर्दशी

26 दिसम्बर, मंगलवार - श्रीदत्त जयन्ती/स्नानदान व्रत की पूर्णिमा

27 दिसम्बर, बुधवार - पौष कृष्णपक्ष आरंभ

30 दिसम्बर, शुक्रवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

शुभ मुहूर्त दिसंबर 2023

1 दिसम्बर, शुक्रवार - द्विरागमन, कर्णवेध, मुण्डन, चौलकर्म, चुड़ाकरण, गृहारंभ, भूमिपूजन, विद्यारंभ, वाहन क्रय, अक्षरारम्भ, जीर्ण गृहप्रवेश (सूर्योदय से सवेरे 10.40, दिन में 12.15 से 13.15)

2 दिसम्बर, शनिवार - गृहारंभ, भूमिपूजन, जीर्ण गृहप्रवेश, जलाशय, वाटिका रोपण (सवेरे 7.40 से 9.15, दिन में 13.30 से 16.30)

3 दिसम्बर, रविवार - विद्यारंभ (सवेरे 9.00 से 11.30)

6 दिसम्बर, बुधवार - उपनयन संस्कार (सूर्योदय से सवेरे 9.00 बजे के बीच, सायं 16.30 से 18.15)

7 दिसम्बर, गुरुवार - द्विरागमन, प्रसूति का स्नान, अन्न प्राशन, कर्णवेध, मुण्डन, चौलकर्म, चुड़ाकरण, नवीन व्यापार, अक्षरारम्भ, गृहारंभ, भूमिपूजन, विद्यारंभ, वाहन क्रय, बाग लगाना, जलाशय (दिन में 12.00 से 13.35 के बीच)

8 दिसम्बर, शुक्रवार - नामकरण, कर्णवेध, अक्षरारम्भ, विद्यारंभ, गृहारम्भ, भूमिपूजन, नवीन व्यापर, बाग लगाना, जलाशय निर्माण, जीर्ण गृहप्रवेश, ग्रह प्रवेश, देवस्थानपा (सूर्यादय से सवेरे 10.40)

9 दिसम्बर, शनिवार - नूतन गृह प्रवेश, जीर्णगृह प्रवेश, बाग लगाना, देवस्थापना, जलाशय निर्माण (दिन में 13.30 से 16.15)

10 दिसम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान, विद्यारंभ, वाहन, भूमि, भवन क्रय (सवेरे 9.00 से 12.15)

11 दिसम्बर, सोमवार - नवीन व्यापार (सवेरे 9.00 से 10.15, सायं 16.30 से 18.30)

12 दिसम्बर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 11.30)

13 दिसम्बर, बुधवार - नवीन व्यापार (सवेरे 10.40 से 12.15 दिन)

14 दिसम्बर, गुरुवार - विद्यारंभ, नवीन व्यापार (दिन में 12.15 से 13.35)

15 दिसम्बर, शुक्रवार - उपनयन संस्कार, द्विरागमन, नामकरण, अन्नप्राशन, विद्यारंभ, नवीन व्यापार, बाग लगाना, देवप्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, जीर्ण गृह प्रवेश, नूतन गृह प्रवेश, गृहारंभ, भूमिपूजन (सूर्योदय से सवेरे 10.40, दिन में 12.15 से 13.25)

18 दिसम्बर, सोमवार - अन्नप्राशन, पूंजी निवेश (सवेरे 9 से 10.30)

21 दिसम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, पूंजी निवेश (दिन में 12.30 से 13.30)

24 दिसम्बर, रविवार - स्थाई सम्पत्ति क्रय (सवेरे 9.30 से 12.10 दिन)

25 दिसम्बर, सोमवार - स्थाई सम्पत्ति क्रय (सायं 16.30 से 18.30)

26 दिसम्बर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, पूंजी निवेश (दिन 10.30 से 12.30)

27 दिसम्बर, बुधवार - पूंजी निवेश (सवेरे 11.00 से 12.15)

28 दिसम्बर, गुरुवार - पूंजी निवेश (दिन में 12.00 से 13.20)

31 दिसम्बर, रविवार - पूंजी निवेश (सवेरे 09.15 से 12.30)

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक जोकि वर्तमान में इण्डियन बैंक है इसमें जीवन वैभव पत्रिका का

खाता नंबर 50159870448

खाते का नाम - जीवन वैभव

आय एफ एस सी कोड - IDIB000B796

ब्रांच कोड - 4197

MICR code - 462019018

के अनुसार खाते में राशि जमा कराकर उसकी स्लीप तथा अपना पता वाट्सएप कर देवें ताकि पत्रिका नियमित भेजी जा सके।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम .....

डाक का पूरा पता .....

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल .....

सदस्यता ..... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण **5000/- 500/- 200/-**

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक ..... दिनाँक .....

चैक क्रमांक ..... दिनाँक .....

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका "जीवन वैभव" के बारे में आपकी राय:-

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पता:

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर

प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662

ईमेल: hcp2002@gmail.com

नोट: उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव को सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....

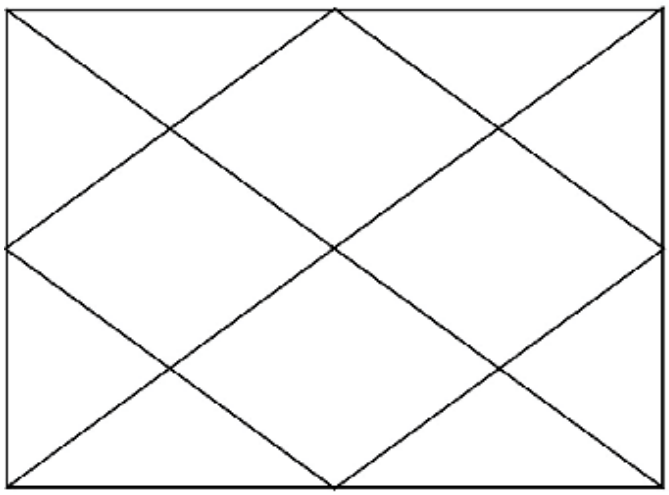

कोई एक प्रश्न .....

नवरात्री दीपावली पर्व के मुहूर्त

अक्टूबर से दिसंबर 23के बीच में त्रैमासिक व्रत पर्व एवं विभिन्न प्रकार के मुहूर्त नियमित रूप से दिए गए हैं परंतु पाठकों की सुविधा की दृष्टि से प्रमुख पर्व का मुहूर्त पृथक से निम्नानुसार भी दिया जा रहा है ।

नवरात्री घटस्थापना मुहूर्त - 15 अक्टूबर 23 रविवार सवेरे 9.15 से 12.10 दोपहर सायं 6.15 से 9.15 रात्री

दुर्गा अष्टमी हवन पूजन- 22 अक्टूबर रविवार सवेरे 9.15 से 12.5 दिन मे

दुर्गानवमी हवन पूजन- 23 अक्टूबर सोमवार सवेरे 9.15 से 10.35 सायं 4.30 से 6.30

विजयादशमी विजव मुहूर्त- 24 अक्टूबर मंगलवार दिन में 10.30 से 13.35 शस्त्र वाहन आदि की पूजन

दीपावली पर्व श्रंखला मुहूर्त

11 नवम्बर शनिवार धनतेरस धनवंतरी जयंती सवेरे 7.40 से 9.15 दिनमें 13.35 से 16.20

12 नवम्बर रविवार रूपचौदस नरक चतुर्दशी सूर्योदय से सवेरे 11.30

प्रदोष कालमें दीपावली पर्व सायं 5.34 से 9.20 रात्री निशीथ काल 11. 55 से 13.20

14 नवम्बर मंगलवार गोवर्धन पूजन अन्नकूट सवेरे 10 से 12.30 दिन में

यमद्वितीया भाईदूज चित्रगुप्त जयन्ती- 15 नवम्बर बुधवार सवेरे 11 से 12 दिनमें सायं 7.30 से 9.30

देवप्रबोधिनी एकादशी 23 नवम्बर गुरुवार सायं 5 से 8.30

कार्तिक पूर्णिमा - 27 नवम्बर सोमवार गुरुनानक जयन्ती

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक डाक/ कोरियर से जीवन वैभव कार्यालय से प्राप्त करें।

ज्योतिष मित्र

ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान के लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है।

एक प्रति 150 रुपये + वी. पी. डाक/ कोरियर 50 रुपये इस प्रकार 200 रुपये भेजकर अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें।

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

व्यवस्थापक :

जीवन वैभव

15 ए, जोन- I, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662

ईमेल : hcp2002@gmail.com

प्रथम महर्षि पाराशर अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन में उपस्थित विद्वानजनों का सादर स्वागत है,
उपस्थित विद्वानों के साथ ही जीवन वैभव के नियमित पाठकों को आगामी
नवरात्रि एवं दीपावली पर्व की सादर शुभकामनाएँ

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक
डाक/ कोरियर से जीवन वैभव
कार्यालय से प्राप्त करें।
मूल्य : 50/- केवल

ज्योतिष मित्र

ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान के
लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है।
एक प्रति 150 रुपये + वी. पी. डाक/
कोरियर 50 रुपये इस प्रकार 200 रुपये
भेजकर अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें।

जीवन मूल्य और नैतिक शिक्षा

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय मूल्य 150 रूपये

व्यवस्थापक
जीवन वैभव
15, ए, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : hcp2002@gmail.com

प्रथम महर्षि पाराशर अर्न्तराष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन

में पधारे सभी विद्वानों का हार्दिक अभिनदंन

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर है।

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते है। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते है।

वार्षिक सदस्यता रू.100/–, त्रैवार्षिक रू. 300/–, आजीवन सदस्यता रू. 1800/–

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 350 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता "जीवन वैभव" के नाम से अरेरा कॉलोनी की इण्डियन बैंक के खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड IDIB000B796 के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

कार्यालय का पता

जीवन वैभव

15, ए, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.

संपर्क : 9425008662, ईमेल : hcp2002@gmail.com